इण्डिया फाउन्डेशन पेपर-3 दिसम्बर 2009

# लव जेहाद

## लापता महिलाएँ, जबरन मतान्तरण और केरल के घात लगाये जेहादी रोमियो

कृष्णा कुमार

अनुवादक
लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल
एवम्
रमेश चन्द्र आनन्द

इण्डिया फाउन्डेशन, नयी दिल्ली

# दो शब्द

आतंकवाद के अनेक चेहरों में से एक 'लव जिहाद' (मज़हब के लिये मुहब्बत का नाटक) भी है जिसकी चपेट में हिन्दू लड़कियाँ, महिलाएँ और पुरुष भी आ रहे हैं। इन्हें प्रेम जाल में फाँसकर मतान्तरित कर मुस्लिम युवक या मुस्लिम लड़की से विवाह करा दिया जाता है। विवाह के कुछ दिनों पश्चात उन्हें आतंकवादी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। मतान्तरित हिन्दू लड़कियों को विवाह के पश्चात नारकीय जीवन भोगना पड़ता है। 'लव जिहाद' बहुत सरल परन्तु प्रभावी स्वरूप है जिसके माध्यम से इस्लाम में मतान्तरण, जनसंख्या वृद्धि और आंतकी गतिविधियों के विस्तार में सहयोग मिलता है।

'लव जिहाद' भारत के सभी क्षेत्रों में पहुँच चुका है, विदेशों में भी इसका जाल फैल रहा है। अत: यह न केवल भारत की समस्या बल्कि वैश्विक समस्या बन गया है। सरकार चुप है, हिन्दू समाज का ध्यान अभी इस ओर पर्याप्त मात्रा में नहीं गया है। यह मीठा जहर बड़ी सरलता से समाजिक जीवन में घुल रहा है।

लव जिहाद की विभीषका का अध्ययन इंडिया फाउन्डेशन, नई दिल्ली के द्वारा किया गया तथा फाउन्डेशन के श्री कृष्णा कुमार ने दिसम्बर 2009 में एक शोध पत्र अंग्रेजी भाषा में तैयार किया था। इस पत्र में लव जिहाद के स्वरूप, कार्यपद्धति, लक्ष्य, पीड़ितों के अनुभव, निष्कर्ष आदि अनेक बिन्दुओं का सविस्तार वर्णन है। सामान्य जन भी इस विषय की गम्भीरता को समझे, परिवारों में चेतना आए तथा इस दंश का सामना कर सकें, इसलिए पत्र का हिन्दी अनुवाद करने का प्रयास किया गया। अनुवाद में मूल भाषा के भाव को हू-ब-हू लाना कठिन और कहीं-कहीं असम्भव होता है। अत: समझाने की दृष्टि से सहायक शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग भी किया गया है। इसके बावजूद अनुवाद में त्रुटि रह सकती है इस हेतु क्षमा याचना करना अपना दायित्व समझता हूँ।

धन्यवाद

**लक्ष्मी प्रसाद जायसवाल**
देहरादून

# कार्यकारी सारांश

केरल के मीडिया जगत द्वारा लगातार प्रसारित रिर्पोटों में खुलासा हो रहा है कि आश्चर्यजनक संख्या में वहाँ की युवा महिलाएँ एवं लड़कियाँ अपने निवास, शैक्षणिक संस्थानों तथा कार्यस्थलों से गायब हो रही हैं। उनमें से कई तो कुछ समय पश्चात् यह घोषणा करते हुए प्रकट हो जाती हैं कि वे मुस्लिम पुरुषों के साथ विवाह कर चुकी हैं, अपनी इच्छा से इस्लाम स्वीकार कर लिया है। परन्तु अधिकांश महिलाओं का पता ही नहीं चलता।

केरल में महिलाओं को प्राप्त उच्च स्थान तथा उच्च शैक्षिक स्तर के कारण इस प्रकार की घटनायें आश्चर्यजनक हैं। एक प्रारम्भिक मान्यता यह है कि सूचना प्रवाह एवं रिपोर्टों में वृद्धि के कारण ऐसे मामलों में बढ़ोतरी दिख रही है। लड़कियाँ स्वेच्छा से लड़कों के साथ भाग रही है।

मीडिया में प्रसारित अन्यान्य रिपोर्टों, पुलिस वक्तव्य तथा पथानमथीता शहर की दो एम.बी.ए. छात्राओं के अनुभवों पर आधारित केरल उच्च न्यायालय में दायर रिट (लड़कियों को कोर्ट में पेश किये जाने की प्रार्थना वाला महत्वपूर्ण मामला) यह संकेत देती है कि इनके गायब होने में एक ही पद्धति है। यह पता चलता है कि गुमशुदा महिलाओं में से कईयों पर इस्लाम में मतान्तरित होने के लिए दबाव डाला जाता है और कभी-कभी मुस्लिम पुरुष से विवाह करने को विवश किया जाता है।

यह भी आरोप है कि सोचे समझे संगठित तरीके से, शिकार बन सकने योग्य महिलाओं को चिन्हित किया जाता है। इस तरीके को 'लव जेहाद' का नाम दिया गया है। परिणामस्वरूप शिकार महिलाओं का जीवन का अधिकार, स्वतन्त्रता और उनकी खुशी की खोज का अधिकार खत्म हो जाता है।

अपराधिक घटनाएं घटित हो रही हैं जैसे कि गुमराह करना, अपहरण करना, फुसलाना, बलात्कार, व्यक्तिगत जीवन में अतिक्रमण, प्रतिबन्धित दवाइयों का प्रयोग, देश द्रोह सम्बन्धी सामग्री एवं अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों की शिक्षा 'प्रतिबन्धित समूहों' में भर्ती, अप्राकृतिक यौन क्रियाएँ, अव्यस्कों के साथ बलात्कार आदि। यह एक गम्भीर महिला अधिकार का विषय है क्योंकि वे युवा महिलाएँ जिन्होंने अपने परिवार को छोड़ दिया है उनका उपयोग उपेक्षित पत्नी, घरेलु नौकरानी, वैश्या, यौन

दासी और यहाँ तक कि आतंकवादी तथा आत्मघाती दस्ते के रूप में हो सकता है।

यद्यपि लव जिहाद का मुख्य शिकार युवा महिलाएँ होती है परन्तु युवा पुरुषों को भी - जैसे मादक द्रव्यों, लड़कियों के माध्यम से मतान्तरण के लिए प्रेरित किया जाता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ वे आतंकवादी के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।

अधिकांश रिपोर्टों तथा साक्षात्कारों से ध्यान में आता है कि अधिकांश माँ-बाप यह महसूस करते हैं कि जब उनकी लड़की ने भागकर मतान्तरण कर मुस्लिम के साथ विवाह कर उन्हें लज्जित किया है तो वे भी लड़की को अस्वीकार कर देते हैं। कई यह बहाना कर देते हैं कि उनकी लड़की मर गई। कई अपनी उस लड़की को भी वापस नहीं लेते हैं, जो सहायता के लिए गुहार लगाती रहती है। लड़की स्वयं भी यह महसूस करती है कि उसने अपने परिवार को शर्मसार किया है इसलिए नारकीय जीवन जीने के लिए अपने को तैयार कर लेती है तथा वापस अपने परिवार जाने का साहस नहीं करती है।

मीडिया में प्रकाशित अनेक रिपोर्टों तथा पीड़ितों और उनके परिवार वालों के साक्षात्कार के प्रकाश में यह रिपोर्ट निम्न बिन्दुओं पर विचार करती है। (क) प्रयोग में आने वाले तरीके (ख) इसके पीछे के कारण (ग) व्यक्ति, समूह तथा राज्य पर इसका प्रभाव (घ) इसे रोकने के लिए तथा समाधान हेतु कौन सा कदम उठाने की आवश्यकता है।



# लव जिहाद क्या है

लव जिहाद एक ऐसी गतिविधि है जिसके अन्तर्गत मुस्लिम पुरुष गैर मुस्लिम औरत के ऊपर प्रेम जाल फैंकता है, इस्लाम में मतान्तरित होने के लिए उसे फुसलाता है, प्रलोभन देता है, अपने परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करवाता है और वह मुस्लिम पुरुष के साथ विवाह कर लेती है। यह स्पष्टत: विधिवत सुनियोजित प्रोग्राम है जहाँ युवा पुरुष एक साथ कई महिलाओं को अपना लक्ष्य बनाता है [1]। एक बार सफलता मिल जाने पर दूसरी औरतों के साथ दुहराता है। इसके लिए निश्चित रूप से मध्य पूर्व देशों से आर्थिक सहयोग मिलता है और इसके योजकों को पाकिस्तान की सैनिक गुप्तचर संस्था आइ.एस.आई. और उसकी सहयोगी संस्थाओं जैसे लश्कर-ए-तइबा जैसे प्रतिबन्धित समूहों के द्वारा नियुक्त तथा प्रशिक्षित किया जाता है।

साक्ष्यों से यह संकेत मिलता है कि इस पद्धति से ब्युह रचना की जाती है कि अपेक्षित (शिकार बन सकने की स्थिति वाली) युवा महिलाएं जाल में फँस जाती हैं। एक वृहत रणनीति है कि समाज और परिवार ईकाई को नष्ट किया जाए। यह कपटपूर्ण चालाकी से भरा मनोवैज्ञानिक युद्ध है जिसमें जिहादियों को हर परिस्थिति में विजय ही मिलती है।

- गैर मुस्लिम कोख को बहुतायात में मुस्लिम बच्चे पैदा करने के लिए उपलब्ध कराया जाता है ताकि उनके पक्ष में जनसांख्यिकी झुकाव हो।
- सामान्य महिलाओं को मानसिक और वैचारिक रूप से तैयार कर कुछ भी करने के लिए प्रेरित किया जाता है जैसे यौन दासता, वैश्यावृति, समुद्र पार वैश्यालयों हेतु महिलाओं की आपूर्ति या उनके संस्थानों व घरों में घरेलु नौकरानी के कार्य करना।
- परिवार ईकाई का मनोवैज्ञानिक रूप से सत्यानाश करना ताकि कुछ हद तक ईसाई समाज पर विशेष कर हिन्दू समाज के पूरे के पूरे परिवार का मतान्तरण हो सके।

1. *'जन्मभूमि' ने प्रकाशित किया है कि विशेष रूप से एक परिश्रमी जिहादी रोमियो ने 42 लड़कियों को फंसाया था।*

- ऐसी महिलाओं को आगे अपनी बहनों, माता-पिता और गैर मुस्लिम पुरुषों को जाल में फँसाने के लिए उपयोग किया जाता है।
- जहाँ मतान्तरण एक बार शुरू हो गया वहाँ मीठी बातों से या धमकी से न रुकने वाला सिलसिला शुरू हो जाता है और अन्त में पूरे क्षेत्र विशेष से दूसरी जातियों का सफाया हो जाता है।

आधुनिक तकनीक का प्रयोग बड़े पैमाने पर हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से मोबाइल फोन उनके लिए फुसलाने हेतु सबसे प्रभावी हथियार होता है। कई मोबाइल रिचार्ज करने वाली दुकानें जिहादियों को उन लड़कियों के नम्बर की जानकारी देती हैं जो उनके पास अपना मोबाइल चार्ज कराने आती हैं। इसके माध्यम से उसी रात परिचयात्मक फोन कॉल तथा एस.एम. एस. आना शुरू हो जाता है। उत्सुकतावश लड़की उत्तर देती है यद्यपि वह प्रारम्भ में हिचकिचाती है। अन्त में यह पूर्ण रूप से गुप्त प्रेम में बदल जाता है।

जिहादी जानते हैं कि मोबाइल फोन उनके खिलाफ भी उपयोग में लाया जा सकता है। पीड़ितों से पता चला है कि जैसे ही वे अपना घर छोड़ती हैं और मतान्तरण या विवाह के लिए ले जाई जाती हैं उनका सिम (sim) कार्ड नष्ट कर दिया जाता है ताकि वे किसी से सम्पर्क न कर सकें और न ही पुलिस उन्हें ढूंढ सके। इसी प्रकार महिलाएं इन्टरनेट बातचीत या सामाजिक तंत्र जैसे कि Orkut के माध्यम से भी फँसायी जाती हैं।

सबसे अधिक प्रयोग में लाई जाने वाली तकनीक है लड़कियों की तस्वीर उतारी जाती है और उसका प्रयोग उन्हें ब्लैकमेल करने के लिए किया जाता है।

मोबाइल फोन का कैमरा बड़ा सुविधाजनक होता है। इन्टरनेट कैफे, आइसक्रीम पार्लर या अन्य स्थलों पर गुप्त कैमरों के माध्यम से लड़कियों के अन्तरंग क्षणों की (जब वे अपने जिहादी रोमियों के साथ प्रेमालाप करती हैं) तस्वीर को कैद कर लिया जाता है।

अधिकांश भ्रष्ट जिहादी उन भोली भाली लड़कियों का चेहरा किसी अन्य महिला के शरीर पर जोड़ कर कृत्रिम तस्वीर तैयार कर लेते हैं।

उल्लेखनीय बात यह है कि अमीर और गरीब दोनों प्रकार की महिलाएँ निशाने पर होती है परन्तु धनवान और सामाजिक दृष्टि से मशहूर परिवार को



प्राथमिकता दी जाती है। सम्भवत: लव जिहाद का उदाहरण निर्माण करने के लिए जिहादी रोमियो को पीड़ित लड़कियों की जाति और धर्म के आधार पर अलग-अलग मात्रा में राशि का भुगतान किया जाता है।

यह अजीबो गरीब बात है कि अधिकांश पीड़िता पढ़ी-लिखी, मध्यम और उच्च मध्यम वर्ग की लड़कियाँ होती है और जो पुरुष उन्हें फँसाते हैं वे निम्न वर्ग, अशिक्षित, निम्न स्तर के काम करने वाले होते हैं, जो साधारणत: नौकर चाकर समझकर उपेक्षा करने योग्य होते हैं। शाश्वत नियम यह है कि महिलाएँ अपना जीवनसाथी उसे बनाना पसन्द करती है जो सामाजिक, शैक्षणिक तथा व्यवसायिक दृष्टि से उनसे उच्च स्तर के होते हैं। इस नियम के विपरीत आचरण तब होता है जब नशे की दवाइयों के द्वारा लड़कियों की स्वाभाविक बुद्धि पर कब्जा कर लिया जाता है।

आँकड़ों से निश्चित निष्कर्ष यह निकलता है कि 'लव जिहाद' कुछ ऐसा नहीं है जिसे मात्र युवकों का जवानी का उन्माद समझा जाए, ऐसा भी नहीं है कि प्यार को तरसती लड़कियाँ अपने प्रेमी के साथ सदा प्रसन्न रहने के लिए भाग रही है। विशेषकर इंग्लैंड, मिश्र और इजरायल से प्राप्त ऐसी ही घटनाओं के प्रकाश में इसे गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है। यह नागरिकों के लिए ऐसा अत्यावश्यक विषय है कि अकर्मण्य अधिकारी या सरकार कुछ करेगी इसकी प्रतीक्षा नहीं की जा सकती है। अस्तु माता-पिता को अपने बच्चों की गतिविधियों के प्रति अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है और यह सुनिश्चित करने की कि बच्चे भटकने न पाएँ। इसी प्रकार गम्भीर विषय है, अमेरिका में बच्चे मद्यपान और मादक द्रव्यों के आदी हो रहे हैं। अभिभावकों की ओर से ऐसे रोगों पर नियंत्रण करने के लिए संगठित प्रयास की आवश्यकता है।

उपर्युक्त सन्दर्भित प्रत्यक्षीकरण प्रार्थना (Habeus Corpus) का मामला महत्वपूर्ण है जिसका विवरण नीचे दिया गया है। परिशिष्ट क्रम. 1 (पृष्ठ 45) में उल्लेखित पथानामिथित्ता की एम.बी.ए. की दो छात्राओं में से एक, जिसे प्रेम जाल में फंसाया गया, मानसिक रूप से मतान्तरण और विवाह के लिए प्रेरित किया गया का साक्षात्कार भी इसमें शामिल है। संयोगवश उसमें से एक लड़की केरल के उच्च पुलिस अधिकारी की बेटी थी, जिस कारण पुलिस फोर्स अधिक सक्रिय हो गई। उच्च न्यायालय में दायर याचिका के आधार पर लड़कियाँ बचायी गई तथा

उनको अपने परिवारों से पुन: मिलाया गया। उनकी गवाही को न्यायालय के आदेश में विस्तार से शामिल किया गया और उससे ही ऐसा करने वालों के तरीकों को प्रकाश में लाया जा सका। उनमें से एक लड़की इतनी साहसी थी कि उसने मीडिया[2] के सामने बहुत विस्तार से बयान दिया जिससे 'लव जिहाद' क्या है, कैसे होता है को समझने में आसानी हुई।

सम्भवत: केरल में 'लव जिहाद' की प्रथम घटना जो जानकारी में आई वह है कमला दास या माध्वी कुट्टी जो 1999 में इस्लाम में मतान्तरित हो गयी और कमला सुरैय्या नाम रख लिया। उस समय वह 65 वर्ष की थी परन्तु वह 30 वर्षीय मुस्लिम पुरुष से प्रभावित हो गई। उसे सार्वजनिक रूप से इस्लाम में मतान्तरण के लिए प्रेरित किया गया। उसने अपने पसन्द के नये धर्म का बड़ा प्रदर्शन किया - काला बुर्का पहनना शुरू किया और अपने घर से श्रीकृष्ण की मूर्ति सहित सभी हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को बाहर निकालने को न्यायसंगत बताया, जो कभी उसे सबसे अधिक पसन्द थी।

कमला दास केरल के प्रसिद्ध नलपत बाड़ावड़ परिवार से सम्बन्ध रखती थीं। वह गुदगुदाने वाली अर्द्ध आत्मकथाओं के लिए विख्यात थीं। वह कुछ क्षेत्रों में आंग्ल काव्य रचनाकार के रूप में भी जानी जाती थीं। इसलिए उसका सार्वजनिक मतान्तरण जिहादियों के लिए प्रबल प्रचार का माध्यम था। वह नि:संदेह 'रोमियों' के लिये अपने हिन्दु शिकारों को प्रभावित करने के लिए एक उदाहरण था।

अजीबोगरीब प्रतिक्रिया में केरल के बुद्धिजीवियों ने व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नाम पर कमला सुरय्या के इस्लाम में मतान्तरण का समर्थन किया। उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया कि कहीं यह मतान्तरण दबाव या जाल में फंसने के कारण तो नहीं हुआ था। एक बुद्धिजीवी इतना आगे बढ़ा कि अपने को मतान्तरित कर लिया परन्तु वह इतना सतर्क था कि उसने केवल बौद्ध मत स्वीकार किया। सम्भवत: यह इसलिए कि बौद्ध मत में स्वधर्म को त्याग करने पर कोई दंड का प्रावधान नहीं है। कमला सुरैय्या का अभी निधन हुआ है। चर्चा है कि वह बुर्का नशीं जीवन से तंग आ चुकी थी परन्तु उसने महसूस किया कि इस्लाम में प्रवेश तो आसान है पर बाहर निकलना कठिन है।

2. *कला कौमुदी पत्रिका, 12 अक्टूबर, 2009*



## केरल में महिलाओं की स्थिति

केरल भारत की महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत अधिक मित्रवत भाग है। कुछ संकेतों से पता चलता है कि औसतन केरल की महिलाएँ देश के शेष भाग की बहनों से अधिक अच्छी हैं। उदाहरण के लिए केरल में महिलाओं की औसत आयु 77 वर्ष है जो सम्पन्न समाज की महिलाओं की तुलना में बेहतर है। अमेरिका में श्वेत महिलाएँ और जापान की महिलाएँ 80 वर्ष के आसपास तक जीवन जीती हैं। महत्वपूर्ण यह है कि केरल में विकसित देशों की तरह लिंग अनुपात मोटे तौर पर 1000 पुरुष की अपेक्षा 1058 महिला है। जबकि भारत के बहुत से भागों में यह अनुपात विपरीत से भी बहुत ज्यादा है। शायद 920 महिला 1000 पुरुष के मुकाबले। इससे पता चलता है केरल में महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार होता है।

शिक्षा के स्तर तथा कार्यशक्ति में महिलाओं की सहभागिता का दर अधिक है। कुछ क्षेत्रों को छोड़कर महिलाओं की शैक्षणिक उपलब्धियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक है। महिला डाक्टरों, अभियन्ताओं, वकीलों, शिक्षकों तथा प्रशासनिक अधिकारियों की संख्या अधिक है। कुछ उच्च स्तरीय व्यवसायों में महिलाएँ परम्परागत ढंग से प्रभावी हैं।

केरल की नर्सों की कहानी शिक्षाप्रद है। निम्न-मध्य वर्गीय परिवार विशेषकर कोटयम के आसपास के क्षेत्र विशेष कर ईसाई परिवार का स्तर मध्यम वर्ग और यहाँ तक कि ऐशो आराम के स्तर तक पहुँच गया है क्योंकि उनको अप्रवासी नर्स पुत्री प्रचुर मात्रा में धन भेजती है। यह एक उदाहरण है कि कैसे शिक्षित बेरोजगारी की समस्या के बावजूद केरल की अधिकांश महिलाएँ आरामदायक रोजगार पाने में सफल हुई है। वे सामान्यत: अर्थिक अवसर की कमी का शिकार नहीं है जिसके कारण बहुत से विकासशील देशों की महिलाएँ बुरे कामों की ओर प्रवृत हो जाती हैं।

केरल में महिलाओं की स्थिति के कुछ ऐतिहासिक कारण भी हैं। एक कारण यह है कि सबसे विशाल हिन्दु समुदाय नय्यर और एजावा परम्परागत ढंग से मातृ सत्तात्मक है। अत: महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा है और इसके कारण उन्हें आत्मविश्वास रहता है और अंशत: इस कारण से वे शिक्षा के प्रति अधिक प्रवृत रहती हैं। अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं को प्रथम होने का गौरव प्राप्त है जैसे

सर्वोच्च न्यायालय की प्रथम जज महिला हुई। पहली महिला शल्य चिकित्सक हुई आदि। हिन्दु समूह के मातृ प्रधान होने के कारण बहुत से परिवारों की प्रथम प्राथमिकता लड़की होती है, जिससे उनकी मातृ प्रधानता की परम्परा कायम रह सके। सम्भ्रान्त देशों में भी लड़कियों के साथ कुछ मात्रा में सौतेला व्यवहार जुड़ा रहता है परन्तु केरल में लड़कियों के साथ लड़कों के समान व्यवहार होता है बल्कि उसस कुछ अच्छा ही होता है।

इन सबसे निष्कर्ष निकलता है कि केरल में महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने तथा कैरियर बनाने हेतु अच्छे अवसर हैं और घरों में कैद नहीं हैं। 2006 तक जब 'लव जिहाद' प्रारम्भ हुआ बड़ी मात्रा में महिलाएँ शिक्षा और कैरियर की दिशा में सक्रिय थीं। केरल में महिलाओं के मुक्त होने का कारण था शिक्षा और कैरियर के प्रति उनकी अबाधित पहुँच। अत: वही औरतें जेहादियों का शिकार नहीं हो पाती जो घरों तक सीमित हैं।

## लव जिहाद की सफलता के महौल जनित कारण

परिवार नियोजन कार्यक्रम लागू होने के बाद केरल के अधिकांश हिन्दुओं ने राष्ट्रीय कर्तव्य समझ कर इसे उत्साहपूर्वक अपनाया। इसके कारण बच्चा चाहे लड़की हो या लड़का, का महत्व बढ़ गया। परिणामस्वरूप यदि घर की इकलौती बेटी जिहादी रोमियो के जाल में फंस जाती है, परिवार को असहनीय आत्मग्लानी हो जाती है और धब्बा लग जाता है।

ऐसे परिवार का जिन्दा रहना दूभर हो जाता है क्योंकि लड़की के द्वारा उत्पन्न शर्मनाक स्थिति से आत्मा मृत हो जाती है। परिवार को यह बहाना करना पड़ जाता है कि लड़की मर गई है। यद्यपि वे झूठी कहानी भी गढ़ सकते हैं कि वह कहीं और पढ़ रही है या कार्य कर रही है। परिवार के लिये यह अत्यन्त ही विनाशकारी स्थिति है क्योंकि वे लड़की को वापस स्वीकार नहीं कर सकते, बेशक लड़की को अपनी भूल समझ में आ जाये या बेशक वह जेहादी के चुंगल से भागने में सफल भी हो जाए। उसके सामने कोई विकल्प नहीं बचता सिवाय इसके कि वह जाल में फँसाने वाले के सामने समर्पण कर दे। शर्म की यह अवधारणा जिहादियों के लिए लाभप्रद है।

सूचना प्रौद्योगिकी तथा बी.पी.ओ. के विस्तार के साथ महिलाओं के बीच इन्जीनियरिंग शिक्षा तथा सूचना प्रोद्योगिक क्षेत्र में रोजगार के प्रति दिलचस्पी बढ़ी



है। अत: अधिक मात्रा में केरल की लड़कियाँ पहली बार घर से दूर इंजीनियरिंग या नर्सिंग महाविद्यालय के छात्रावास में रहती हैं। इसी प्रकार केरल की जवान अविवाहित महिलाएँ बड़े शहरों जैसे बंगलौर में संयुक्त आवास में रहती हैं जहाँ वे माता-पिता के नियन्त्रण से पूर्णत: स्वतन्त्रता का अनुभव करती हैं। ऐसे रहने की अपनी समस्यायें हैं पर ज्यादातर 'लव जिहाद' की शिकार लड़कियाँ घर में ही रहती है जहाँ परिवार के लोग बच्चों में आ रहे परिवर्तन को पहचान नहीं पाते हैं।

अपने घर में सुरक्षात्मक और नम्र वातावरण के कारण बहुत सी मध्यमवर्गीय लड़कियाँ अपने स्तर पर अपने जीवन के कटु सत्य का सामना करने में सक्षम नही हो पाती। केरल में सुरक्षा सम्बन्धी यह विरोधाभास है कि महिलाओं को समाज में ऊँचा स्थान होने के बावजूद अभी भी कमरे में कैद है और सामान्यत: अपने सगे सम्बन्धियों के अतिरिक्त किसी अन्य लड़के से निपटने के मामले में अनुभवी नहीं होती हैं। महिलाएँ अपेक्षा करती हैं कि उनकी रक्षा हो। जहाँ भी वे जाती हैं केरल के शहरों की गलियों (जहाँ ग्रामीण वातावरण रहता है) में अँधेरा होने के पश्चात् अकेली नहीं होती हैं।

छेड़खानी की शिकायतें भी लगातार मिलती रहती हैं जो इंगित करता है कि लड़के-लड़कियों को आपस में मिलने के कम ही अवसर मिलते हैं। महिलाओं का भीगी बिल्ली होना गुण माना जाता है। केरल के अधिकांश शहरों में लड़की यदि किसी लड़के से बातचीत करती हुए पायी जाती है तो तुरन्त उसकी शिकायत माँ-बाप या शिक्षक के पास पहुँच जाती है जिसके कारण वह संकट में पड़ जाती है। अत: प्रकट स्वतन्त्रता के बावजूद प्रतिबन्ध भी है जिसके कारण ब्रिदोही किशोरियाँ स्वाभाविक रूप से अपने शरीर में आ रहे जैवकीय (हारमोन्स सम्बन्धी) परिवर्तन के कारण आक्रामक और क्रोधित हो जाती हैं।

केरल में साम्यवाद तथा फिल्मी दुनियाँ दोनों का व्यापक प्रभाव है। केरल के साम्यवादियों की विचारधारा सर्वविदित है। यह कम लोगों को पता है कि बहुतायात साम्यवादी सदैव हिन्दू रहे हैं विशेषकर अन्य पिछड़ा वर्ग में से एजावा जाति के लोग। साम्यवादियों की धर्म विरोधी विचारधारा हिन्दू घरों तक को प्रभावित कर जाती है।यह विचारधारा स्पष्टत: हिन्दु विरोधी होती हैं क्योंकि साम्यवादियों ने रणनीति के अन्तर्गत मुस्लिमों के साथ दीर्घकालीन साँठ-गाँठ कर रखी है। उनकी साँठ-गाँठ इस हद तक है कि 1970 में मालाबार में सै मुस्लिम बहुल जिला

मल्लापुरम का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त एजावा और मुस्लमानों ने आपस में मधुर रिश्ता बना लिया है क्योंकि उनमें यह भावना है कि वे दोनों पिछड़े वर्ग के हैं। इसी प्रकार अगड़ा समुदाय नैय्यर ने ईसाइयों के साथ नीतिगत ढंग से साँठ-गाँठ बना ली है।

परिणामस्वरूप केरल की अधिकांश हिन्दू लड़कियाँ प्रगतिशील घरों में पलती है जो धर्म को विशेषकर हिन्दुत्व को नजर अन्दाज करते हैं। इसलिए वे धार्मिक विचारों का विश्लेषण अपने आप करने में सक्षम नहीं होती। खासकर वे हिन्दुत्व के विषय में व्यवहारिक रूप से कुछ भी जानकारी न रखते हुए बड़ी होती हैं। वे माँ-बाप को मन्दिरों से दूर रहते हुए देखती हैं, जो जाति प्रथा के विरुद्ध तथा हिन्दुत्व की अन्य बुराइयों को गाली देते हैं और गर्वपूर्वक ईसाइयत तथा इस्लाम के महान चरित्रों का प्रदर्शन अपने घरों में करते हैं ताकि अपने को विस्तृत सोच रखने वाले के रूप में प्रस्तुत कर सकें। ''सभी धर्म समान हैं'' यह उन्हें पढ़ाया जाता है परन्तु धूर्ततापूर्वक यह भी बताया जाता है कि हिन्दुत्व अन्य धर्मों की तुलना में तुच्छ है और तथाकथित दमनात्मक प्रवृति के कारण जातीयता एक प्रचलित कोड़ा मारने समान व्यवस्था है जिसके खिलाफ सभी उदारवादियों को वर्ग संघर्ष करना चाहिए।

मलयालम की पाठ्यपुस्तकों में अभी तक भी हिन्दुत्व के प्रति कुछ अच्छी बातें होती थी क्योंकि सभी प्राचीन भाषाई कार्यों में हिन्दू प्रसंग होता था। पर शिक्षा में सुधारों की[3] श्रृंखला में यह सुनिश्चित किया गया कि पाठ्यपुस्तकों में से हिन्दू रूपक अलंकार तथा विचारों को हटा दिया जाये। इस प्रकार छात्र हिन्दुत्व की विशेषताओं के विषय में घरों में या विद्यालयों में कुछ भी नहीं सीखते हैं। हिन्दुत्व का विवरण केवल मन्दिरों के दर्शन से मिलता है जिसे वे निरर्थक परम्परा के रूप में देखते हैं। अत: हिन्दू लोग सामान्यत: यह कहते हैं ''मैंने हिन्दू परवार में जन्म लिया है'' बावजूद इसके वे हिन्दू नहीं हैं। दुर्भाग्यवश हिन्दुत्व से इस प्रकार का दुराव सम्भवत: भारतवर्ष के प्रत्येक राज्यों में है।

दूसरा प्रभाव फिल्मी दुनियाँ के हिन्दी चलचित्रों का है। यद्यपि मलयालम में दृढ़ भाषाई और फिल्मी परम्परा है हिन्दी फिल्में लोकप्रिय हो चुके हैं। हिन्दी फिल्में सिनेमाघरों में और विशेषकर दूरदर्शन चैनलों पर संस्कृति का दृष्टांत बन

3. *1956 जब से केरल राज्य की स्थापना हुई है लगातार मुसलिम या ईसाई ही शिक्षा मंत्री हुए हैं केवल अपवाद स्वरूप एक हिन्दू हुआ है।*



चुकी हैं और मुस्लिम अभिनेता शहरुख खान, सलमान खान और आमिर खान नवयौवना महिलाओं के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय हैं। वास्तव में इन मुस्लिम पुरुष का हिन्दू महिलाओं के साथ विवाह करने या प्रेम करने का लड़कियों के रुख पर तीव्र प्रभाव पड़ता है। अगर उसका सनम तेज तरार मुस्लिम है जो हिन्दु लड़कियों से इश्क करता है तो वे भी मुस्लिम पुरुषों से इश्क क्यों न करें?

यह भी प्रकट होता है कि मुस्लिम महिलाएँ अपनर गैर मुस्लिम सहेलियों को प्रभावित करने में सक्रिय योगदान करती हैं। वे सहयोगात्मक भूमिका का निर्वाह करती हैं उदाहरण के लिए ऐसी लड़कियों के बारे में सूचना जेहादियों को प्रदान करती है जो सरल शिकार बन सकती है या वे लक्षित लड़कियों को अनुकूल बनाने में सक्रिय सहयोग कर सकती हैं। यह सम्भव है कि मुस्लिम महिलाएँ सहेलियों के मतान्तण के लिए छलपूर्वक दबाव डालती हैं।

अत: केरल में कई प्रकार के घातक कारक हैं। मालाबार क्षेत्र के कई जिले जहाँ मुस्लिम बहुमत में है बहुत सी हिन्दू महिलाएँ अपने परिवारों में खुलेआम हिन्दुत्व विरोधी हैं। वे सामान्यत: इस्लाम के प्रति सकारात्मक हैं क्योंकि हिन्दुत्व के विषय में जानकारी का अभाव है तथा अपने सम्बन्ध या रिश्ते के पुरुषों के अतिरिक्त दूसरे पुरुषों से कैसे व्यवहार करना है इस अनुभव की कमी है। उन्हें इसका अहसास नहीं है कि जिहादी रोमियो जो उनका पीछा कर रहा है उसका आकलन कैसे करें।

## लव जिहाद की पद्धति

लव जिहाद सीधे-सीधे कुरान का हुक्म, इस्लाम के प्रचार का माध्यम है। उनका स्पष्ट इरादा है कि गैर मुस्लिम महिलाओं की कोख से अधिक से अधिक जिहादियों को पैदा किया जाए। वे अधिकाधिक भोलीभाली हिन्दु लड़कियों को इस्लाम में मतान्तरित होने के लिए बहकाने का प्रयास करते हैं। यदि ऐसा नहीं तो वैश्या बनने के लिए मजबूर कर दी जाती है। जो अपने मकसद में सफल हो जाते हैं उन्हें अवैध सिम कार्ड, मोबाइल फोन आदि के अतिरिक्त बड़ी राशि देकर पुरुष्कृत किया जाता है। इस काम के लिए सउदी अरब से जिहादियों को धन आपूर्ति कराने वाली एजेन्सियों के द्वारा भारत में स्थित उनके सहयोगियों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में धन केरल आता है।

कई रिपोर्टों[4] के अनुसार पाकिस्तान के लश्करे तइबा ने इस रणनीति को 1996 में लागू किया था। पाकिस्तान में प्रशिक्षित जिहादी रोमियो उस समय से मेरठ में अपनी गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार 1996-98 के कालखण्ड में वे उत्तरप्रदेश में बड़ी मात्रा में हिन्दू महिलाओं को मतान्तरित कराने में सफल रहे।

द्वितीय चरण में वे महाराष्ट्र के पुणे के आसपास केन्द्रित रहे। जब इसका प्रमुख गिरफ्तार किया गया तो इस गतिविधि को 2004 में बंगलोर में स्थानान्तरित कर दिया गया और उसके बाद कर्नाटक के मंगलोर में। केरल में यह 2006 में पहुँचा। प्रशिक्षित जिहादी इस कार्रवाई को कोजीकोड, कोच्ची और त्रिवेन्द्रम से संचालित कर रहे हैं। वे विद्यालय, महाविद्यालय, सूचना प्रोद्योगिक कम्पनियों तथा अन्य स्थानों को, जहाँ अनेकानेक महिलाएँ कार्यरत हैं, अपना निशाना बनाते हैं। उनके साथी ऐसी हिन्दू और ईसाई लड़कियों की सूची बनाते हैं जो सर्वाधिक अनुकूल और आसान शिकार हो सकती हैं। ऐसी चिन्हित लड़कियों को बहकाने का काम कोई दूसरा करता है।

### लव जिहाद के विभिन्न चरण

1. **सम्पर्क** - प्रथमतः मोबाइल फोन और अन्तरताना (इन्टरनेट) का प्रयोग सम्पर्क स्थापित करने के लिए किया जाता है। इस काम के लिए मोबाइल रिचार्ज सेन्टर का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। जब भी कोई लड़की अपने फोन को रिचार्ज कराती है उसका नम्बर किसी जिहादी के पास पहुँच जाता है और वह तुरन्त उस लड़की को मैसेज भेजता है या फोन करता है। यद्यपि शुरू-शुरू में लड़की विरोध कर सकती है परन्तु बाद में उसकी सामान्य उत्सुकता अभिलाषा बन जाएगी और वह फोन की प्रतीक्षा करेगी। यह सम्बन्ध और अधिक घनिष्ठ बन जाता है जब फोन करने वाला बातचीत को वासनात्मक पुट देता है। दूसरे चरण में इन्टरनेट या चैटरूम के माध्यम से सार्वजनिक ताने-बाने में निरपराध मित्रता बन जाती है।
2. **सम्मोहन** - लड़की की छोटी से छोटी इच्छा को रोमियो समझने, ध्यान देने तथा पूर्ण करने का प्रयास करेगा उदाहरण स्वरूप जब वह अध्ययन, परीक्षाशुल्क, वस्त्र, सौन्दर्य प्रसाधन, सिनेमा टिकट इत्यादि से सम्बन्धित

4. *अधिकांश सूचनाएँ 17 सितम्बर की 'जन्मभूमि' पत्रिका से प्राप्त हुई है।*



सहयोग की अपेक्षा करती है। लड़की किसी पुरुष द्वारा ध्यान रखने के कारण प्रभावित हो जाती है। बहुत से मामलों में किसी अन्जान पुरुष के साथ आत्मीयतापूर्ण बातचीत और मित्रता का यह प्रथम अवसर होता है। यदि इस अवस्था में माँ-बाप चिन्ता प्रकट करते हैं तो लड़की धर्मनिरपेक्ष[5] भाव से ओतप्रोत होकर उनके उपर फासिस्ट होने का आरोप लगाती है।

3. **आतिथ्य सत्कार** - अगले चरण में लड़की अर्द्ध निजी स्थान जैसे आइसक्रीम पार्लर, शॉपिंग मॉल, जलपानगृह, बार, नाइटक्लब आदि में ले जायी जाती है जहाँ प्रेमालाप सम्भवत थोड़ी हाथ पकड़ और मधुर कानाफूसी होती है। लड़की आश्वस्त हो जाती है कि उसका हीरो सिर से पाँव तक उसके प्यार में डूबा है और वह आदान प्रदान करना शुरू कर देती है। इस अवस्था में यदि कोई हस्तक्षेप करता है वह उस व्यक्ति के बचाव में खड़ी हो जाती है। पहली बार मदिरापान या नशे में धुत होने पर लड़की में अनुचित सम्बन्धों के प्रति रोमन्च पैदा हो जाता है।
4. **शिकार की पकड़** - इस चरण में लड़की बाहर जाने के लिए तैयार रहती है उदाहरण के लिये निकट के टूरिस्ट रिजार्ट या होटल। रोमियो उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थपित करता है, उसकी जानकारी के बिना इस दृश्य को जिहादी के मोबाइल फ़ोन कैमरा या कमरे में लगे गुप्त कैमरे में कैद कर लिया जाता है। यह एक ऐसा मोड़ है जहाँ से वापस मुड़ा नहीं जा सकता है। इसके बाद जिहादी लड़की को शारीरिक सम्बन्धों वाले फोटो या वीड़ियो के सहारे ब्लैकमेल करेगा। अब वह पूरी तरह उसके नियंत्रण में रहती है, वह उसको अपने मित्र के साथ यौन सम्बन्ध बनाने को भी कह सकता है और उसके सामने स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं होता है। क्योंकि उसे डर होता है कहीं वह फोटो सार्वजनिक न कर दी जाए या उसके माँ-बाप को न भेज दी जाए। इसके बाद के सभी यौन सम्बधों को आवश्यक रूप से वीडियो टेप कर लिया जाता है और वह इस फिसलन पर लगातार फिसलती जाती है[6]।

5. *भारतवर्ष में धर्मनिरपेक्ष (secular) शब्द का अभिप्राय हिन्दू विरोधी है।*
6. *उस परिस्थिति में वे एक मात्र समाधान आत्महत्या ही मानते हैं जैसा प्रत्यक्ष तौर पर अम्बालापुज्जा की तीन हायर सेकेन्डरी विद्यालय की छात्राओं के साथ हुआ उनमें से 2 हिन्दू और एक ईसाई (अनिला, वेनी और जूली) थी जो अपने ही सहपाठी (जौफर और शहनवाज) के द्वारा प्रेमजाल में फँसाई गई थी।*

5. **मतान्तरण** – अभी भी लड़की यह विश्वास करती है कि उसका रोमियो उससे प्यार करता है और वह यदि इस्लाम स्वीकार कर लेगी तो वह विवाह कर लेगा। उस पर धार्मिक प्रचार किया जाता है और मतान्तरण केन्द्र पर जैसे पुन्नानी और कोजीकोड भेज दी जाती है। कोटायम, कसारगौड और करूणागापल्ली में भी धार्मिक प्रशिक्षण केन्द्र हैं। जैसे ही वह मतान्तरित हो जाती है किसी के साथ भी उसका विवाह हो सकता है, **सामान्यत:** निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ। उदाहरण के लिए एक अच्छी पढ़ी-लिखी महाविद्यालयीन लड़की की शादी यदि वह सौभाग्यशालिनी है तो एक मजदूर के साथ हो सकता है। अन्यथा अत्यन्त दुखद कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ सकता है।

## मतान्तरित महिलाओं का सम्भावित हश्र

जो मामले प्रकाश में आए हैं उसके आधार पर मतान्तरित महिलाओं का सम्भावित भविष्य जब तक वह चंगुल से भाग नहीं जाती या बचा नहीं ली जाती है, अनेक प्रकार का होता है। (पुलिस श्रोतों के अनुसार जनवरी 2008 से अक्टूबर 2009 के बीच जो महिलाएँ भागने में सफल हो सकी हैं उनकी संख्या 27 है)

जैसे ही वे यह महसूस करने लगती हैं कि वो छली गयी है और उनका जीवन पूर्ण असहाय अवस्था में धकेल दिया गया है, हम मान सकते हैं कि उनमें संघर्ष करने की इच्छा समाप्त हो गई है। इस हालत में वे मानसिक और शारीरिक रूप से टूट चुकी होती हैं। कुछ बचायी गयी लड़कियों के साथ सप्ताह-सप्ताह तक सामूहिक बलात्कार हुआ था जब तक कि गुप्त अंग क्षतिग्रस्त न हो गया हो। प्रताड़ना दी जाती है, कुछ अपने परिवार से जब सहायता की पुकार करती है तो परिवार द्वारा बहिष्कृत कर दी जाती हैं और परिवार से कोई सहायता नहीं मिलती है। यह भी सम्भव है कि उनमें से कुछ अपने नारकीय जीवन से छुटकारा पाने के लिए आत्महत्या भी कर लेती हो।

फिर भी जीवन जीने की प्रबल इच्छा के कारण बहुत सी महिलाएँ अपने को मारती नहीं हैं। बावजूद इसके वे समझौता कर जीने का प्रयास करती है। बचाव का सम्भवत: एक रास्ता यह होता है कि वह पूर्णत: कैद करने वाले की आज्ञानुसार चलती हैं और उस पर निर्भर हो जाती हैं। जब वह थोड़ा सा भी उससे सहयोग पाती



हैं तो अति प्रसन्न हो जाती हैं। वे राक्षसी कार्य सहित कुछ भी कर सकती हैं ताकि स्वामी और मालिक के द्वारा थोड़ा सा प्यार मिल सके।

इसके अतिरिक्त लगातार मृत्यु समान पीड़ादायक सामूहिक बलात्कार[7] सहित निर्दयतापूर्ण यौन हिंसा भी अधिक होती है। इसके बावजूद भी यदि महिला इन सबको सहन कर लेती है तो निश्चित रूप से वह मनुष्य के नाते स्वाभिमान की समस्त अनुभूतियों को खो चुकी होती है और वह केवल मनुष्य रूप की खाली ठठरी रह जाती है। वह एक रोबोट के समान हो जाती है, अकल्पनाशील मानव बम के लिए उपयुक्त सामग्री बन जाती है।

## सम्भावनाएँ

- **यौन दासता और सौदा** – जवान औरतों की वैश्यालयों में आपूर्ति करने हेतु संगठित प्रयास होता है। कोजीकोड और कोच्ची में मारे गये छापों में बहुत बड़ी मात्रा में हिन्दू महिलाएं जो मतान्तरित होकर मुस्लिम बन गयी, पकड़ी गई। कुछ मंगलोर, बंगलोर और मुम्बई में बेच दी जाती हैं। बाकी को मादक द्रव्य के सहारे बेहोशी की हालत में जहाज से मध्यपूर्व के वेश्यालयों में तथा पाकिस्तान के वेश्या बाजार वाले जिले जैसे लाहौर के हीरा मंडी[8] में भेज दिया जाता है। यह बहुत ही लाभदायक पेशा है, इस सौदे से बड़ा मुनाफा मिलता है और परिश्रम कुछ नहीं करना पड़ता है। लव जिहाद से अपार मात्रा में नई-नई औरतों की आपूर्ति सुनिश्चित हो जाती है।
- **दासत्व** – अधिकांश दुर्व्यवहारपूर्ण नौकरानी का जीवन व्यतीत करती हैं। ये अच्छी पढ़ी-लिखी महिलाएँ होती हैं जो प्रमुख मुसलमानों या मुस्लिम अनाथालय या धार्मिक प्रशिक्षण केन्द्रों में काम करती हैं। बहुत सी मध्यपूर्व देशों में नौकरानी के रूप में भेज दी जाती हैं जहाँ उनका बहुत प्रकार से शोषण फिलीपीन के नौकरों की तरह होता है उसमें यौन शोषण भी शामिल है। कम से कम फिलीपीनी महिलाएँ वैध प्रवासी होती हैं जिन्हें उनका

7. *मुसलमानों द्वारा बलात्कार को अनेक प्रसंगों पर उदाहरण स्वरूप बांग्लादेश में 1971 में स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान हथियार के रूप में प्रयोग किया गया। व्यवस्थित ढंग से बलात्कार को आतंकित करने और बंगाली विशेषकर हिन्दुओं को लज्जित करने के लिए हथियार के रूप में प्रयोग किया जाता है।*

8. *परिशिष्ट-III पर प्रस्तुत रिपोर्ट देखें जिसमें एक सिख ब्रिटिश-भारतीय लड़की जो हीरामण्डी से भागने में सफल हो सकी।*

राजदूत सहयोग करता है। पर लव जिहाद की शिकार लड़कियाँ मध्यपूर्व के देशों में नाव के द्वारा गुप्त ढंग से भेजी जाती हैं। उनके पासपोर्ट तथा अन्य कोई कागजात नहीं होता है। इस कारण से उनका कोई अधिकार नहीं होता और वे अस्तित्वहीन होती हैं।

- **कनिष्ठ पत्नियाँ** – कुछ किसी मशहूर मुसलमान की चौथी या पाँचवी पत्नी के रूप में जीवन जीती हैं।
- **हिन्दू पुरुषों को जाल में फँसाना** – आकर्षक और शिक्षित जवान औरतों को विवश किया जाता है कि वे यौन सम्बन्धों का लालच देकर पुरुषों को आतंकवादी बनने के लिए फुसलाए। बहुत सारे उदाहरण हैं कि कैसे हिन्दू पुरुषों का पहले मतान्तरण हुआ और बाद में आतंकवादी बना दिए गये । एक ऐसी ही कहानी प्रनेश पिल्लई उर्फ जावेद की है। उसे साजिदा नामक मुस्लिम महिला द्वारा फँसाया गया। साजिदा हिन्दू से मतान्तरित थी या नहीं ज्ञात नहीं है।
- **सम्भावित मतान्तरितों की प्रबन्धकर्ता** – कई मामलों में जो जवान हिन्दू औरतें अपहृत की जाती हैं, उन्हें बुर्काधारी महिला ले जाने का काम करती है, वे ही उन्हें निर्देश देती है और उनका प्रबन्ध करती है। ऐसा माना जाता है कि ये सब हिन्दू मतान्तरित महिलाएँ होती है जिनका इस्तेमाल नयी लड़कियों को जलती हुई सिगरेट के टुकड़ों से प्रताड़ित करने तक के लिए किया जाता है। पालतु हाथी द्वारा जंगली हाथी को वश में करने वाली घटना का स्मरण हो आता है, ये महिलाएँ जो स्वयं बर्बाद हो चुकी होती है उनका उपयोग आगे के मतान्तरण के लिए किया जाता है।
- **आत्मघाती दस्ता या लड़ाकू** – ऐसा मनुष्य जिसकी अपनी पहचान मानसिक प्रक्षालन या यौन हिंसा के द्वारा मटियामेट हो गयी हो, वह सोचने समझने में असमर्थ रोबोट के समान है जिसे अपने आपको को उड़ाने के लिए आदेश दिया जा सकता है। चुंकि महिलाओं पर सन्देह कम होता है इसलिए वह हत्या तथा आम जनता को आतंकित करने के लिए उपयुक्त साधन बन सकती हैं। ऐसी वारदातों की संख्या बढ़ रही है जहाँ महिला आत्मघाती दस्ताओं तथा लड़ाकुओं का इस्तेमाल किया जाता है जैसे रावलपिन्डी स्थित पाकिस्तानी सेना मुख्यालय पर हुई हाल की घटना। लिट्टे के मामले में भी देखा गया था कि महिला आतंकवादी अधिक प्रभावी होती थीं।



- विश्वास नहीं होता है कि ऐसा कोई भी परिणाम आम महिलाओं को स्वीकार्य होता हो। वे तो अपने मनमोहक अद्भुत हीरो के साथ सामान्य व खुशहाल विवाहित जीवन जीने की कल्पना कर रही थी। संयोगवश ही कभी किसी को खुशनुमा परिणाम मिलता हो परन्तु अधिकांश शिकार बनी महिलाएँ बर्बाद हो जाती हैं और दूसरी तरफ जिहादी रोमियो बिना समय गंवाये दूसरे शिकार की ओर अग्रसर हो जाता है।

2006–2009 के बीच केरल में लव जिहाद की शिकार होने वाली महिलाओं का आँकड़ा निम्न है [9]–

गुम हुई लड़कियों की घटना, पुलिस में पंजीकृत मामले तथा बचायी गई लड़कियाँ

**तालिका**

| जिला | मामले | पंजीकृत मामले | बचाई गई |
|---|---|---|---|
| त्रिवेन्द्रम | 216 | 26 | 6 |
| कोल्लम | 98 | 34 | 7 |
| अलप्पुजा | 78 | 22 | 5 |
| पथानमथीता | 87 | 36 | 11 |
| इडुक्की | 156 | 18 | 9 |
| कोट्यम | 116 | 46 | 13 |
| एर्नाकुलम | 228 | 52 | 26 |
| थिरुसुर | 102 | 41 | 19 |
| पालाक्कड़ | 111 | 19 | 9 |
| मल्लापुरम | 412 | 88 | 31 |
| कोजीकोड | 364 | 92 | 29 |
| कन्नुर | 312 | 106 | 27 |
| कसारगोड | 586 | 123 | 68 |

9. *17 सितम्बर जन्मभूमि में प्रकाशित 'दिल तोड़ने वाली गाथाएँ' नाम से रिपोर्ट।*

यह उल्लेखनीय है कि अंन्तिम चार जिले मुस्लिम बहुल मालाबार का क्षेत्र है जहाँ सर्वाधिक मामले दर्ज किए गये।

## दूसरा पक्ष : जवान पुरुष का भी लव जिहाद के माध्यम से मतान्तरण

यद्यपि जिहादियों का मुख्य रूप से जवान औरतों को कब्जे में लेने पर ध्यान रहता है परन्तु जवान पुरुष भी प्रलोभित किये जाते हैं। केरल में उसके कई उदाहरण हैं। एक प्रनेश कुमार पिल्लई के मतान्तरण का मामला है जिसे बाद में दूसरे आतंकवादियों के साथ 15 जून 2004 को एक मुठभेड़ में गोली मार कर मार दिया गया। उसमें दो पाकिस्तानी नागरिक भी शामिल थे जो अहमदाबाद के निकट एक कार में थे जिन्हें गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को खत्म करने की साजिश रचने के आरोप में मुठभेड़ में मार गिराया गया था।

दूसरा उदाहरण वर्गीज जोसेफ का है जो एर्नाकुलम के अपराधिक गिरोह का सदस्य था। उसको मतान्तरित किया गया और वह आतंकवादी बन गया। उसे जम्मू-कश्मीर में भारतीय सेना ने केरल के तीन अन्य मुस्लिम आतंकवादियों के साथ मार दिया था। वे सब जम्मू कश्मीर में सघन शस्त्र प्रशिक्षण के बाद भारतीय सैनिकों को मारने तथा भारत में पाकिस्तानी घुसपैठ के प्रयास में सहयोग देने हेतु गये थे।

तीसरा मामला एर्नाकुलम के निकट एक जवान पुरुष का है जिसके पहचान पत्र का प्रयोग बंगलोर विस्फोट के लिए सिम कार्ड खरीदने हेतु किया गया था। उसके विषय में विस्तृत जानकारी परिशिष्ट । में उसकी माँ के द्वारा दिए गये साक्षात्कार तथा परिशिष्ट ।। में जन्मभूमि समाचार पत्र में प्रकाशित लेख "टू वीक्स टू बैग द प्रे" "Two weeks to bag the prey" में मिलता है।

प्रनेश पिल्लई के मामले में यह जानकारी है कि उसने 1995 में साजिदा के साथ विवाह करने हेतु इस्लाम स्वीकार किया था। उसे मुसलमानों के साथ किए जा रहे अत्याचार के प्रचार के माध्यम से विद्रोही बनाया गया। वह नामी अपराधी था। केवल 1997 में उसके विरुद्ध दंगे के चार मामले दर्ज किए गये थे। यह मामला लव जिहाद का एक अच्छा उदाहरण है जिसके अन्तर्गत महिला ने उसे आतंकवाद के लिए शिकार बनाया।

अन्य कारणों से भी प्रणेश पिल्लई का मामला दिलचस्प है: उसी कार में



मुम्बई की छात्रा इशरतजहाँ का भी उपस्थित होना। राष्ट्रीय स्तर के अंग्रेजी मीडिया ने उसे कॉलेज की भोली-भाली छात्रा के रूप में प्रस्तुत कर यह आरोप लगाया था कि गुजरात की अति उत्साही पुलिस ने उसे उड़ा दिया। परन्तु वे कई रहस्यमय बिन्दुओं को स्पष्ट नहीं कर सके जैसे कोई भी मुस्लिम लड़की किसी पुरुष, जो उसका निकट सम्बन्धी न हो, के साथ मेलजोल नहीं रख सकती। एक कुआंरी लड़की इशरतजहाँ अहमदाबाद में दो पाकिस्तानी नागरिक और प्रनेश पिल्लई उर्फ जावेद, जो उसका सम्बन्धी नहीं था, के साथ क्या कर रही थी?

लश्करे ताइबा का मुखपत्र गजवा टाइम्स ने जुलाई 2004 में यह क्यों छापा था कि इशरतजहाँ एक शहीद थी और लश्करे ताइबा की कार्यकत्री थी। टाइम्स ऑफ इंडिया[10] की रिर्पोटिंग के अनुसार यह शिकायत की गई थी कि इशरत की प्रतिष्ठा का उल्लंघन हुआ क्योंकि भारतीय पुलिस के द्वारा लश्करे ताइबा की कार्यकत्री इशरतजहाँ का पर्दा हटाया गया तथा उसकी पार्थिव देह को जमीन पर अन्य मुजाहिदिनों के साथ यानि मर्दों की लाशों के साथ रखा गया।

रिपोर्ट में आगे कहा गया कि - "इशरत अपने पति के साथ कार की अगली सीट पर बैठी थी।" यदि वास्तव में वह प्रनेश उर्फ जावेद की दूसरी बीबी थी तो क्यों नहीं उसके विवाह का कोई जिक्र किया गया है? क्या इशरत उसके साथ केवल पाप में सहभागी थी। इस्लाम में विवाहेत्तर सम्बन्ध गम्भीर अपराध माना जाता है जिसकी सजा मुकर्रर है कि पत्थर मार-मार कर मार दिया जाए।

प्रनेश और इशरत ने पति-पत्नि के रूप में यात्रा की थी। खोजी पत्रकार प्रवीन स्वामी ने लिखा था[11] कि प्रनेश और इशरत मई 2004 में अब्दुल रहीम तथा इशरत आइसा के नाम से लखनऊ के मेजबान होटल में कमरा संख्या 204 में एक साथ रहे थे। उन्होंने स्थानीय माफियाओं से हथियार खरीदने की कोशिश की थी। उन्होंने 12 जून 2004 को सूरत के बाहर बारडोली के तुलसी गेस्ट हाउस में कमरा लिया था। स्पष्टत: प्रनेश उर्फ जावेद का इशरतजहाँ के साथ नजदीकी सम्बन्ध था यद्यपि उसका विवाह साजिदा शेख के साथ भी हुआ था।

---

10. *द टाइम्स ऑफ इंडिया, 14 जुलाई 2004 'लश्कर ने इशरत को अपनाया'। (Lashkar owns up Ishrat)*
11. *द हिन्दू 13 अक्टूबर 2009- 'जावेद शेख की मौत की यात्रा' (Javed Sheikh's journey to death)*

इस रिपोर्ट में महत्वपूर्ण बात है मतान्तरण के बाद प्रनेश उर्फ जावेद की जिन्दगी। प्रवीन स्वामी के अनुसार उसे एक व्यवसायिक विवाद के उग्र रूप धारण करने के कारण मुम्बई छोड़ कर पूणे जाना पड़ा था। 2003 में वह जाली आई.टी. आई. प्रमाणपत्र के आधार पर नौकरी हेतु दुबई गया। वह प्रणेश कुमार एम. गोपीनाथ पिल्लई के नाम पर जारी पासपोर्ट पर ओमन के लिए गया। यह सरासर गैर कानूनी था क्योंकि उसके पास 1994 में जारी मोहम्मद जावेद गुलाम शेख के नाम दूसरा पासपोर्ट भी था। प्रनेश ने मस्कट से अप्रैल 2004 में मुम्बई के लिए उड़ान भरी। साजिदा के अनुसार उसके पास 2.5 लाख नकदी थी जिससे उसने टाटा इन्डिका कार खरीदी और उसी कार में उसे बाद में गोली मारी गई।

अत: यह स्पष्ट है कि मध्य पूर्व के प्रशिक्षकों के साथ सम्बन्धों के चलते प्रनेश उर्फ जावेद एक कठोर इस्लामिक आतंकवादी बन गया था। मतान्तरित पुरुष से लव जिहाद की जो अपेक्षाएँ रहती है उसके अनुरूप वह बिल्कुल खरा उतरा।

वर्गीज जोसेफ के विषय में बहुत जानकारी उपलब्ध नहीं है परन्तु उसकी भी हालत उसी तरह की हो सकती है जैसे काले मुसलमानों के द्वारा अमरीका की जेलों के खूंखार अपराधियों को भर्ती करना। क्या जिहादीनी भी इसमें शामिल होती थी यह पता नहीं। तो भी एक गैर मुसलमान को मतान्तरित किया जाता है और मानसिक प्रक्षालन करके आतंकवादी बना दिया जाता है।

एर्नाकुलम के निकट एक नौजवान पुरुष के मामले में यह स्पष्ट हुआ कि उसे मोहिनी जाल में फंसाया - एक लड़की या लड़कियों से सेक्स के माध्यम से उसे आतंकी समूह में आकर्षित किया गया।

इस प्रकार नौजवान व्यक्ति को साधरणत: इस्लाम की ओर और विशेषकर मुस्लिम आतंकवाद या कठमुल्लापन की ओर प्रवृत करने के लिए अनेक प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है।

जाहिर तौर पर उनका विचार राष्ट्र को अस्थिर करने हेतु अधिकाधिक तोप - चारा-पानी निर्माण करना है क्योंकि ये मतान्तरित हैं, सम्पूर्ण कार्रवाई के पीछे उनकी मृत्यु का उनके प्रबन्धकर्ताओं या मध्यपूर्व देश के वित्त पोषकों प्रबन्धकों और पाकिस्तानी संगठनों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।



## मुस्लिम नवयुवक इन गतिविधियों को क्यों चलाते हैं? एक विश्लेषण-

केरल में विगत चार महीनों में 212 बड़े या छोटे मन्दिरों पर आक्रमण किये गये, उनकी हुण्डीयाँ लूटी गई और कीमती सामान ले गये। इसमें कालड़ी के आदि शंकराचार्य का मन्दिर भी शामिल है जहाँ बेशकीमती हीरे का शिवलिंग तथा करोड़ों के आभूषण लूटे गये। हिन्दू अपने पूजास्थलों को अपवित्र किये जाने के कारण घिरा हुआ अनुभव करते हैं।

वे जनसांख्यिकी दबाव महसूस करते हैं क्योंकि उनकी जनसंख्या स्पष्टत: घटती जा रही है। केरल में हिन्दुओं और ईसाइयों के कम बच्चे हैं। दो सन्तान का मानदंड तेजी से एक सन्तान के मानदंड में बदलता जा रहा है। दूसरी तरफ मुस्लिम अपनी प्रजनन शक्ति को बढ़ाने में लगे हैं। प्रत्येक के औसतन तीन चार बच्चे होते हैं।

**इनके पीछे कारण हैं -**

1. **धर्म का प्रचार** - संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को कुछ निषेधों के साथ अपने धर्म के प्रचार का अधिकार है। फिर भी मतान्तरण दबाव में या बलपूर्वक गैर कानूनी है। परिशिष्ट-I में वर्णित हिन्दू लड़कियों के साथ हुए साक्षात्कार में उनके द्वारा बताई गयी कहानी से यह ज्ञात होता है कि जवान औरतें अक्सर बड़े-बड़े तर्कों के आधार पर इस्लाम में मतान्तरित होने के लिए सहमत हो जाती हैं। दुर्भाग्य से विद्यालयों में न तो वक्तृत्व कला तर्क विद्या सिखायी जाती है और न धर्म पढ़ाया जाता है इसलिए ये नवयुवतियाँ सुसंस्कृत (तारकिक) और यहाँ तक कि अतारकिक प्रचार का आसानी से शिकार हो जाती है। मात्र इन्टरनेट पर एक सरसरी नजर डालने से यह ज्ञात होगा कि पूर्व मुस्लिमों द्वारा स्थापित बहुत से साइट पर वे अपने धर्म को छोड़ने के कारणों को बताते हैं। अक्सर बताये गये कारण भयंकर होते हैं और स्पष्टत: इस्लाम में महिलाओं के ऊपर होने वाले अत्याचार से सम्बन्धित होते हैं जिसमें उनके यौन सुख को कम करने हेतु गुप्तांग के कुछ भाग को काटना भी शामिल होता है। फिर भी ये लड़कियाँ इस प्रकार की घटनाओं को ढूंढ नहीं पाती है, इस प्रचार का जवाब नहीं दे पाती है कि इस्लाम पूर्ण रूप से उदार धर्म है।

ब्राह्मण लड़की का मतान्तरण अधिक मूल्यवान समझा जाता है। जिहादी रोमियो जिस हिन्दू लड़की को फंसाता है, उस लड़की की जाति के आधार पर उसको नगद राशि पुरस्कार दिया जाता है।

ब्राह्मण : 1,00,000 नय्यर : 75 हजार
एजावा : 50,000 हजार निम्न जाति : 30,000 हजार

मानव जीवन के मूल्यों में अन्तर सउदी अरब में "खून की कीमत" की याद को ताजा करता है।

2. **जनसांख्यिकी युद्ध** - लेबनान का मामला सर्वाधिक शिक्षाप्रद है। कुछ पचास वर्ष पूर्व वह देश ईसाई बहुल था और बड़ी संख्या में मुस्लिम तथा कम संख्या में दुजी समुदाय के अल्पसंख्यक थे। ईसाईयों से ज्यादा जन्म दर के कारण 1990 में मुसलमान बहुसंख्यक हो गये। इसके बाद लगभग एक दशक तक गृह युद्ध चला। लेबनान विशेष कर बेरूत जो मध्य पूर्व का सबसे आकर्षक हिस्सा था इस युद्ध के कारण ध्वस्त हो गया और देश के टुकड़े हो गये। केरल में मुस्लिम जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। अब यह लगभग राज्य भर में 30 प्रतिशत है और जिस क्षेत्र में वे बहुसंख्या मे है वहाँ कश्मीर की तरह की रणनीति का क्रियान्वयन सम्भावित है क्योंकि हिन्दुओं के समक्ष विकल्प केवल है मतान्तरण, पलायन या मौत। मालाबार के कुछ भाग ऐसे हैं जहाँ हिन्दू मन्दिरों का अस्तित्व सम्भव नहीं है।

3. **मनोवैज्ञानिक युद्ध** - प्रारम्भ काल से ही मध्य पूर्वी विचारधारा के अन्तर्गत दूसरों के धार्मिक स्थलों का विनाश या अपने कब्जे में लेने की परम्परा रही है। इसके पीछे साधारण उद्देश्य केवल यह दिखाना है कि उनका भगवान विजीत लोगों के भगवान से अधिक शक्तिशाली है। हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्ति को मुस्लिम मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे दबाने के पीछे यह सिद्धान्त है कि लोगों के मस्तिष्क में यह बैठाना कि उनके श्रद्धा केन्द्रों को विजेताओं द्वारा रौंदा गया है। विजेता द्वारा विजीत समाज की महिलाओं का अपहरण या बलात्कार का सामर्थ्य बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक हथियार[12] है जो लोग अपने

12. *यही तरीका पाकिस्तान और बांग्लादेश में सदैव अपनाया जाता है। जहाँ अपहरण, जबरन मतान्तरण, हिन्दू लड़की की जबरन शादी सार्वजनिक है। मानवाधिकार का हनन वहाँ कोई मुद्दा नहीं है।*



समाज की महिलाओं की इज्जत की रक्षा नहीं कर सकते हैं उन्हें रहने का कोई अधिकार नहीं है, वे अन्ततः नपुंसक हैं इसके विपरीत जो लूटनेवाला है वह पौरुषवान है।

4. **यौन दासता** - वह औरत जो किसी भी गैर कुदरती सैक्स को हिंसा या बदनामी के डर से न नहीं कह सके जिहादी के लिए अधिक आकर्षण की चीज होती है। इनमें से अधिकांश पुरुषों का कैरियर अशिक्षित या निम्न वर्ग के होने के कारण साधारण होता है। उसके लिए उच्च वर्ग की पढ़ी-लिखी, काफिर लड़की के उपर यौन वर्चस्व बनाने योग्य होना अपने आप में एक पुरस्कार है। केवल वही नहीं उसके सारे मित्र लड़की के साथ बिना डर या अनिष्ट परिणाम के भय के ऐश/मौज करते हैं। वह यौन दासी होती है जो अत्यन्त क्रूर यौन उत्पीड़न के लिए प्रस्तुत रहती है। बलात्कार अकसर सेक्स के लिए नहीं, शक्ति प्रदर्शन के लिए होता है। इन जिहादी रोमियो के लिए यह मानसिक अनुभूति होती है कि वे इन जवान महिलाओं को मोहित, प्रभावित करने और अपनी इच्छा पर नचाने में सक्षम हैं।

5. **आर्थिक और सामाजिक लाभ** - जिहादी रोमियो को निश्चित तौर पर आर्थिक लाभ होता है। फैन्सी कार, मोटर बाइक और मोबाइल फोन के अतिरिक्त उसे दैनिक भत्ते के रूप में (लड़कियों पर खर्च करने के लिए) कुछ सौ रुपये एवं मनोरंजन खर्च मिलता है। एक बार वह अपने शिकार को फँसाने में सफल हो जाता है तो उसे एक बड़ी राशि और मिलती है और पुनः वह इस चक्र को जितनी बार चाहे दोहराने के लिए स्वतन्त्र है। इसके अतिरिक्त वह समाज में हीरो माना जाता है क्योंकि वह लड़कियों को फंसाने में समर्थ होता है जिन्हें अपने दोस्तों के साथ सहभाग करता है। मस्जिद में वह वास्तविक सितारा होता है, नौजवानों के द्वारा प्रशंसा की दृष्टि से देखा जाता है, बुजुर्गों द्वारा शाबासी मिलती है जो उसे आश्वस्त करते हैं कि वह सच्चा मुसलमान है।

इन सब कारणों से सामान्य मुस्लिम व्यक्ति 'लव जिहाद' के लिए उत्साहित रहता है। उसे खोने के लिए कुछ नहीं, सब कुछ पाना ही पाना है। उसके लिए अन्त तक जीत ही जीत की परिस्थिति रहती है। जिन औरतों को वह बर्बाद करता है उनके जीवन के बारे में कभी नहीं सोचता हैं। वास्तव में ये युवक लव जिहाद की

रणनीति की योजना बनाने वाले के लिए सिर्फ स्वाभाविक चारा होते हैं, उनका केवल उपयोग होता, बहुत से और युवा उनके पदचिन्हों पर चलने को तैयार बैठे हैं।

ये योजनाकार या योजक ही वास्तविक अपराधी हैं जो मात्र एक ही विचार से प्रभावित होते हैं। यह विचार है इस्लामिक सत्ता दारुल इस्लाम और सम्पूर्ण विश्व को इस्लाम के अधीन करने का। यह अक्षरश: युद्ध है, जिहाद है। उनकी मानसिकता का परिचय एक मुल्ला के इस उद्धरण से मिलता है-

''हम ही लोग ऐसे हैं जो तुम्हें बदल देंगे'' यह 2006 के ओसलो समाचार पत्र Dagbladet को नोर्वे के इमाम मुल्ला क्रेकर ने कहा था। युरोप के भीतर इनके विकास पर नजर डालने से पता चलता है मुसलमानों की संख्या मच्छरों की तरह बढ़ रही है। प्रत्येक पश्चिमी महिला यूरोप में औसतन 1.4 बच्चे को जन्म देती हैं जबकि प्रत्येक मुस्लिम महिला उसी देश में 3.5 बच्चे को जन्म देती है।उसने निष्कर्ष रूप में कहा – ''हमारा सोचने का तरीका तुम से अधिक शक्तिशाली साबित होगा।''

न्यूयार्क टाइम्स में डेविड रोहड़े[13], जिसने सात महीने तक पाकिस्तान में तालिबानियों के बन्धक के रूप में जीवन व्यतीत किया है, अफसोस के साथ लिखा है – "इस क्षेत्र में सात साल तक रिर्पोटिंग करने के बावजूद मैं पूर्णत: तह तक नहीं पहुंच पाया कि तालिबान किस स्तर तक अतिवाद में डूब चुके हैं। वे मुस्लिम जगत में अल्प समय में अलकायदा के साथ मिलकर इस्लामिक सत्ता स्थापित करना चाहते हैं'' वे कट्टरवादी इस्लामिक सत्ता चाहते हैं जिसका पूरी दुनिया में विस्तार हो। भारतवर्ष एक शत्रु मात्र है जिस पर जितनी जल्दी हो विजय प्राप्त की जा सके और इस तरह सन् 712 में अरबों द्वारा सिन्ध पर शुरू किये गये आक्रमण के लक्ष्य को पूरा किया जाये।

## ● महिलाएँ आसान शिकार क्यों? एक विशलेषण –

1. **निश्छलता एवं अनभिज्ञता** – केरल में जवान हिन्दू (कुछ मात्रा में ईसाई भी) लड़कियाँ संरक्षित और सुरक्षित वातावरण में पलती हैं क्योंकि उनके

13. *न्यूयार्क टाइम्स, 18 अक्टूबर 2009 "7 months 10 days in captivity" Part 1 of 7 Part series " Held by the Taliban".*



साथ चौकसी के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार होता है। उन्हें मीडिया के द्वारा प्रसारित मोटामोटी जानकारी के अतिरिक्त इस्लाम के विषय में कोई जानकारी नहीं होती है। फिलस्तीन तथा कश्मीर में कैसे मुसलमानों का शोषण किया गया है, मीडिया के द्वारा प्रचारित ऐसे समाचारों का पता सा होता है। चूँकि वे (लड़कियां) अपने लिए अचार संहिता की खोज सी कर रही होती हैं, वे मुसलमानों के मुद्दों के प्रति आकर्षित हो सकती हैं जिन्हें वे शोषित या पीड़ित समझने लगती है। उनमें से अधिकांश को हिन्दुत्व के विषय में कोई जानकारी नहीं होती है परन्तु सकारात्मक मीडिया के कारण इस्लाम और ईसाइयत की छवि से प्रभावित हो जाती हैं। इसलिए वे उस प्यार से प्रभावित होती हैं जो इस्लाम की बुराइयों पर कलफ चढ़ा कर अच्छाइयों पर जोर डालता है। अक्सर इस्लाम में महिलाओं के अति निम्न स्थान या स्टेटस की वास्तविकता पर मीठी चासनी चढ़ी होती है कि वे सुरक्षित रखी जाती है। (परिशिष्ट III पर सिख ब्रिटिश भारतीय लड़की के साथ साक्षात्कार देखें)

2. **किशोरावस्था का विद्रोह** – यह सुविदित वैद्यकीय तथ्य है कि 14 से 19 वर्ष की आयु वालों में जब जवानी फूटती है और यौनिक तथा दूसरे हार्मोन उग्र होते हैं तो अधिकांश किशोर व किशोरियाँ उन सभी चीजों से घृणा करते हैं जो उनके मार्ग में अवरोध बनकर खड़े होते हैं, प्रमुखत: उनके माता-पिता। वे ऐसे व्यवहार में लिप्त हो जाते हैं जो सामान्यत: विनाशकारी होता है क्योंकि वे अपने व्यक्तित्व को स्थापित करने को जूझ रहे होते हैं। लड़कियों में यह इस रूप में प्रकट होता है कि वह सर्वाधिक अनुपयुक्त लड़कों के प्रति आकर्षित होती हैं विशेषकर वे उन लड़कों के प्रति जो अपने पिता को पागल बना दे। साम्यवादी विचारों के बावजूद लगता है कि अधिकांश हिन्दू पिता अपनी लड़की की शादी गैर हिन्दू से करना पसन्द नहीं करते। इसलिए लड़की वास्तव में यदि अपने पिता को नाराज करना चाहती है तो सबसे अच्छा तरीका होगा गैर हिन्दू लड़के को अपना मित्र बना ले विशेषकर वह जो उनसे निम्न वर्ग का हो जैसे कसाई या आटो रिक्शा ड्राइवर। शर्तिया उसके पिता के क्रोध की कोई सीमा नहीं रहेगी। वह केवल परेशान करना चाहती है और अन्त में वह उपयुक्त लड़के के साथ ही विवाह करना चाहती है परन्तु जब तक वह समझती है तब तक वह फँसा ली जाती है।

3. **लैंगिक परीक्षण** - किशोरावस्था में यह सामान्य बात है कि सेक्स के प्रति उत्सुकता रहती है और प्रयोग करने की इच्छा रहती है। जिहादी रोमियो धीर-धीरे लड़की के साथ बातचीत में सेक्सी संकेतों से उसे परिचित कराता है। यदि लड़की अरुचि दिखाती है या सक्रिय रूप से सेक्स सम्बन्धी बातचीत का विरोध करती है वह उसे वासनात्मक प्यार के अद्‌भुत झूठे किस्से कहानियों में व्यस्त रखता है। विशेषकर वह उसे यह समझाने में सफल हो जाता है कि वह उसके प्यार में पागल है और उससे शादी करना चाहता है। वह सोचती है यह बहुत सामान्य बात है यदि व्यक्ति प्यार में हाथ पकड़े, सीने से लगाये, चुम्मा ले आदि। वह उसे इन्टरनेट पर अश्लील चित्र दिखा सकता है। अदृश्य रूप से एक ऐसी स्थिति बनती है जब लड़की अधिकाधिक साहसिक कृत्य के लिए अपने को प्रस्तुत करने हेतु तैयार हो जाती है। अन्त में सम्भोग तक बात पहुँच जाती है और स्पष्ट स्थिति यह बनती है, जिहादियों के मोबाइल फोन के कैमरे पर लड़की की इच्छा से या बगैर इच्छा के उस दृश्य का चित्रांकन कर लिया जाये।

4. **दक्ष मनोवैज्ञानिक युद्ध के माध्यम से शोषण - "डेढ़ वर्ष के बाद वह मेरे पटने की सम्भावना को जानता था।"** हिन्दू लड़की का साक्षात्कार (परिशिष्ट ।) लिया गया जिसमें उसने बताया कि जिहादी रोमियो अठारह महीने तक पीछा करते हुए मेरे पटने की सम्भावना को जान गया था। युवा महिला द्वारा सीढ़ी दर सीढ़ी सहमति में बढ़ोतरी स्पष्ट रूप से महिलाओं के फँसने की सम्भावना मनौवैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित होती है। साफ तौर पर जिसे महिलाओं के मनोविज्ञान का अच्छा अनुभव होता है वही जिहादी रोमियो को प्रशिक्षित करता है। यह उल्लेखनीय है कि वह एक साथ सफलता के विभिन्न मानदंड के साथ उसके साथ (लड़की के साथ) एक ही कमरे में रहने वाली अन्य तीन लड़कियों को भी फँसाने का प्रयास कर रहा था। एक तरफ इस्लाम में महिलाओं के साथ व्यवहार की विशिष्टता और साथ ही इस्लाम की विशिष्टता का महिलाओं के सामने ढिंढोरा पीटा जाता है, संरक्षित (प्रोटैक्टेड) मुस्लिम महिलाओं की तुलना छुट्टा पश्चिमी और भारतीय महिलाओं से की जाती है। महिलाओं के सहयोग से इनको विश्वास दिलाया जाता है कि पश्चिमी जगत के मीडिया के आरोप के बावजूद मुस्लिम समाज में, हिन्दू और पाश्चात्य समाज की तुलना में, महिलाओं के



साथ बेहतर व्यवहार होता है। साथ ही हिन्दुत्व पर लड़की के विश्वास को इस्लाम के बड़प्पन के खोखले तर्कों से चोट पहुँचायी जाती है। उपरोक्त हिन्दू लड़की अपनी डायरी में वृतान्त लिखती रहती थी कि कैसे साईबाबा की ठोस विश्वासी होते हुए धीरे-धीरे मुस्लिम में परिवर्तित हो गयी।

5. **वादों में वृद्धि** - युवा महिलाओं के मनोविज्ञान को समझकर जिहादी रोमियो निष्पाप रूप से वैध सहायता और छोटी-मोटी मेहरबानी करना शुरू करता है। एक बार लड़की का विश्वास प्राप्त हो जाता है, तो वह कॉफी पीने आदि के लिए बाहर चलने के लिए आमंत्रित करता है। इसके पश्चात् अधिक अंतरंग क्रिया कलाप जैसे भ्रमण पर जाना और एक ही कमरे में रहना आदि शुरू होता है। प्रत्येक चरण में महिला बिना महसूस किए दो काम करती है - अपने वायदों में वृद्धि करना विशेषकर अपने मस्तिष्क में पुरुष के प्रति और दूसरा अपने परिवार से स्वयं दूरी बढ़ाती जाना क्योंकि वह जानती है कि परिवार वाले जेहादी रोमियो के साथ निकटता स्वीकार नहीं करेंगे और इन सभी गतिविधियों के लिए मना करेंगे। जैसे मेंढक को गर्म जल में डाला जाता है और धीरे-धीरे जल की गर्मी बढ़ाई जाती है वह कठिनाई तो अनुभव करता है परन्तु सहन करता रहता है और जब अन्ततः जल खौलने लगता है तो मेंढ़क जिन्दा उबल जाता है परन्तु पहले परिस्थिति की गम्भीरता को नहीं समझ पाता और न जल से निकल कर भागने का प्रयास करता है। वैसे ही जब तक महिला यह समझ पाती है, उसे क्या चोट पहुँची है, वह आपत्तिजनक फोटोग्राफ से ब्लैकमेल की जाती है या मतान्तरण कर लेती है या मुसलमान से विवाह कर लेती है और अपने वायदों से मुकरने में कठिनाई का अनुभव करती है। यदि वह जिस राह पर आगे बढ़ चुकी होती है उससे पीछे लौटने का प्रयास करती है तो उसके या उसके परिवार के साथ मारपीट या हिंसा की धमकी दी जाती है।

6. **भयाक्रान्त करना** - आगे चलकर लड़की महसूस करती है कि उसे झुकाने के लिए भय दिखाया जा रहा है, शारीरिक हिंसा की धमकी निश्चित है। सम्भवतः उसे या उसके माता-पिता को जान से मारने की भी धमकी मिलती है यदि वह मतान्तरण स्वीकार नहीं करती है। परिशिष्ट ।।। में ब्रिटिश-भारतीय लड़का के सम्बन्ध में छपी रिपोर्ट में संकेत है कि पुरुष मित्र लड़की को डाँटना शुरु करता है यदि वह उसे सहयोग नहीं करती है तो मारपीट भी करता

है। उसके अश्लील चित्र को सार्वजनिक कर दिया जाएगा इस धमकी के कारण लड़की गुलाम बन जाती है। उसे कोई दूसरा मार्ग नहीं मिलता है।

7. **पीड़ितों में अपराध भाव** – कुछ मामले में लड़कियाँ महसूस करती है कि वह छली गयी हैं वे अपने को दोषी मानती हैं परन्तु यह नहीं समझ पाती कि वह संगठित अपराध का शिकार बनी हैं। वह यह अनुभव करती हैं कि उसने स्वयं इस हालत का निर्माण किया है और वह इसी के लायक है। आगे परिवार को और दु:ख हो इससे पहले वह अपने परिवार को छोड़ना चाहती है। शिकार लड़की यह सोच सकती है कि 'उसका अपना जीवन बर्बाद हो गया परन्तु उसे यह प्रयत्न करना चाहिए कि अन्य लड़कियां इससे बच सकें।' इस कारण वह आत्महत्या का विचार कर सकती है।

8. **सामाजिक कलंक और शर्मशारी** – आश्चर्यजनक ढंग से सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रतिष्ठा का विषय केन्द्र में रहता है। अक्सर यह जुमला पीड़ित और उनके परिवारजनों के द्वारा बोला जाता है। केरल के हिन्दुओं में लज्जा की संस्कृति दिखाई पड़ती है। इसका उदाहरण केरल के ब्राह्मण नम्बदूरीयों में जाति से निष्कासन की पुरानी प्रथा है जिसमें भटकी हुई महिलाओं को परिवार से निकाल दिया जाता है और उनके लिए मृत्यु की पूरी रस्म (जिन्दा रहते ही) पूरी कर दी जाती है। अत: जब लड़की भाग जाती है या इस्लाम मत स्वीकार कर लेती है तो अकल्पनीय क्रोध और दु:ख होता है। यह सामाजिक कलंक इतना शक्तिशाली होता है कि परिवार के बाकी सदस्य लड़की का नाम भी कभी सुनना नहीं चाहते। यह बहुत आसान बहाना होता है कि वह मर गई। यह नहीं सोचते हैं कि वह किसी भयानक परिस्थिति में फंसी हो सकती है। अत: अभिमान दुर्भिमान बन जाता है – एक दरकता मिथ्या अहंकार। यह उसी तरह से है जैसे अपवित्र मन्दिर को बहिष्कार करने की प्रथा। उसी प्रकार भ्रष्ट और अपवित्र महिलाओं को भी निषिध माना जाता है। इस बात को जिहादी लुटेरे तथा उसके शिकार दोनों जानते हैं। अनेक समस्याओं के पृष्ठ में यही कारण है:-

- **जैसा** कि टेबुल क्र. 1 पर दर्शाया गया है बहुत थोड़े मामले पुलिस में दर्ज कराये जाते हैं यद्यपि भगाने वाला कौन है सबको पता होता है। शायद ही कोई हेबीअस कारपस (लड़की को कोर्ट में पेश करने का)



प्रार्थना पत्र उच्च न्यायालय में दाखिल किया जाता है।

- बहुत थोड़ी लड़कियाँ महसूस करती हैं कि वे सहानुभूति प्राप्त करेंगी और उन्हें घर से भागने के बावजूद पुन: घर में स्वागत किया जाएगा। नि:संदेह इस कारण से उनकी निर्भरता भगाने वाले या बन्धक बना कर रखने वाले पर अधिक बढ़ जाती है।

- जिहादी रोमियो बहिष्कार के भय को हथियार के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

9. **योग्य परामर्श, पुनर्वास, सुरक्षित आवास, गवाहों की सुरक्षा प्रबन्ध का अभाव** – हिन्दुओं के द्वारा छिपाया जाता है कि इस प्रकार के अपराध उनके समाज पर किया जा रहा है। इसलिए बहुत कम तंत्र हैं जिनके द्वारा जो लड़कियाँ फिसलन की राह पर हैं या जिनका अपहण सम्भव है, उसे रोका जा सके या जो लड़की अपहरणकर्ता के चंगुल से छूट कर भागने में सफल हो जाती है उसका पुनर्वास किया जा सके। अंशत: केरल में संगठित हिन्दू समागम या संस्था के अभाव में लड़कियों के लिए किसी तटस्थ और शुभेच्छु परामर्शदाता, प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक से बातचीत करने की सुविधा उपलब्ध नहीं होती है जो उसे उसकी परिस्थितिनुसार ठोस दृष्टि दे सके। परामर्श के अतिरिक्त इस प्रकार की संस्थाओं की आवश्यकता है जो महिलाओं को प्रताड़ित करने वाले पति से दूर रहने में सहयोग करे जैसा कि अमेरिका में है।

- **सुरक्षित घर** – लव जिहाद से भागने वाली का हमेशा यह कहना होता है कि उसको बन्धक बनाने वाला धमकी देता है कि यदि वह अपने मूल धर्म में वापस जाती है, उसके राज खोलती है या न्यायालय में उसके विरुद्ध गवाही देती है तो उसका भयंकर परिणाम उसको भुगतना पड़ेगा।अत: ऐसे सुरक्षित घरों की आवश्यकता है जहाँ चुंगल से निकलकर आई हुई लड़कियाँ सुरक्षित रह सके।

- **पहचान में परिवर्तन** – अमेरिका में साक्षियों को सुरक्षा प्रदान की जाती है जो संगठित अपराध के विरुद्ध न्यायालय में साक्ष्य देते हैं। उन्हें नई पहचान और पत्र दिया जाता है और देश के विभिन्न हिस्सों में भेज दिया जाता है। जहाँ

तक सम्भव है पीड़ितों को मेट्रो शहर में भेजना (सेटल करना) ठीक रहता है, इसके लिए नई पहचान और नया इतिहास निर्माण किया जायेताकि वे डरावनी परिस्थिति से बाहर निकल सकें और पुन: सामान्य जीवन जी सकने का प्रयास कर सकें।

10. **दवाईयाँ** - यह लगभग निश्चित है कि जिहादी रोमियो के उद्देश्य को साकार करने के लिए मानसिक परिवर्तनकारी औषधियाँ प्रयोग में लायी जाती है। मदिरा आदि 'न' कहने की शक्ति को क्षीण करती हैं तथा छोटी सी खुराक लेने मात्र से ही महिलाओं की मर्यादायें टूटने लगती हैं। चूँकि ये दवाइयाँ अधिक से अधिक 72 घंटे के भीतर शरीर में विलीन हो जाती हैं। अत: यदि उपर्युक्त जांच के लिए प्रयोगशाला स्थापित भी की जाये तो पकड़ना कठिन हो जाता है। मदिरा और दूसरी दवाइयाँ अमेरिका में अधिकांशत: बलात्कार के समय दी जाती हैं। ऐसा लगता है जब जिहादी रोमियो अपना शिकार ढूंढता है तो पेय पदार्थ में मिला कर इन दवाओं को दिया जाता है। यह जिहादी रोमियो के लिए सामान्य बात है कि अपने शिकार को उस स्थान पर ले जाना जहाँ मदिरा पान कराया जा सके और दूसरी दवाइयों का सेवन कराया जा सके। उनके चंगुल से छूट कर भागने वालियों ने यह साक्ष्य दिया है कि उन्हें दवाइयाँ दी गई, तत्पश्चात् बलात्कार किया गया और उस कृत्य की विडियो फोटोग्राफी की गई।

## • विश्लेषण : शिकार कौन बनती हैं

आंकड़े दर्शाते हैं कि कोई भी महिला निशाना बन सकती है और उत्पीड़ित की जा सकती है। जहाँ तक जेहादी - ''आशिक'' का सम्बन्ध है उसके लिये कोई भी गैर-मुस्लिम लड़की या जवान महिला एक शिकार है जिसको वह एक कसाई की तरह देखता है जैसे एक भेड़िया किसी बकरी को। घर से दूर होस्टलों में रहने वाली, महिलायें और गरीब मजबूर औरतें जिनमें आत्म विश्वास की कमी होती है और जिन्हें धार्मिक मामलों की कोई शिक्षा नहीं होती, वे इनके जाल में जल्दी फंसती हैं।

जेहादियों के दिल में किसी के लिये कोई लिहाज, इज्जत नहीं कि यह व्यक्ति ऊंचे पद पर है, बहुत विद्वान है अत: इनकी लड़की को शिकार न बनाऊं। केरल



के पुलिस महानिदेशक के एक नजदीकी रिश्तेदार लड़की को जेहादी-आशिक ने सफलतापूर्वक अपनी तरफ आकर्षित किया, उससे इस्लाम कबूल करवाया और शादी रचा ली। एक वरिष्ट कम्यूनिस्ट नेता के बच्चों को निशाना बनाया और भगा कर ले गये। एक हिन्दू कम्युनिस्ट नेता की पत्नी को अपने प्रेम जाल में फंसा कर जेहादी ने उसका वीडियो टेप बना लिया और उसे ब्लैक मेल करते रहे, जेहादी और उसके मित्र महीनों उससे लैंगिक सम्बन्धों का आनन्द उठाते रहे।

अत: कोई भी शिकार बन सकता है। यह रोमांस नहीं, अपराध है।

1. रिपोर्टों में लिखे नामों से पता चलता है कि ज्यादातर शिकार हिन्दू हैं। हिन्दू हेल्पलाइन (0-94953-23905) में कालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अब ज्यादा लोग ऐसी घटनाओं की, जो उनके अपने परिवार में हो रही है या दूसरों के परिवारों में पता चलता है, बता रहे हैं।
2. ज्यातातर शिकार मध्यम वर्ग के हिन्दू हैं। कुछ निम्न एवं उच्च वर्ग के भी हैं। कुछ युवतियों को नौकरी का झांसा देकर या प्रोमोशन का लालच देकर भी फंसाया जा रहा है।
3. हाईस्कूल की छात्रायें, कॉलेज गर्ल्स, इन्जीनियरिंग और नर्सिग की छात्रायें, उन छात्रावासों में रहने वाली छात्रायें या महिलायें हास्टलों में रही रही कामकाजी महिलायें, आई.टी. कम्पनियों में काम करने वाली औरतें, गृहणियाँ जो पड़ोसी के जाल में फंस जाती है, गल्फ (खाड़ी) के देशों में काम करने वालों की भारत में रह रही पत्नियाँ, ये सब सम्भावित शिकार हैं।
4. पेशेवर महिलाएँ जो ओर्कुट एवं फेस बुक नामक सोशल इण्टरनैट में शामिल होती हैं उन्हें जेहादी आशिक मित्र बना लेते हैं और उन्हें इस्लाम कबूल करवाने के प्रयास करते हैं। (उत्तर भारत की एक महिला डाक्टर दो जेहादियों के प्रभाव में आ गई जो IBM बैंगलौर में इन्जीनियर थे और केरल के रहने वाले थे। इस महिला डाक्टर ने अपने पति और बच्चों को छोड़ दिया और मैंगलौर जाकर मुसलमान बन गई जहाँ पति की शिकायत पर पुलिस को मिली)।
5. **गली में कोई मिल जाये :** किन्नूर (केरल) में एक हाईस्कूल की छात्रा एक ऑटो में बैठकर मन्दिर जा रही थी। उसे ऑटो के मुस्लिम ड्राइवर ने अपहरण

कर लिया और ऑटो को तेज रफतार से चला कर मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्रों में ले गया। छात्रा ने बचने के लिये चलते ऑटो से छलांग लगा दी, बुरी तरह घायल हो गई और अन्ततः मर गई।

## विशलेषण - क्या किया जाये कि ऐसी घटनाएँ न घटे?

लव जेहाद को एक बीमारी के तौर पर लेना पड़ेगा। इसलिए इस बीमारी को रोकने के लिए निषेध (रोकथाम) और इलाज दोनों आवश्यक हैं। निषेद्ध और इलाज के लिये अलग-अलग कदम उठाने होंगे।

**निषेध** - इससे पहले कि लव-जेहाद बर्बादी मचा दे, माता पिता और समाज को काफी जिम्मेदारी उठानी होगी और रोग को रोकने हेतु सावधानी बरतनी होगी। इसके अतिरिक्त अपने बच्चों की गतिविधियों पर अधिक ध्यान देना होगा। बच्चों को लव-जेहाद के बारे में बताना होगा। यह माता-पिता का दायित्व बनता है कि वे अपने बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करें, चाहे बच्चों की निजता का हनन ही क्यों न हो -

1. माता-पिता को अपने बच्चों के क्रियाकलापों पर उनके विरोध के बावजूद नज़र रखनी पड़ेगी। मोबाइल को एक खतरनाक साधन मानें। माँ-बाप मोबाइल घर के पुरुष सदस्य को भेज कर चार्ज करवायें न कि बच्चियों द्वारा। यदि बच्ची के मोबाइल पर कोई अनजान कॉल आये तो उसे नोट करें ताकि अगर आवश्यकता पड़े तो पुलिस में शिकायत करते समय उस नम्बर का हवाला दिया जा सके।
2. मां-बाप को अपने बच्चों के व्यवहार में आ रहे परिवर्तन पर ध्यान देना होगा। यदि बच्ची रात भर जाग रही है, यदि उसका मूड बहुत ऊपर नीचे हो रहा है, यदि अचानक उसने सब कुछ करना छोड़ दिया है जिसमें पहले उसकी रुचि थी जैसे मन्दिर जाना, शास्त्रीय संगीत की कक्षा में जाना, परीक्षा में प्राप्तांक अचानक गिर गये हैं, बार बार पैसे मांगते हैं, यदि लड़की ने बिन्दी लगाना छोड़ दिया है, यदि मुस्लिम या ईसाई साहित्य पढ़ना शुरू कर दिया है, तो माँ-बाप को सावधान हो जाना चाहिये। इन परिवर्तनों में कुछ तो स्वाभाविक हो सकते हैं परन्तु यह भी सम्भावना हो सकती है कि कोई उनके बच्चे का ब्रेनवाश कर रहा हो। मां-बाप, विशेषकर मां को यह समझ बढ़ानी होगी



ताकि वह जान सके कि उनके बच्चे के मस्तिष्क में क्या चल रहा है।

3. माता पिता को अपने बच्चों की सभी व्यस्तताओं का पता होना चाहिये और उनके मित्रों के विषय में विस्तृत जानकारी होनी चाहिये। उन्हें बच्चों के मित्रों से एवं मित्रों के माता पिता से भी मिलना चाहिये उन्हें बच्चों के पुरुष मित्र और लड़की मित्र के बारे में भी गहन जानकारी रखनी चाहिये। तसरीन मिल्लत, शाहीन फोर्स आदि नाम के महिला मुस्लिम संगठन हैं जो जेहादी-रोमियों (आशिकों) को सम्भावित गैर-मुस्लिम लड़कियों को चिन्हित करने और प्रलोभित करने में सहयोग करते हैं।
4. मां-बाप विशेषकर मां को अपनी बेटियों के प्रति चौकन्ना रहना चाहिये। मां को अपनी बेटियों के साथ बिना लज्जा के खुलकर लव-जेहाद पर चर्चा करनी चाहिये जैसे वे बच्चों से स्त्री स्वास्थ्य और शारीरिक स्वच्छता विषय पर बात करती हैं।
5. माता-पिता को अपने कैरियर और सामाजिक जीवन को बच्चों के जीवन से अधिक महत्वपूर्ण स्थान नहीं देना चाहिये। चुँकि लव-जेहाद के परिणाम इतने भयानक होते हैं, मां-बाप को बच्चों के जीवन के प्रति सतकर्ता रखनी होगी। यथासम्भव उनके स्कूल कॉलेज में जाया करें और अध्यापकों या अध्यापिकाओं से दोस्ताना सम्बन्ध स्थापित करें। अगर ऐसा होगा तो शिक्षक अपनी छात्राओं के सन्देहास्पद व्यवहार पर ध्यान देंगे और सम्भवतः माता-पिता को सूचित भी करेंगे।
6. माता-पिता, धार्मिक नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को पहल करके बच्चों को धार्मिक शिक्षा ही नहीं बल्कि दोनों धर्मों के विषय में तुलनात्मक जानकारी भी देनी चाहिये। विभिन्न जाति-समूहों को मन्दिर और गीता की कक्षा के अतिरिक्त एकत्रीकरण जैसे कार्यक्रम करने चाहिये जहाँ सद्गुणों और बुरे गुणों पर प्रवचन होने चाहिये। माता-पिता यदि सेकुलर या कम्युनिस्ट भी हों तो भी उन्हें इस बात पर जोर देना चाहिए कि वे स्वयं और बच्चे अवश्य ऐसे कार्यक्रमों में शामिल हों। मातापिता बच्चों को धार्मिक और सांस्कृतिक शिक्षा दें। उन्हें दुनिया के विभिन्न धर्मों के अच्छे और बुरे बिन्दुओं पर बेबाक चर्चा करनी चाहिये विशेषकर हिन्दू और भारतीय सभ्यता के महत्व और उसकी अच्छाइयों को बतायें। अगर जरूरी हो तो वे स्वयं

हिन्दू-सभ्यता के गौरवपूर्ण इतिहास को पढ़ें और ज्ञान प्राप्त करें कि मध्य युगीन काल में हिन्दू सभ्यता ने ही मुस्लिम आक्रमणों को रोका था जबकि दूसरी बड़ी-बड़ी सभ्यतायें, जैसे मिश्र सभ्यता, परशियन सभ्यता (पारसी), और मध्य एशिया की बौध सभ्यता, सब नष्ट हो गई। उनको बच्चों को बताना चाहिये कि क्यों और कैसे हिन्दुत्व बचा रहा जिसका स्पष्ट अर्थ है कि इसमें कुछ न कुछ अमिट अमूल्य तत्व हैं।

7. अगर बच्चे घर से दूर रह कर पढ़ रहे हैं तो माँ-बाप को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई विश्वसनीय स्थानीय अभिभावक उनकी देखभाल के लिए है। यह अभिभावक ऐसा होना चाहिये कि बच्चे किसी संकट के समय उनके पास जा सकें।

8. माँ-बाप को अपने बच्चों के मित्र लड़के और लड़की की जानकारी रखनी चाहिये।

9. माँ-बाप को इण्टरनेट के इस्तेमाल पर भी निगरानी करनी चाहिये। यदि कोई बच्चा बहुत ज्यादा समय इण्टरनेट पर बिता रहा है तो इसे उसके फंसने का सूचक समझना चाहिये। अमेरिका में ऐसी कई घटनायें हुई हैं जिसमें बच्चों से बदमाशी करने वाले व्यस्क अपने को किशोर की तरह प्रस्तुत करते हैं और बच्चों को अपने जाल में फांस लेते हैं उन्हें भगा कर ले जाते हैं। एक बढ़िया तरीका इण्टरनैट के उचित प्रयोग को सुनिश्चित करने हेतु यह हो सकता है कि घर में अन्तरताना कम्प्यूटर को सार्वजनिक स्थान यानि बैठक में रखें ताकि परिवार का कोई भी सदस्य देख सकें कि बच्चा इण्टरनैट से क्या कर रहा है।

10. माँ-बाप बच्चों को मादक द्रव्यों और शराब के प्रभाव के विषय में उचित शिक्षा दें।

11. माँ-बाप और सामाजिक नेताओं को सुनिश्चित करना चाहिये कि चाहे जेहादियों ने लड़की को कितनी भी अपमानजनक स्थिति में क्यों न पहुँचा दिया हो, वे उसके वापिस घर आने पर उसका स्वागत करें। उसने गलती की और उसने इसकी कीमत अदा कर दी अत: कोई कारण नहीं बनता कि उस बच्ची का बहिष्कार किया जाए और उसे महसूस कराया जाये कि वह बहिष्कृत है विशेषकर जब वह इमानदारी से अपनी गलती को समझती है और सामान्य



जीवन में वापस आना चाहती है। युवा लड़कों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये कि वे आगे आयें और उन लड़कियों से शादी करें जिनको जेहादियों ने शिकार बनाया।

12. अगर बच्चा गायब हो जाता है, माँ-बाप को अपनी इज्जत को भूल जाना चाहिये और पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिये। अगर उनको पता हो कि बच्ची को गायब करने वाला कौन हो सकता है तो उन्हें तुरंत हाईकोर्ट में प्रत्यक्षीकरण (हैबीस कारपस) प्रार्थनापत्र दाखिल करना चाहिए, उसमें उस व्यक्ति का नाम उल्लेख करना चाहिए और पुलिस को प्रतिवादी बनाना चाहिए। कानून के अनुसार कोर्ट के लिए अनिवार्य हो जाता है कि वह पुलिस को आदेश दे कि सम्बन्धित व्यक्ति को पेश किया जाये।

**समाज का भी महत्वपूर्ण दायित्व है :-**

13. धार्मिक और सामाजिक नेतृत्व को 'नारी-सदन' या सुरक्षित-गृह की स्थापना करनी चाहिये जहाँ जिहादियों के चंगुल से भाग कर आने वाली महिलाओं, जिन्हें घर में सम्मान नहीं मिलता है, को पुनर्वास किया जा सकें। ये नारी-सदन सुरक्षित होने चाहियें ताकि जेहादी उन महिलाओं को ढूँढ न सकें (अमेरिका के 'प्रताड़ित/शोषित स्त्रियों हेतु शैल्टर' की तर्ज पर हो सकते हैं)। उन्हें विशेषज्ञों को भी आमंत्रित करना चाहिए जो ऐसे बच्चों को मनोवैज्ञानिक परामर्श दे सकें जो जिहादी रोमियों के द्वारा पीछा करने पर अपनी अनुभूति के विषय में भ्रमित रहती है या पीड़ित जो संकट से निकल कर भागने में सफल हो जाती है परन्तु संघर्ष में रहती है सम्भवत: अपने को दोषी मानती है।

14. हिन्दू हैल्पलाइन की तर्ज पर, हर जिले में भी कुछ ऐसी ही व्यवस्था 24x7 के आधार पर स्थापित करनी होगी जिसमें चौबीसों घण्टे वेतनभोगी कर्मचारी नियुक्त किये जाएँ। ये कर्मचारी सहायता करने को सदैव तत्पर रहें - जब किसी परिवार के सदस्य को या पड़ोसी को शंका हो कि लव जिहाद का जाल किसी जवान व्यक्ति को फँसाने के लिए बिछाया जा रहा है या जब कोई परिवार अपने बच्चे के गुम होने पर क्या करे इसको तय करने के लिए सहयोग चाहता हो। जेहाद का शिकार हो चुके व्यक्ति की अपील/प्रार्थना के निस्तारण करने हेतु सम्बन्धित उपयुक्त अधिकारी के पास भेजने में सहयोग करें। यह पता चला है कि हिन्दू हैल्पलाईन प्रतिदिन लव-जेहाद के शिकार

बच्चों/युवा युवतियों के दोस्तों और रिश्तेदारों से 50 कॉल तक प्राप्त कर रहे हैं और इसकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है।

15. मीडिया को सुनिश्चित करना चाहिये कि वह इस समस्या की गम्भीरता से जनता को अवगत करा रही है। अभी तक मलयालम प्रिन्ट मीडिया बड़ी मेहनत और लगन से लव-जेहाद से जुड़ी समस्या/घटना को सबके सामने ला रही है परन्तु अंग्रेजी मीडिया इन करतूतों को उजागर करने से बचती रही। यदि मीडिया जनता को समस्या से रूबरू नहीं कराती है, इसका अर्थ है वह अपने दायित्व को नहीं निभा रही है। दुर्भाग्यवश राष्ट्रीय स्तर के अंग्रेजी मीडिया मुस्लिम विचारधारा को यहाँ तक कि जेहादी/कट्टरपंथी विचारधारा को मदद करते नजर आते हैं अर्थात् वे उन्हीं की लाइन पर चलते हैं यानी लव-जेहाद नाम की कोई चीज़ नहीं हैं।

16. आस पड़ोस में चौकसी रखने की कोई व्यवस्था बनाने की आवश्यकता है ताकि विभिन्न मुहल्लों या कालोनियों के निवासी संगठन को तुरन्त पता चल जाये जब कभी जेहादी-रोमियो उनके समुदाय के तरुण/तरुणियों पर निशाना साध रहे हों। कभी-कभी पड़ोसी आने वाली ऐसी समस्या को जल्दी भाँप लेते हैं जबकि माँ-बाप उन वास्तविकताओं के प्रति आँख मूंद सकते हैं जिन्हें वे देखना नहीं चाहते। पड़ोसियों को अपने समुदाय से अजनबी युवाओं की गतिविधियों पर नजर रखने की जिम्मेवारी उठानी चाहिये और पड़ोस के बच्चों को उचित सलाह देते रहना चाहिये। अगर जरूरी हो तो संदेहास्पद गतिविधियों की रिपोर्ट पुलिस में भी करनी चाहिये। युक्तिपूर्ण संधि भी आज की आवश्यकता हो सकती है। ईसाईयों द्वारा धर्मान्तरण की गतिविधियाँ जिसका शिकार हिन्दू ही होता है, की चिन्ता के बावजूद लव-जेहाद हिन्दू और ईसाई दोनों को शिकार बनाता है (हालांकि यह भी सम्भव है कि लव जेहाद की गतिविधियों को चलवाने वाले अपने जेहादी-आशिकों को ईसाईयों और कम्युनिष्टों से दूर रहने के आदेश दें और मात्र हिन्दू शिकार पर ही केन्द्रित रहने कहें)।

17. हिन्दू, ईसाई और कम्युनिष्टों को संसाधन एकत्रित कर लव-जेहाद नामक बीमारी को दूर भगाने की आवश्यकता है। हिन्दू संगठन और क्रिश्चियन एसोसिएशन फॉर शोसल एक्शन (कैथोलिक संगठन) ने मिलजुल कर सूचनाओं के आदान-प्रदान करने और एक दूसरे के सदस्यों की मदद करने



के प्रयास शुरू किए हैं (13 अक्टूबर 2009 का टाइम्स ऑफ इण्डिया देखें - 'लव जहाद रैकेट : विश्व हिन्दू परिषद् और ईसाई समूह इकट्ठे हुए')

18. कम्युनिष्ट भी अब तथ्यों के प्रति संवेदनशील हो गये हैं क्योंकि दशकों पूर्व से कम्युनिस्टों द्वारा मुस्लिम विषयों पर समर्थन देने के बावजूद लव-जेहाद ने उनके युवा/युवतियों को भी नहीं छोड़ा यह सोचकर भी कि वे कम्युनिस्ट परिवार के बच्चे और बच्चियाँ हैं। चूँकि अधिकांश कम्युनिस्ट भ्रष्ट हिन्दू हैं, पहली बार घोर हिन्दू विरोधी कम्युनिस्ट इस बीमारी से बचने के लिये हिन्दुओं के साथ मिल गये हैं।

## • हैल्प लाइन

**यदि आपके पास सूचना है या सहयोग की आवश्यकता है तो हिन्दू हैल्प लाईन को दूरभाष न0 09495323905 पर फोन करें।**

हिन्दू हैल्प लाइन ने जो अभूतपूर्व कार्य किया है, प्रशंसनीय है। यह संस्था, जो नाममात्र के बजट से चल रही है, सम्भवत: एक मात्र सक्रिय संस्था है जो हताश हो चुके माता-पिता तथा शिकार बन चुकी लड़कियाँ जो अपने सामान्य जीवन में वापिस आना चाहती है, को समर्थन, सहयोग और मार्गदर्शन दे रही है। एक शान्त और निष्पक्ष आवाज से फोन पर बात करने की कीमत का अन्दाज़ा लगाना कठिन है। इस हैल्पलाइन को अतिरिक्त धन और समर्थन से सशक्त बनाना आवश्यक है। प्रारम्भिक सम्पर्क के अतिरिक्त हैल्पलाइन कई प्रकार की अन्य सेवायें उपलब्ध कराने का माध्यम हो सकती है जैसे काउंसलिंग, पुनर्वास, सुरक्षित घर उपलब्ध कराना इत्यादि।

प्रथम चरण में हैल्प लाइन वर्तमान में उस व्यक्ति के लिये जीवन रेखा है जिसे कहीं और से सहायता नहीं मिल पा रही या किसी अन्य तक उसकी पहुंच नहीं है। इस सेवा को और सशक्त करने की जरूरत है ताकि वह 24 घण्टे (24x7) गोपनियता के साथ उपलब्ध रहे। हिन्दू हैल्प लाइन की तुलना आत्महत्या-हाट लाइन, उत्पीड़ित महिला-हॉट लाइन आदि से की जा सकती है जो प्रथम सम्पर्क पर ही आपातकालीन सहयोग प्रदान करती है।

दूसरे स्तर की सेवा के अन्तर्गत डाक्टरों, मनोरोग विशेषज्ञों, समाज सेवियों, धर्म उपदेशकों, जहर उतारने वाले केन्द्रों आदि का नेटवर्क आता है। हैल्पलाइन पर

फोन करने वाले की जरूरत के हिसाब से, उसे तृतीय पक्ष के पास रैफर किया जा सकता है। उद्देश्य है लव-जेहाद में फँसे व्यक्ति की मेडिकल, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जरूरतों को पूरा किया जा सके।

तीसरे स्तर की सहायता के अन्तर्गत कानूनी सेवा, जासूसी सेवा आदि सम्मिलित है जिसके द्वारा विधिक समाधान जैसे हैबीअस कार्पस पीटीशन तैयार करना और दाखिल करना, गैर-कानूनी और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों की सूचना आदि अग्रसारित करना आदि काम किये जा सकते हैं। उद्देश्य है कि व्यक्ति को सरकारी तंत्र तक बिना किसी कठिनाई के पहुँच की व्यवस्था उपलब्ध कराई जा सके।

चौथे स्तर की सहायता के अन्तर्गत व्यक्ति को पुनर्वास, सुरक्षित घर, पहचान-परिवर्तन (जैसे कि गवाहों की सुरक्षा प्रोग्राम में होती है) आदि में सहायता। इसका उद्देश्य है बचकर /भागकर आये हुये समाज में घुलमिल जाये, शिकारी यानि जेहादी के खिलाफ गवाही दे सके और अप्रकट स्थान पर एक नयी पहचान के साथ सामान्य जीवन जी सके। इस स्तर पर सुरक्षा महत्वपूर्ण विषय बन जाता है, जो राज्य की एजेन्सियों के साथ तालमेल द्वारा सम्भव है। चूँकि जेहादियों की तरफ से हिंसक प्रतिक्रिया का ध्यान भी रखना है, अत: उपरोक्त कदम सावधानी से उठाना होगा। हैल्पलाइन तो वास्तव में उन एजेंसियों के पते ही देगी जो उपरोक्त सेवायें वास्तव में उपलब्ध करायेंगी।

इस सन्दर्भ में जर्मनी के एक नाज़ी विरोधी मार्टिन निमोलर के निम्न वाक्य स्मरण योग्य हैं -

पहले वे (नाज़ी) कम्युनिष्टों के लिये आये और मैं चुप रहा/क्योंकि मैं कम्यूनिष्ट नहीं था।

तब वे सोशलिष्टों के लिये आये और मैं नहीं बोला क्योंकि मैं सोशिलिष्ट नहीं था।

तब वे ट्रेड यूनियन वालों के लिये आये और मैं नहीं बोला क्योंकि मैं ट्रेड यूनियन वाला नहीं था।

फिर वे यहूदियों के लिये आये, मैं फिर भी नहीं बोला क्योंकि मैं यहूदी भी नहीं था।

और तब वे मेरे लिये आये और मेरी ओर से बोलने वाला कोई बचा ही नहीं था।



और जैसा जॉन डुन ने अपनी लोकप्रिय कविता में कहा है -

"पूछ मत यह घण्टी किस के लिए बज रही है।
यह तुम्हारे लिये बज रही है।।"

## • निदान

इस समस्या का स्थाई निवारण केवल सरकार, व्यक्ति और संस्थाओं के सम्मिलित प्रयास द्वारा मूल कारणों को पहचान कर उसके समाधान से ही सम्भव है। केरल में बहुत सारे छाया संगठन कार्यरत हैं जिनके सम्बन्ध विश्वव्यापी - जेहाद से हैं। इन संगठनों के पीछे कई शक्तिशाली लोग हैं जिनका पुलिस और राजनैतिक तन्त्र पर बहुत प्रभाव है। अत: जब तक यह गठजोड़ नहीं टूटता, इस समस्या का कोई हल नहीं होगा।

केरल की सब सरकारें मुस्लिमों की असमझौतावादी और अपने को विशेष मानने की मनोवृति को सहन करना जरूरी मानती है। मल्लापुरम नामक जिले का मुस्लिम जनसंख्या के आधार पर गठन बहुत दुर्भाग्यशाली कार्य था। अब इस जिले में किलेनुमा मुस्लिम संस्थायें[14] सरकार को सहन करनी पड़ती है जहाँ भारत के कायदे कानून नहीं चलते। यहाँ पर पुलिस या अन्य प्रशासनिक तन्त्र घुस नहीं सकते। इन स्थानों को, उदाहरण के लिये पोन्नानी सैन्टर जिसमें इतने कमरे हैं कि एक समय में 2500 धर्मान्तरित लोग रह सकते हैं और जहाँ सैकड़ों लोग आने जाने वाले होते हैं, जेहाद की शिक्षा ग्रहण कर चले जाते हैं, इसे कानून और व्यवस्था के दायरे में लाना आवश्यक है। यहाँ एक यतीम खाना है जिसमें एक साथ 600 लड़कियों को रहने लायक कमरे हैं, जिनमें से अधिकतर धर्मान्तरित और लव-जेहाद की परित्यक्ता रहती है।

सरकारें अल्पसंख्यकों के अधिकारों के विषय में गोल गोल बात करती है परन्तु ये परिसर अतिवादियों के गढ़ बन सकते हैं। पाकिस्तान की लाल मस्जिद से हम शिक्षा ले सकते हैं जिसे वहाँ की सेना की टैंकों की मदद से हमला करना यह दर्शाता है कि कैसे मुस्लिम धार्मिक संस्थायें हथियार युक्त दुर्ग बन सकती हैं।

14. *यही सत्य ईसाई संस्थाओं जैसे कई ध्यान केन्द्र का भी है जहाँ विगत 10 सालों में 975 अज्ञात मोतें हुई।*

कई ज्ञात कट्टरवादी संगठन हैं जो प्रचार, प्रोपेगण्डा, कार्यकर्ताओं की भर्ती आदि गतिविधियों में लगे हुए हैं।

जहाँ तक प्रोपेगैण्डा का ताल्लुक है कई संगठन जैसे 'स्मार्ट फ्रैण्ड' और 'निशे ऑफ ट्रुथ' (Niche of Truth) व्यवसायिक कॉलेजों में सक्रिय हैं, विद्यार्थियों को चिन्हित करते हैं, उन पर इस्लामी प्रोपेगैण्डा सामग्री की बमबारी करते हैं और धर्मान्तरण करते हैं।

ये लोग कई प्रकार की राजनैतिक पार्टियों में भी घुसे हुए हैं ताकि अपनी गैर कानूनी गतिविधियों को छिपा सकें और पार्टियों की दिशा को प्रभावित कर सकें। यह नेटवर्क के विस्तार करने वाली छतरी के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त इन्होंने खबर देने वालों का जाल बिछा रखा है जिनमें से कुछ तो वे होते हैं जिन्हें उनके उद्देश्यों से सहानुभूति होती है और कुछ पैसे के लिये काम करते हैं। ये लोग पुलिस में भी घुसे हुए हैं। जेहादियों से छूटकर भाग कर आये लोगों के बयानों से पता चलता है कि उन्हें (जेहादियों को) पता होता था कि पुलिस वालों को उनके बारे में कितना पता है। इस खबर का इस्तेमाल वे लड़की को सुरक्षित घरों में स्थानान्तरित करने और किसी भी पीछा करने वाले से एक कदम आगे रहने हेतु करते थे।

**कार्यकर्ता** (जिहादियों को) भर्ती करने का काम चौंकाने वाला है। इनको पूर्व फौजी अफसरों (भारतीय और पाकिस्तानी) की देखरेख में सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता है। केरल और कर्नाटक के पश्चिमी घाटों के जंगलों में इनके कई प्रशिक्षण कैम्प स्थापित हैं। इनमें से एक कैम्प वैगामोन (Vagamon) में प्रकाश में आया जब जम्मू-कश्मीर में फौज के हाथों मारे गये चार आतंकवादियों के विषय में पता चला कि उन्होंने केरल में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। खुफिया एजेन्सियों का अनुमान है कि लगभग 200 प्रशिक्षतों में से 33 धर्मान्तरित लोग हैं (27 हिन्दू और 6 ईसाई)। ऐसा माना जाता है कि पाकिस्तानी प्रशिक्षकों के अलावा लिट्टे के प्रशिक्षक भी इनको प्रशिक्षण देने में शामिल थे। (ऐसा लगता है कि जेहादी समूह के अलावा अन्य प्रकार के समूहों को भी यहाँ प्रशिक्षण दिया जाता है। त्रिवेन्द्रम जिले के वरकला क्षेत्र में हुई कुछ हत्याओं में जो हथियार प्रयोग में लाये गये उससे लगता है कि इन हत्यारों को भी जेहादी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त था। ये कातिल अपने आपको हरिजनों के किसी संगठन का प्रतिनिधि बताते हैं)।



केरल में चल रही इन गतिविधियों को रोकने वाला कोई न होने के कारण जेहादियों को विश्वास हो चला है कि वे जो चाहे कर सकते हैं। उदाहरण के लिये जेहादी हिन्दू लड़कियों की हत्या कर रहे हैं जो उनके प्रस्ताव को ठुकरा देती हैं। *(केरल कौमुदी, 7 अक्टूबर - 'लव-जेहाद' भी लड़कियों के कत्ल के पीछे? - 20 अप्रैल को पल्लाकड वी वी कॉलेज की 19 वर्षीय छात्रा अंजूषा को कोची के 24 वर्षीय ट्रक ड्राइवर शाहजहाँ, ने कत्ल कर दिया। ऐसा लगता है कि लड़की ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया था। इस घटना का विस्तृत विवरण इस पुस्तक के अन्त में संलग्नक II में दिया गया है)*

इसके विपरीत जेहादी मुस्लिम लड़की के हिन्दू लड़कों से शादी करने और इस्लाम से बाहर धर्मान्तरित होने के मामले को बहुत गम्भीरता से लेते हैं। एक ताजा मामले[15] में कोर्ट ने आदेश दिया कि हिन्दू लड़का और उसकी मुस्लिम पत्नी जो हिन्दू हो गई थी को एक साथ रहने दिया जाये। परन्तु मुस्लिम भीड़ किसी प्रकार लड़की को उठा कर ले गई। सम्भव है कि लड़की के पिता या भाई ने उसका उसी प्रकार कत्ल कर दिया हो जिस प्रकार यू.के. में रहने वाले पाकिस्तानी प्रवासी 'ऑनर-किलिंग' किया करते हैं, क्योंकि इस लड़की ने भी साहस दिखाकर अपने धर्म से बाहर शादी कर ली थी जो इन लोगों के अनुसार उसके परिवार के लिए सम्मान विरुद्ध था।

कुछ प्रतिरोधात्मक कदम आवश्यक हैं जिससे जेहादी कट्टरपन्थियों को लगे कि उनकी हरकतों के अन्जाम कष्टदायक भी हो सकते हैं। जब तक यह नहीं होगा

---

*15. (मातृभूमि, अगस्त 2009) - "कोर्ट ने आदेश दिया कि वे इकट्ठे रहें परन्तु उन्होंने घर पर हमला किया और लड़की को उठ ले गये।" किलीमैनूर : एक मामले में कोर्ट ने आदेश दिया था कि वर-वधु एक साथ रह सकते हैं परन्तु लड़की के रिश्तेदार घातक हथियारों से लैस होकर आये और लड़की को जबरदस्ती उठा कर ले गये। पुलीमठ दीपा भवन निवासी राजमोहन (21 वर्ष) और कट्टूपुरम मन्जापारा की निवसी शमनमोल (19 वर्ष) एक दूसरे से प्यार करते थे। विगत 29 तारीख को उन्होंने तमिलनाडु के एक मन्दिर में शादी कर ली। किलमन्नूर पुलिस ने लड़की के रिश्तेदारों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया। जोड़ी त्रिवेन्द्रम के सी जे एम की कोर्ट में पेश हुई। दोनों ने कोर्ट से अपील की कि उनको एक साथ रहने दिया जाये क्योंकि दोनों व्यस्क हो चुके हैं, कोर्ट ने एक साथ रहने की आज्ञा दे दी। उन्होंने कड्डक्कल सब-रजिस्टार दफ्तर में अपनी शादी पंजीकृत कराने हेतु प्रार्थना पत्र दिया। परन्तु 9 तारीख रात 8.15 बजे लड़की के रिश्तेदार आए और शमनमोल को अगवा कर ले गये)*

वे असमाजिक तरीके से हरकते करते रहेंगे। जिन्हें ऐसी गतिविधियों से रोकना है वे पैदल-सिपाही नहीं हैं जेहादी रोमियो हैं, अमेरिकी 10 सेन्ट के सिक्के की तरह है जिनको कुरबान किया जा सकता है। जिन्हें रोकना है वे हैं वरिष्ठ कट्टरपंथी जेहादी जो मुस्लिम समाज के स्तम्भ हैं और इन गतिविधियों के पीछे चलने वाला दिमाग हैं। (उदाहरण के लिये ऐसे लोग हैं जिन्हें सब जानते हैं कि वे भाग कर आई हुई महिलाओं के लिये वाहन की, उनके रहने के लिए सुरक्षित घर की व्यवस्था करते हैं ताकि उनके दिमाग को धर्मान्तरण हेतु तैयार करने की प्रक्रिया सुरक्षा पूर्वक चलती रहे)।

दुर्भाग्य वश सरकारें इस विषय पर साफ-साफ बोलने से कतरा कर रही है। अत: सम्भव है कि कुछ चौकस समूह आगे बढ़ कर इस रिक्त स्थान की पूर्ति करें। केरल हाई कोर्ट ने शहनशा और पथानमीथता मामले के सिराजुद्दीन की अग्रिम जमानत की अर्जी पर सुनवाई करते हुए डी.जी.पी. को अस्पष्ट रिपोर्ट दिये जाने पर डाँट लगाई थी। 26 अक्टूबर को कोर्ट ने यह टिप्पणी की थी कि पुलिस ने गोल मोल बयान दिए हैं जो डी.जी.पी. के पूर्व बयान के विरुद्ध हैं। उन्होंने पूर्व में कहा था कि कुछ छद्म संस्थायें हैं जो लव-जेहाद को बढ़ावा दे रही हैं। आशा के अनुरूप भारत सरकार ने कोर्ट में बयान दर्ज कराया कि सरकार को लव जेहाद नामक किसी चीज का पता नहीं। (याद रहे कि इसी डी.जी.पी. जैकब पुन्नोसे की एक नजदीकी रिश्तेदार शिकार बनी थी जिसे इस रिपोर्ट में 'एनी' या 'क्रिश्चियन गर्ल' के तौर पर पठानापथिता केस में सम्बोधित किया गया था। ये अधिकारियों के शुतुरमुर्गी मानसिकता के उदाहरण हैं।

## वैश्विक समस्या

युवा लड़कियों का जबरन इस्लाम में धर्मान्तरण वैश्विक समस्या है। लव जेहाद पिछले कुछ वर्षों से ब्रिटेन में सक्रिय है जैसा कि संलग्नक III में दी गई कहानी से पता चलता है जो इंग्लैंड के डेली मेल दिनांक 22 फरवरी 2007 और टाइम्स ऑफ लन्दन दिनांक 3 मार्च 2007 में छपी थी। दोनों मामलों में शिकार हिन्दू और सिख लड़कियाँ थीं।

दूसरी आबू धाबी की एक रिपोर्ट में भी इस बात का वर्णन है कि कैसे इज़रायल के यहूदी भी इसी प्रकार की समस्या से जूझ रहे हैं।



ऐसी कई रिपोर्ट है जिनमें यू.के. की गोरी लड़कियों को मुस्लिम केन्द्रों जैसे ब्राडफोर्ड (Bradford) में निशाना बनाया जा रहा है। ये लड़कियां भी अन्तत: नशेड़ी और वैश्या बन कर अपना जीवन बरबाद कर बैठती हैं।

गोरों के दूसरे देशों में ज्यादातर रिपोर्ट मुख्यत: कामान्ध मुसलमान पुरुषों के गोरी लड़कियों पर गलियों में हमले और उनसे बलात्कार सम्बन्धी है साथ ही उनको बुर्का न पहनने वाली रंडी कहकर गाली देने सम्बन्धी है।

अमेरिका में मुस्लिमों द्वारा कॉलेज की हिन्दू छात्राओं को निशाना बनाया जाता है जो 'साउथ एशिया सोशल समूह' में जाते हैं। ये समूह भ्रमित उदारवादिता में फंस कर पाकिस्तानियों और बंगलादेशियों का अपने घरों में स्वागत करते हैं। (अजीब बात है कि ये पाकिस्तानी और बंगलादेशी आमतौर पर "सिर्फ मुसलमानों के सोशल समूह" के सदस्य होते हैं। "सिर्फ हिन्दू सोशल समूह" बनाने के प्रयास का भरपूर विरोध किया जाता है। "साउथ एशिया सोशल समूह" द्वारा उनको फासिस्ट बोला जाता है।) एक बड़ी हृदय विदारक घटना घटी जिसमें एक बंगलादेशी[16] ने पूरी की पूरी गुजराती फैमिली को चाकुओं से गोद कर मार डाला क्योंकि इस परिवार ने इस बंगलादेशी द्वारा परिवार की एक बेटी से सम्बन्ध बनाये जाने का विरोध किया था।

जेहादी शिकारबाजी स्पष्ट रूप से विश्वव्यापी घटनायें हैं। केरल में इसने धीरे-धीरे पैर पसारे हैं और अब जब यह आ गया है, इसे यहाँ की धरती लव-जेहाद के लिये बड़ी उर्वरक लगी है।

## • निष्कर्ष

अगर इसे रोका नहीं गया तो लव जेहाद समाज के लिए डरावना साबित

16. ***21 मई 2007, वान नुयीस कैलीफोर्निया :*** *जय प्रकाश धनक (56 वर्ष) और उसकी बेटी करिश्मा धनक (20 वर्ष) को चाकू मारा गया, गला घोटा गया और जिन्दा जला दिया गया। उनका घर भी जला दिया। धनक की पत्नी लीला (53 वर्ष) को बुरी तरह पीटा गया और मरा जान कर छोड़ दिया। बांगलादेशी आरोपी इफ्तेकार मुर्तज़ा (22 वर्ष) को एयरपोर्ट पर गिरफ्तार कर लिया गया। मुर्तजा जाहिर तौर पर उसी परिवार की दूसरी बेटी शायोना धनक (18 वर्ष) का पूर्व प्रेमी था जो उस वक्त घर पर नहीं थी। पुलिस ने नोट किया कि जिस निर्दयता से ये खून किये गये थे वह अकेला मुर्तजा नहीं कर सकता था। स्पष्ट है वह अपने साथियों के साथ (जो सम्भवत: मुसलमान ही थे) आया था।*

होगा। यह अपराधी माफियाओं के समूह की तरह है, या चीनीयों की त्रय समूह की तरह का संगठित अपराध है और कुछ नहीं है। हालांकि इसमें धर्म का पुट डाला गया है पर इसको धार्मिक मामला नहीं समझा जा सकता बल्कि यह एक गैर कानूनी तौर पर औरतों के इस्तेमाल, उनके व्यापार, उनके बलात्कार, उनके अपहरण और आतंकवाद का मामला है। सरकार इसको 'अल्पसंख्यकों का अधिकार' का विषय नहीं मान सकती क्योंकि यह समाज के लिए स्त्रियों के अधिकार और मानवाधिकार का मामला है। किसी अल्पसंख्यक का हक नहीं बनता कि वह मौलिक मानवाधिकार में दखलन्दाजी करे। लव-जेहाद का सम्बन्ध विद्रोह से है और दुश्मन देशों द्वारा चलाये जा रहे अलगाव वाद से भी है। यह देश की सुरक्षा का मामला है अत: जिस गम्भीरता की अपेक्षा है उसी गम्भीरता से लिया जाना चाहिए।



## परिशिष्ट । : इण्टरव्यू (साक्षात्कार)

**साक्षात्कार-1 – पीड़ित हिन्दू लड़की (पथानामिथित्ता मामला जिसमें हाईकोर्ट ने लड़की को माँ बाप के सपुर्द किये जाने का आदेश दिया)**

मैं अध्ययनशील लड़की थी और मैंने काफी कुछ पढ़ा है। मैं एमबीए की छात्रा थी और होस्टल के एक कमरे में कई अन्य लड़कियों के साथ रहती थी। उनमें से एक मेरी बड़ी अच्छी सहेली थी उसका नाम ऐनी था *(नाम काल्पनिक है क्योंकि कोर्ट का आदेश है कि दोनों लड़कियों के नाम समाचार पत्रों और टीवी चैनलों द्वारा प्रकट न किये जायें। कोर्ट उनको 'हिन्दू लड़की' और 'ईसाई लड़की' के रूप में सम्बोधित करती है)*। मैं उस मुस्लिम युवक को मिली जो वहाँ सीनियर छात्र था। यह बहुत मदद करने वाला और मित्रवत था। वह हमारी पढ़ाई में और प्रोजेक्ट्स आदि में बहुत मदद करता था क्योंकि हम लोगों को टैक्स्ट बुक्स और अन्य सामग्री को प्राप्त करने में कठिनाई थी वह कॉलेज के अधिकारियों से हम लोगों की सभी लड़ाई में आगे होता था। कॉलेज में दरअसल पढ़ाई में मदद करने वाला पूरा सामान नहीं था।

शहनशाह ने पहले ऐनी से दोस्ती की। ऐनी निडर और वहिर्गामी लड़की है, चुँकि वह केरल से बाहर पली बढ़ी हुई, अत: लड़कों के साथ सहज रहती थी। मैं कन्या पाठशाला और महिला महाविद्यालय में पढ़ी थी इसलिये लड़कों या पुरुषों से व्यवहार की अभ्यस्थ नहीं थी। परन्तु मैंने सोचा अब मैं स्नातकोत्तर कक्षा में पढ़ रही हूँ मुझे भी मर्दो के साथ कैसे काम किया जाता है सीखना चाहिए और मैंने सोचा कि शहनशाह एक मदद करनेवाला इन्सान है, इसलिए मैं भी उसकी दोस्त बन गई। उसे 2007 में कॉलेज से निकाल दिया गया था इसलिये वह प्राइवेट परीक्षा में बैठ रहा था। हमें उसके साथ सहानुभूति थी और मैं उसको प्रोजेक्ट कार्य में मदद करने लगी।

अब मुझे स्पष्ट हुआ कि शहनशाह हम चारों लड़कियों को जो होस्टल के कमरे में इकट्ठा रहती थी, पटा रहा था ऐनी, मुझे और दो अन्य 'ख' और 'ग' को भी। 'ख' ने कुछ दिनों बाद समझ लिया कि क्या चल रहा है और अलग हो गई। 'ग' बुरी तरह प्रभावित हुई और अब मनोरोग से पीड़ित है। वह अपने कटु अनुभव पर किसी से बात नहीं करना चाहती।

जब हम सब में अच्छे सम्बन्ध थे वह ऐनी और मुझे अपने घर पर आमंत्रित करता रहता था जो उसी शहर में था। हम जाना तो नहीं चाहते थे पर वह इतनी जिद्द करता कि हम चले जाते थे। हम उसके परिवार से मिले। वे एक अच्छे मध्यवर्गीय परिवार के लगते थे। उसकी माँ और बहन का व्यवहार हमारे प्रति बहुत ही अच्छा था। उसकी माँ हमारी बहुत खातिर करती थी और हमारे छोटे मोटे कपड़े भी सिल दिया करती थी क्योंकि हमें शहर में कोई अच्छा स्थान नहीं मिलता था जहाँ अपने कपड़े सिलवा सकें। वह हमें नित्य प्रति मुस्लिम महिलाओं के द्वारा किये जाने वाले इस्लामी रीति रिवाजों को भी सिखाती थी। उसका बाप एक व्यवसायी था और उसका छोटा सा पारिवारिक व्यवसाय भी था। जब शहनशाह घर में अकेला होता था, हम लोग उसके घर कभी नहीं जाते थे।

शहनशाह हमसे अक्सर धर्म के विषय में बातें करता था। शुरू में हम ज्यादा ध्यान नहीं देते थे पर धीरे-धीरे उसे सुनना शुरू कर दिया। जो चीज वो अक्सर बताया करता था उसका सार यह था कि इस्लाम एक गजब का धर्म है, और ईसाईयत और हिन्दुत्व कितना भयंकर है। क्योंकि मुझे अपने हिन्दू धर्म के बारे में अधिक ज्ञान नहीं था, और उसका तर्क सशक्त होता था, मैंने उसके दृष्टिकोणों पर विश्वास करना शुरू कर दिया। उसने हमारा परिचय फोटोकॉपी की दुकान चलाने वाले शाहजहाँ से कराया जिसकी पत्नी ने ईसाईयत छोड़ इस्लाम स्वीकार कर लिया था। शाहजहाँ की पत्नी ने हमें दिन में पांच बार नमाज पढ़ना सिखाया उसका पति हमें एवं और अन्य लड़कियाँ जो उसकी दुकान पर आती थी उनको इस्लाम के आकर्षण के बारे में और मुसलमानों पर हो रहे अत्याचारों के बारे में बताया करता था। वह फोटोकॉपी करने के कम पैसे लिया करता था इसलिये शहर के सभी विद्यार्थी उसी की दुकान पर आते थे। उसने मुस्लिम महिला सहायिकायें भी रखी हुई थी। ये लड़कियाँ शाहजहाँ के कथन का समर्थन किया करती थी।

मुझे पता ही नहीं चल रहा था कि यह सब क्या हो रहा है और मैं भ्रमित थी। इसलिये मैंने एक डायरी लिखनी शुरू की जिसमें मैंने अपने सभी भ्रमों को लिखा। मैं सारी चीजें पत्र की शक्ल में साई बाबा को लिखती थी क्योंकि मैं उनको मानती थी। इस डायरी को बाद में कोर्ट में बतौर गवाही पेश किया गया। इस डायरी ने जज को विश्वास दिला दिया कि मेरे ऊपर दबाव डाला गया था, मेरी मजबूरी बन गई थी उसके साथ जाने की और इस्लाम स्वीकार करने की।



एक दिन मैंने शहनशाह को बताया कि मुझे पर्दा पसन्द है और मैंने पर्दा करना शुरू कर दिया। वह बहुत खुश हुआ। कुछ हिचकचाहट के बावजूद मैं उसकी तरफ खिंचने लग गई। एक दिन फरवरी 2009 को उसने मुझे बताया कि वह सिर्फ पत्नी से प्यार कर सकता है। इसके बावजूद उसने मुझसे निकटता बनाये रखी है जो उचित नहीं था। उसने मुझे बताया कि उसकी मुख्य दिलचस्पी आध्यात्म में है। वह दरअसल यह भांपने का प्रयास कर रहा था कि मैं कितनी उसकी हो चुकी हूँ। तब उसने मुझे बताया एक धार्मिक व्यक्ति होने के नाते उसे एक 'दीनी' बनना पड़ता है। दीनी एक अरबी शब्दावली है इसका कहने का मतलब था कि उसे मेरे प्रति जो प्यार है उसे छुपाना पड़ता है और यह बहाना करना पड़ता है कि वह (शहनशाह) मुझे इस्लाम के खातिर प्यार करता है। जब उसने बताया कि वह मुझे प्यार करता है मुझे झटका तो लगा पर अच्छा भी लगा।

अब तक शहनशाह और फोटो कापी करने वाले ने हम लड़कियों को इस्लाम सम्बन्धी धार्मिक प्रचार की सामग्री व पुस्तकें [17] आदि देनी शुरू कर दी थी और मैं विश्वास करने लगी कि मुझे इस्लाम में धर्मान्तरित होना जरूरी है। दरअसल मैं शहनशाह से ज्यादा इस्लाम से आकर्षित हो गई थी। उसने दबाव जारी रखा और मुझे बताया कि अगर मैं अपने माँ बाप को बोलूंगी तो वे हम दोनों की शादी को सहमत नहीं होंगे। मैंने उसे बता दिया कि मैं उनकी अनुमति के बिना शादी नहीं कर सकती। पर अब तक हमारी जान पहचान हुए डेढ़ साल हो चुका था और मेरी सारी मनोवैज्ञानिक कमजोरियों को वह जान गया था जिसका उसने भरपूर फायदा उठाया।

इस बीच कॉलेज में अफवाह फैल गई कि मैं शहनशाह से शादी करने वाली हूँ और पुन्नानी जाकर धर्मान्तरण करने वाली हूँ। मेरी सहेली की माँ यहीं आ गई क्योंकि यह खबर उस तक भी पहुँच गई थी। परन्तु हमने उन्हें बताया कि ऐसा कुछ भी नहीं है और हम लोग जुलाई में होने जा रही परीक्षा में बैठेंगी। परन्तु मैं

---

*17. 25 से ज्यादा मलयाली भाषा की और 5 से अधिक अंग्रेजी भाषा की इन पुस्तकों में से कुछेक हैं - इस्लाम में नमाज़ा, जिज़्स और मोहम्मद का एक ही रास्ता, इस्लामी समाज में औरत, ईसाईयों द्वारा कुरान की आलोचना, जेल से मस्जिद तक, तौबा का महत्व, इस्लामी जीवन पद्धति, इस्लाम में स्त्री का स्थान, आयशा मुहम्मद नबी, मानवता के सबसे बड़े गुरु, सिक्ख पाइंट ऑफ तबलीख, प्रेयर ऑफ प्रोफैट, वैस्ट मुस्लिम नेम्स, इस्लाम एण्ड मैनेजमैण्ट, मकैनिक्स ऑफ डम्सडे एण्ड लाइफ आफ्टर डैथ इत्यादि।*

शहनशाह से शादी कर रही हूँ और इस्लाम स्वीकार कर रही हूँ यह मुद्दा जीवित बना रहा। शाहजहाँ और मस्जिद से जुड़े अन्य लोग इस मामले में दिलचस्पी दिखाते रहे। मैंने उनको बताया कि मुझे उनका धर्म अच्छा लगता है और धर्मान्तरित होना चाहती हूँ और शहनशाह से शादी करना चाहती हूँ।

जून/जुलाई में मैं अपने घर त्रिवेन्द्रम गई और मैं एक प्रकार से घर में नजरबन्द कर दी गयी क्योंकि मेरे माता-पिता इन सब बातों से चिन्तित हो गये थे। यहाँ धमकी भरे फोन आने लग गये कि ''हमारा लड़का तुम्हारी लड़की को चाहता है अत: जो चाहो आप कर लो, हम उनकी शादी करा कर ही रहेंगे।'' परन्तु जब मेरे पिता ने शहनशाह को घर बुलाया और स्पष्ट रूप से पूछा तो उसने कहा कि ''नहीं, मैं आपकी बेटी में उस दृष्टि से दिलचस्पी नहीं ले रहा।'' लेकिन शाहजहाँ ने उस समय इशारा किया था कि मैं शहनशाह से ज्यादा इस्लाम में दिलचस्पी ले रही हूँ, अत: मुझे बताया गया कि वह मेरे लिये कोई दूसरा मुस्लिम युवक शादी करने के लिये ढूंढ रहा है। अब तक मैंने इस्लाम में परिवर्तित होने का पक्का इरादा कर लिया था और अप्रैल 2009 को कलमा पढ़ कर अनौपचारिक रूप से इस्लाम में परिवर्तित हो गई (कलमा एक दोहा है जिसका मतलब है व्यक्ति ने इस्लाम को छोड़ किसी अन्य के प्रति वफादारी त्याग दी है)

18 जुलाई 2009 को मुझे मोबाइल पर सूचना दी गई कि मैं घर से भाग जाऊँ और जमात के लोग भगाने में मदद करेंगे। आधी रात को 3 बजे मैं अपने घर की छत से उतरी जहाँ मुझे हरे रंग की एक स्कोर्पियो कार खड़ी मिली जिसमें पापुलर फ्रंट[18] के लोग बैठे हुए थे। जैसे ही मैं उनसे मिली उन्होंने मेरे फोन का सिम ले लिया और नष्ट कर दिया। नष्ट करने का कारण यह बताया कि पुलिस इसके सहारे हमें ढूंढ सकती है। वहाँ दो पुरुष और दो महिलायें बुर्के में थी। मुझे भी पहनने को एक बुर्का दिया गया। कार में ही उन्होंने मुझे एक सीडी दिखाई जो

*18. पापुलर फ्रंट एक छुपी हरकतें करने वाला संगठन है जो नेशनल डैमोक्रेटिक फ्रंट से, जो स्वयं भी एक उग्रवादी संगठन है, जुड़ा हुआ है। यह सिमी और आईएसएस नामक प्रतिबन्धित संगठन का दूसरा नाम है। इसमें कुछ वही शुरूवाले सदस्य हैं जो सिमी में थे। पापुलर फ्रंट एक अखबार भी निकालता है जिस का नाम थेगस है जिसमें मुस्लिम अतिवादी विचारधारा के लेखादि होते हैं। पापुलर फ्रंट अपने को पूरी दुनिया के मुसलमानों का संगठन मानता है जो पूरे विश्व के मुसलमानों की शिकायतों के आधार पर केरल में अपने क्रियाकलापों को सही ठहराता है।*



किसी प्रतिबन्धित संगठन की थी जिसमें इस्लाम और जेहाद की तारीफ की गई थी। स्थानीय व्यक्ति यासीन जिसने सब इन्तजाम किया था थोड़ी देर के बाद उतर गया। वह वही व्यक्ति था जिसने मुझे मोबाईल पर संकेत दिया था कि सब इन्तजाम हो गये है। मुझे पापुलर फ्रन्ट से जुड़े परिवार में ले जाया गया।

अन्य 'सुरक्षित घरों' की तरह यह भी एक सामान्य घर था जिसमें परिवार रह रहे थे, मुझे एक कमरा दिया गया। बाद में दो नये व्यक्ति एक लान्सर कार में आये और मुझे हनीफा हाज़ी के घर ले गये। यहाँ सब नये लोग थे। मेरा शहनशाह या शाहजहाँ से कोई सम्पर्क नहीं रहा क्योंकि मेरा मोबाइल जब्त कर लिया गया था। परन्तु इन सब लोगों का बर्ताव मेरे साथ अच्छा था।

मेरी सहेली ऐनी, जो मेरी ही तरह उसी रात अपने घर से भागी थी, को भी इसी घर में लाया गया। इसके बाद हम लोगों को एक सप्ताह के लिये मल्लापुरम ले जाया गया। शहनशाह ने मुझे बुलाया और बताया कि तुम मुझ से अलग इसलिये की गई हो ताकि मैं ईश्वर के नजदीक हो सकुँ और मुझे आगे और धार्मिक निर्देश दिये जायेंगे। उन्होंने मुझे संगठन, उसके उद्देश्यों और योजनाओं के बारे में और अधिक जानकारी दी। मुझे यह भी बताया गया कि मै पापुलर फ्रन्ट के बारे में कभी भी बात न करूं।

इस बीच मेरे माँ-बाप ने कोर्ट में प्रत्यक्षीकरण (Habeus Corpus pitetion) याचिका दायर कर दी और जब यह स्पष्ट हो गया कि पुलिस शहनशाह को पथानमिथत्ता में गिरफ्तार कर लेगी तो वह मल्लापुरम आ गया। उसने बोला, ''मैं तुमसे शादी करने आया हूँ।'' उसने यह भी कहा कि पापुलर फ्रन्ट मुझे बैंगलोर ले जाना चाह रहा था और किसी और से मेरी शादी कराना चाह रहा था। उन्होंने कुछ और आदमियों को जिसमें दांतों का डाक्टर व अन्य थे ऐनी को दिखाने के लिये लाये। परन्तु उनके परिवार वाले इस सब से प्रसन्न नहीं थे। अन्तिम तौर पर एक अस्थाई बस कण्टक्टर जिसका नाम सिराजुद्दीन था को ऐनी से शादी करने के लिये अनुमोदित किया गया। तद्नुसार 12 अगस्त को हम लोगों को कोज़ीकोड में नोटरी के दफ्तर में ले जाया गया जहाँ शादी के इकरार नामे पर मैंने और शहनशाह ने और ऐनी और सिराजुद्दीन ने हस्ताक्षर किया।

उस रात जब हमारा निकाह हो गया हम लोगों के विवाह का जश्न मनाया गया। हम लोग खदीजा के घर में एक हफ्ते तक पति-पत्नी के तौर पर रूके। ऐनी

और सिराजुद्दीन भी रूके। बाद में मुझे पता चला कि सिराजुद्दीन[19] ने ऐनी के साथ अप्राकृतिक और गैर कानूनी तरीके से संभोग किया, परन्तु ऐनी ने मेरे हित में मुझे इस बारे में कुछ नहीं बताया। मेरे साथ गलत संभोग नहीं किया गया।

हम लोगों को कोर्ट में लाया गया जहाँ मुझे पता चला कि शहनशाह की माँ ने कोर्ट में शपथ पत्र प्रस्तुत किया है कि उसका बेटा बेकसूर है और मैंने ही उसको आकर्षित किया था। जज ने अनुभव किया कि न तो मेरी शादी और न मेरा इस्लाम में धर्मान्तरण कानूनी रूप से वैध है इसलिये उन्होंने मुझे मेरे माँ-बाप को और ऐनी को उसके माँ-बाप को सौंप दिया। अब मैं ईश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि मैं भयानक अन्धकूप से निकल कर अपने माँ-बाप के पास वापिस आ गई।

मुझे पता है मैं जिन परिस्थितियों से होकर गुजरी हूँ, उसके कारण मेरा भविष्य अनिश्चित है परन्तु मेरे साथ जो हुआ सब इस आशा से बता रही हूँ ताकि दूसरों की मदद हो सके। मेरे उदाहरण से अगर एक भी लड़की इस भयानक यातना से बच गई तो मुझे बड़ी खुशी होगी।

**नोट -1**

यह विश्वास किया जाता है कि वही शहनशाह थोड़े भिन्न नाम से ओरकुट वैबसाइट के माध्यम से आतंकवाद को बढ़ावा देने वाली सामग्री प्रचारित कर रहा था। वह स्थानीय मुस्लिम लीग स्टुडेन्टस यूनियन का प्रमुख भी था।

**नोट -2**

यह लड़की सचमुच बहादुर निकली जो अपनी सब यातनाओं का विवरण सविस्तार सब प्रेसवालों को बता रही है। 'कलाकौमुदी' नामक पत्रिका में सभी विवरण विस्तार से लेख रूप में प्रकाशित हुआ जिनसे होकर वह गुजरी थी। इस लड़की को उसके इरादों के लिये शाबाशी देनी चाहिये और कुछ ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये ताकि उसे सहारा मिले। इतने अनुभवों वाली लड़की (जिसने अन्य चीजों के अलावा कहा कि वह एक आदमी के साथ एक हफ्ते पति-पत्नी के तौर पर रही) को शायद पति पाना कठिन हो सकता है या अन्य स्थितियों से मुकाबला

*19. इसके लिये भारतीय दण्ड संहिता की धारा 377 के अन्तर्गत अपराधिक मामला दर्ज कर लिया गया है। इस धारा के अन्तर्गत अप्राकृति यौन, यानि स्त्री की योनी को छोड़, अन्य स्थान पर सैक्स एक अपराध है।*



भी कठिन होगा। इसे काउन्सिलिंग, सहानुभूतिपूर्वक पुनर्वास और सम्भवत: किसी दूसरे राज्य में "गवाह सुरक्षा कार्यक्रम" के समान सुरक्षा के साथ पुन: बसाना उसके लिए बहुत उपयोगी रहेगा। जब कोई इस लड़की से बात करता है वह उसकी भावना और हिम्मत से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। उसकी हालत में बहुत सारी लड़कियाँ शायद टूट जाती, हार जाती और शायद ही कोई काम करने लायक होती। वास्तव में उसने एक दूसरी लड़की का उल्लेख किया जो उसके कॉलेज की ही थी, उसके साथ भी वह सब हुआ था (यद्यपि वह भाग कर नहीं गई) और अब वह अपना दिमागी सन्तुलन खो चुकी है।

## साक्षात्कार 2 : एक सरकारी कर्मचारी का जिसकी बेटी भाग गई

मेरी बेटी एक मुस्लिम प्रबन्धन वाले इन्जीनियरिंग कॉलेज की छात्रा थी। इस कॉलेज में एक युवा लड़कों का गैंग है जो लव-जेहाद की योजनाओं में संलिप्त है और 10-12 लड़कियों को मेरी बेटी की तरह ही अपहरण कर चुका है। मेरी बेटी परीक्षा के अन्तिम दिन पेपर देकर घर वापिस नहीं आई। रात को एक युवा लड़के ने फोन किया और बताया कि हमने शादी कर ली है, आपकी बेटी मुसलमान बन गई है और हम दोनों अपने माँ-बाप के नजदीक दूसरे शहर में रहने जा रहे हैं। वह उस कॉलेज का छात्र नहीं था। मुजाहीदीन नाम से नवयुवकों का गैंग है जो कॉलेज में हिन्दू लड़कियों का पीछा किया करता है।

इन्होंने क ख ग शहर में कुछ माह पूर्व शादी पंजीयन कराई जहाँ उसने झूठा निवास प्रमाण पत्र पेश किया था। शादी स्पेशल मैरिज एक्ट के तहत सम्पन्न हुई थी। मुझे पता चला कि वहाँ कई ऐसी शादियाँ हुई हैं। क ख ग शहर का विवाह निबंधन अधिकारी एक मुसलमान हैं। मेरी बेटी की शादी पंजीयन में सभी गवाह मुसलमान थे।

मेरी बेटी और यह व्यक्ति अब पिछले तीन माह से इकट्ठे रह रहे हैं। मैं उनसे मिलने गया। लगता है वह एक मार्केटिंग कम्पनी में अच्छी नौकरी करता है और उसका परिवार उच्च मध्यम वर्ग का मुस्लिम परिवार लगता है। यह सोच कर कि मेरी बेटी खुश लगती है, मैंने उसके खिलाफ कोई कोर्ट केस नहीं किया। मेरे रिश्तेदार मेरे इस व्यवहार से नाखुश हैं। मैं और मेरी बेटी कभी कभी औपचारिक बातचीत कर लिया करते हैं परन्तु वह माँ के साथ लगातार सम्पर्क में है।

मेरी बेटी स्मार्ट, शान्त स्वभाव की अच्छी छात्रा थी। वह अच्छी पढ़ी लिखी थी। वह गीता, बाइबल और कुरान पढ़ रही थी और मैंने सोचा कि वह तुलनात्मक अध्ययन कर रही है, अत: मैंने भी प्रोत्साहन दिया। बाद में पता चला कि उसे मलयालम भाषा में कोज़ीकोड से प्रकाशित इस्लाम से सम्बन्धित बहुत सारा प्रचारात्मक साहित्य मिला हुआ था। मुझे लगता है कि वे स्मार्ट लड़कियों को निशाना बनाते हैं।

मुझे क्या करना चाहिये था? मुझे बेटी में आ रहे परिवर्तन पर ध्यान देना चाहिये था। मैंने नोट किया कि उसने मन्दिर जाना छोड़ दिया था, बिन्दी लगानी भी छोड़ दी थी। चुँकी मैं स्वयं मन्दिर नहीं जाता और कर्मकांडों में विश्वास नहीं करता अत: मैंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया। मुझे उसके मोबाइल और इण्टरनेट पर भी बंदिश लगानी चाहिये थी।

मैं उसके कॉलेज की किसी लड़की को नहीं जानता हूँ जो भागने के बाद वापस लाई गयी हो। परन्तु मैं कॉलेज के मुस्लिम प्रबन्धन को दोष नहीं देता, यह उनका दोष नहीं है, यह किसी भी कॉलेज में हो सकता था।

मेरी एक और बेटी है जो उससे छोटी है। मेरी बड़ी बेटी उससे काफी बातें करती रहती है। अत: मुझे उसकी चिन्ता लगी रहती है कि कब उसकी शादी का समय आयेगा। मेरी बड़ी बेटी के प्रकरण के कारण बाधाएँ आएँगी। काफी समय तक मैं अपनी समस्या पर किसी से बातचीत नहीं करना चाहता था, परन्तु अब मैं सोचता हूँ कि दूसरे माँ-बाप उससे कुछ सीख सकें जो मेरे साथ हुआ और अपने बच्चों पर उनकी गतिविधियों पर अधिक ध्यान दें। दुनिया में क्या चल रहा है उसके बारे में अच्छी प्रकार मार्गदर्शन दें।

**नोट-1**

हालांकि यह पिता ऊपर से बहादुर दिखने का यत्न कर रहा था पर पूरी बातचीत के दौरान उसकी आंखों में आंसू साफ दिखाई दे रहे थे। वह टूटा हुआ व्यक्ति लगता था क्योंकि उसके विश्वास को धक्का लगा था न केवल अपनी बेटी पर, बल्कि उन धर्म निरपेक्ष विचारों पर भी जिन्हें वह मानता था। जिस व्यक्ति ने हमें इस पिता से मिलवाया उसने बताया कि इसके रिश्तेदार उसे अपने समाज से बाहर करने वाले थे क्योंकि उसने अपनी बेटी को वापिस लाने के लिये कोई कार्यवाही नहीं की यद्यपि यह समझना कठिन है कि वह क्या कर सकता था



क्योंकि वह 18 साल से अधिक की थी, कानूनी तरीके से शादी की थी और ध र्मान्तरण किया था और जाहिर तौर पर संतुष्ट लगती थी। हमें सूचित करने वाले ने बताया कि सामाजिक तौर पर दाग लगने के कारण वह स्वयं, उसकी पत्नी और छोटी बेटी भी धर्मान्तरण कर सकते थे। पर उसने बताया कि वह अपने रिश्तेदारों से मेलमिलाप समझोता करने में सफल रहा और धर्मान्तरण से बच गया।

**नोट-2**

यहाँ एक चिन्ता का विषय है कि प्रचलित पद्धति यह है कि धर्मान्तरित बेटी (धर्मान्तरण के उत्साह में अपने को सम्बन्धित धर्म का सच्चा विश्वासी साबित करने हेतु) अपनी छोटी बहन को भी अपने कदमों पर चलने के लिए प्रेरित करेगी और चाहेगी कि वह भी धर्मान्तरण कर ले और मुसलमान के साथ भाग जाये। वह अपनी माँ और बहन के साथ फोन पर हमेशा सम्पर्क में रहती है।

## साक्षात्कार - 3 -एक बैंक अधिकारी माँ का जिसके बेटे को आतंकवादी बना दिया गया

मेरा पुत्र एक शान्त स्वभाव एवं मासूम बच्चा था, पढ़ाई में हाईस्कूल तक अच्छा विद्यार्थी था। जब वह ग्याहरवीं कक्षा में गया, वह गन्दे दोस्तों की कम्पनी में पड़ गया। उसकी कक्षा का एक दोस्त वहाँ के स्थानीय मुस्लिम गुण्डे का रिश्तेदार था। वह लड़का मेरे बेटे को गलत रास्ते पर धकेलने लग गया, जबकि वह स्वयं पढ़ाई में ठीक चल रहा था। इनमें से कुछ ठग पकड़े गये और जेल चले गये, जिन्हें टीवी पर दिखाया गया, मेरा बेटा इन सबको जानता था।

मेरा बेटा पढ़ाई लिखाई को नजरअन्दाज करने लग गया और बिल्कुल बदल गया। घर में वह उग्र हो गया, मुझे और अपने पिता को मारने लग गया। उसने कई बार अपने पिता पर चोट कर घायल कर दिया और मुझ पर भी आक्रमण किया। एक बार उसने मेरा गला दबाने की कोशिश भी की। वह अपना सारा समय पिक्चर हाल में व्यतीत करने लग गया। उसने अपनी क्लास में जाना छोड़ दिया, परीक्षा में भी नहीं बैठा। वह अब 24 साल का हो चुका है परन्तु पढ़ाई में वहीं पर अटका हुआ है। वह 18 साल की उम्र में किसी तरह से बहुस्तरीय मार्केटिंग कम्पनी में नौकरी करने लग गया और उसके बाद जिस चीज में उसे दिलचस्पी थी वह था पैसा। वह पलसर मोटरसाइकिल खरीदना चाहता था और उसने भारी भरकम जबरदस्त लगने वाली मोटरसाइकिल पसन्द की। उसके दोस्त इस

मोटरसाइकिल का दुरूपयोग करते थे, यहाँ तक कि हमें हजारों रुपये उसकी मरम्मत पर खर्च करने पड़े।

इसके बाद उसने हमसे लैंसर कार मांगनी शुरू कर दी, उससे कम के लिये राज़ी नहीं हुआ। अवश्य ही यह मांग उसके दोस्तों की रही होगी जो किसी खास मकसद से इस कार का इस्तेमाल करना चाहते थे। मैंने कहा हमारी हैसियत लैन्सर खरीदने की नहीं है, ''मारुति स्विफ्ट'' ले लो। वह उससे संतुष्ट नहीं था। एक दिन उसने स्वयं को घर में कैद कर लिया और घर का सारा फर्नीचर नष्ट करना शुरू कर दिया, पूरे घर में शीशे के टुकड़े बिखेरने लगा। वह रुकने को तैयार नहीं था जब तक कि हम उसे लैंसर न दिला दें। निराश होकर मैंने अपने भाई को बुलाया, वह आया, उसने मेरे बेटे को इतना पीटा कि क्षणिक ऐसा लगा कि उसे होश आ गया।

जब मैं और मेरे पति काम पर बाहर होते वह लोगों को घर पर लाने लगा। पड़ोसियों के ध्यान में आने लगा कि वह हमेशा संदिग्ध लगने वाली औरतों को लाता है और उन्हें सन्देह होने लगा कि हमारे घर में कोई वैश्यावृत्ति का धन्धा करने वाला गिरोह काम कर रहा है। एक बार पूरी कालोनी के लोगों ने हमारे घर को घेर लिया और घर के अन्दर घुसे हुये लोगों को निकलने पर मजबूर कर दिया। इससे हमें पड़ोस में बेइज्जत होना पड़ा। हम अपने बेटे को हमेशा पैसा देते रहते थे ताकि कोई बड़ा काण्ड न कर बैठे।

मुझे पता चला कि मेरा बेटा अवैध ड्रग्स लेता है। उसके व्यवहार में परिवर्तन अचानक आ गया था। इससे पहले वह इतना सज्जन था कि एक छोटे से घाव से भी डरता था। गैंग से मिलने के बाद वह बिल्कुल बदल गया। एक दिन उसने मुझे बताया कि उसके होंठ में गहरा जख्म बन गया है जिसके कारण वह चिन्तित है। मुझे स्मरण हुआ मैंने किसी नशेड़ी के होठ पर ऐसा जख्म देखा था। वह किसी नीम हकीम के पास गया जिसने उसे इतनी स्ट्रांग दवाई दे दी कि वह हमेशा कांपने लग गया और उसके हाथों की पकड़ बच्चों की तरह कमजोर पड़ गई। मुझे उस दवाई का नाम याद है। अन्ततः हम उसे एक उचित मनोरोग विशेषज्ञ के क्लीलिक लेकर गये, उसने उसे मादक द्रव्यों से घृणा होने वाली चिकित्सा दी। नर्स ने बताया कि जो दवाई नीम हकीम ने दी थी उससे इसकी मौत भी हो सकती थी और जिस नशीली दवाई का वह आदी था वह बहुत खतरनाक है। मेरा ख्याल है इन दवाईयों का ही असर था कि वह राक्षस बन गया था, अपनी पहचान खो बैठा था।



मुझे बेहतर क्या करना चाहिये था? जैसे ही उसके व्यवहार में परिवर्तन आना शुरू हुआ था मुझे चौकन्ना हो जाना चाहिये था। वह पहले बड़ा अच्छा गाता था, शास्त्रीय संगीत भी। मैं और मेरी बेटी भी गाती थी। अचानक इसमें उसकी दिलचस्पी समाप्त हो गई और कपड़ों पर खूब पैसा खर्च करने लग गया। वह हमसे कुछ हजार रुपये मांगता और अगले दिन और ज्यादा मांगता। हमें नहीं पता था कि पैसे कैसे और कहाँ जाते थे। हम परिवार की प्रतिष्ठा का विचार कर उसे पैसा दे देते थे।

**नोट -**

हमें खबर देने वाले ने बताया कि यह युवा एक इस्लामिक गैंग से जुड़ गया है जिसने इसकी पहचान का उपयोग सिम खरीदने हेतु किया था जिसका इस्तेमाल विस्फोट के लिए विशेषकर बैंगलोर में किया गया था। इन युवाओं को जाहिर तौर पर लड़की द्वारा सेक्सुअल फेवर दिखा कर गैंग में शामिल किया जाता है। लड़की भी पहले हिन्दू ही थी जिसे मुसलमान बनाकर युवाओं को फंसाने हेतु उपयोग किया जाता था। **(इसका और विवरण संलग्नक II में जन्मभूमि पत्रिका के लेख 'शिकार फांसने में दो हफ्ते' देखें)**

## साक्षात्कार 4 - एक युवा का जो जबरन कराई जा रही शादी से भाग गया

मैं एक गरीब परिवार से हूँ। मेरे दो बड़े भाई और माँ बाप हैं। जब मैं 7 वीं कक्षा में पढ़ रहा था तो मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ी क्योंकि माँ-बाप के पास फीस देने के लिये पैसे नहीं थे। पढ़ाई छोड़ने के बाद मैं कोज़ीकोड में यतीमखाने (मुस्लिम अनाथालय) के पास में घरों की पुताई का काम तीन सौ रुपये रोज की मजदूरी पर करने लगा। यतीम खाना मुकद्दर नाम के स्थान का भाग था जहाँ धर्म परिवर्तन की विविध गतिविधियाँ चलती हैं। इस अनाथालय की एक युवती मुझ से बातचीत करने लग गई। मुझे वह आकर्षक नहीं लगती थी पर वह मेरे पीछे पड़ी रही। वह बोली कि वह मुझ से शादी करना चाहती है और यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मुझे अच्छी नौकरी मिल जायेगी और अच्छा वेतन मिलेगा।

इस अनाथालय में लगभग 40 महिलायें थी और लगभग सबकी सब हिन्दू से मतान्तरित थी। इनमें से कईयों ने मुझे इस औरत से शादी करने हेतु प्रोत्साहित

किया। जो हिन्दू से मुसलमान बनी थी उसकी माँ ने पहले किसी ईसाई पुरुष से शादी की थी पर बाद में इस्लाम में मतान्तरित हो गयी और एक मुस्लिम मछुआरे से शादी कर ली थी, और इसलिए अपनी बेटी को (जिसका धर्म भी परिवर्तित हो चुका था) मुस्लिम अनाथालय में भेज दिया था।

इस लड़की ने मुझे बताया कि अगर मैं मुसलमान बन कर उससे शादी कर लूं तो मुझे दो लाख रुपये दिये जायेंगे। मैं सहमत हो गया। मुझे पोन्नानी ले जाया गया जहाँ धर्म परिवर्तन करने का बहुत बड़ा केन्द्र है। यहाँ हर समय झुण्ड के झुण्ड लोग आते जाते हैं। किसी भी समय में सैकड़ों की संख्या में लोग धर्मान्तरण करते हैं। पचास लोग धर्मान्तरित होने के बाद जैसे ही स्थान छोड़ते हैं, अन्य पचास स्थान ग्रहण कर लेते हैं। 60 दिन तक धार्मिक उपदेश दिये जाते हैं और तत्पश्चात् आपको प्रमाण पत्र दिया जाता है कि आप एक मुसलमान हैं।

मैंने भी यह सब किया। तत्पश्चात् मेरी सुन्नत (लिंग के आगे का मांस काटना) की गई और औपचारिक रूप से इस लड़की से शादी कर दी गई। परन्तु मुझे वह रकम नहीं दी गई जिसका वायदा किया गया था। बल्कि जो भी मैं कमाता था सब इस औरत को देना पड़ता था। यहाँ तक कि उसने मेरी सोने की चेन भी यह कह कर ले ली कि मुस्लिम व्यक्ति के लिये सोना पहनना उचित नहीं होता। इस प्रकार मैं पहले से भी ज्यादा गरीब हो गया। मै अपने माँ-बाप को पैसा नहीं भेज पाया। यह सोचकर कि मेरी माँ की मेरे गायब हो जाने पर कैसी हालत हो रही होगी और पैसा भी नहीं भेज पा रहा हूँ, मैं परेशान हो गया। तब मुझे पता चला कि मेरी माँ बीमार है और मैंने भाग जाने का निश्चय कर लिया। अगर मेरी माँ मर गई तो मुझे दूसरी माँ नहीं मिल सकती जबकि पत्नी दूसरी भी मिल जायेगी अगर मैं इसे खो भी दूँ। मैं इस औरत को पसन्द भी नहीं करता। वह तीन महीने से गर्भवती थी।

मैं एक रात दीवार फान्द कर भाग गया। मेरे पास मात्र 200 रुपये थे जो इस औरत से छिपा कर रखे थे। मैंने ट्रेन का टिकट लिया और इस शहर में आ गया। मैं अपने माँ-बाप के घर जाने से डर रहा हूँ क्योंकि निश्चित रूप से ये जो लोग मुझे ढूंढते हुए यहाँ आयेंगे और ले जायेंगे। मैं अपनी माँ को मात्र इतना बताना चाहता हूँ कि मैं नरक से निकल आया हूँ।

कोल्लम जिले में वह गाँव जहाँ मैं रहता था वह लगभग पूरा का पूरा मुस्लिम गाँव है और लगभग सभी लोग हिन्दू से नये मतान्तरित हैं।



## परिशिष्ट II : मलयाली समाचार पत्रों की रिपोर्टिंग

मलयालम भाषी मीडिया आंग्ल भाषी मीडिया की तुलना में इस विषय पर अधिक सचेत है। मलयाली मीडिया ने कई गहन विवेचनायें प्रकाशित की हैं। यद्यपि ऐसी अफवाहें गर्म थी कि शिक्षण संस्थानों में संगठित रूप से धर्मान्तरण की गतिविधियाँ चल रही है, परन्तु इस विषय पर ठोस रिपोर्टिंग मीडिया ने 2009 से शुरु की है।

**केरल कौमुदी, 9 फरवरी : लव जिहाद का उद्देश्य केरल में विवाह के माध्यम से धर्मान्तरण भी है।**

केरल में भी लड़कियों को प्रेम जाल में फंसाकर शादी कराने वाला एक संगठन 'लव-जेहाद' सक्रिय है। पता चला है कि इस संगठन ने सैकड़ों लड़कियों का इस तरीके से (विवाह) धर्म परिवर्तन किया है।

पुलिस की स्पेशल ब्रांच ने इस मसले पर जांच तब शुरू की जब उनके ध्यान में 4000 से अधिक शादियाँ आई जो की मात्र 6 माह में पंचायत की डायरेक्टरी में दर्ज की गई थी। ऐसी शादियाँ सबसे ज्यादा मल्लापुरम में दर्ज की गई। कोज़ीकोड और कन्नूर मल्लापुरम से थोड़ा ही पीछे है। ऐसी शादियाँ अन्य जिलों में भी होने की रिपोर्ट मिली है।

यह संगठन एक धर्म विशेष के युवा लड़कों के एक समूह का इस्तेमाल कर रहा है। उनको दूसरे धर्म की लड़कियों को पटाने के निर्देश दिये जाते हैं। इस संगठन में भर्ती होने वाले को निर्देश दिए जाते हैं कि वे दो सप्ताह के अन्दर लड़की के साथ रोमान्स करे और उसको धर्मान्तरण के लिए मानसिक परिवर्तन करें और 6 सप्ताह के भीतर शादी करें। विशेष निर्देश भी दिये गये हैं कि कम से कम चार बच्चे पैदा करें। उनको आदेश है कि अगर शिकार 2 सप्ताह के भीतर न फंसे तो उसे छोड़ दूसरी लड़की के पीछे लग जायें। इस काम के लिए आवश्यक धन विदेशी सूत्रों से प्राप्त होता है। यह संगठन केरल में विगत कई वर्षो से सक्रिय है। इस कार्य के लिए नियुक्त लोगों को आधुनिक उपकरण जैसे मोबाइल फोन, मोटर बाइक और सुन्दर परिधान मिशन की सफलता के लिए दिए जाते हैं। प्रत्येक जिले में मिशन को संचालित करने के लिए एक क्षेत्रिय चेयरमेन होता है। कॉलेज में प्रवेश के पहले वे धर्मानुसार लड़कियों की सूची बनाते हैं।

**मंगलम्, 9 फरवरी**

**मैंगलूर पढ़ने गई बड़ी संख्या में छात्रायें आतंकवाद के रास्ते पर**

**'पिछले महीने कोजीकाड के विवादास्पद प्रतिष्ठान में 40 का धर्म परिवर्तन'**

'बड़ी संख्या में छात्रायें जो नर्सिंग का कोर्स करने मैंगलौर गई, धर्मान्तरण के माध्यम से आतंकवाद में संलिप्त हो गई हैं। कोट्टायम, कन्नूर और पठानम्थिता जिलों के कई ईसाई और इजावा जाति की छात्रायें आतंकवाद के जाल में फंस गई हैं। खुफिया एजेन्सियों के अनुसार तिरुवला और पाला क्षेत्र की कई छात्राओं का धर्म परिवर्तन कर दिया गया है। मुवाट्टुपुजा की एक धर्मान्तरित लड़की जो मैंगलौर में नर्सिंग की छात्रा थी, कोजीकोड के विवादास्पद स्टडी सेन्टर में गई थी और वहाँ से गायब हो गई , उसका अभी तक कुछ अता पता नहीं चला है। यह छात्रा उसी संस्था से गायब हुई थी जहाँ पर वर्गीज जोसेफ उर्फ मोहम्मद यासीन का धर्मान्तरण हुआ था। एर्नाकुलम निवासी यासीन/जोसेफ को कश्मीर में फौज [20] ने मार गिराया था।

संस्था का कहना है कि लड़की अपनी इच्छा से धार्मिक शिक्षा के लिये आई थी और अपनी इच्छा से संस्था से चली गई। खुफिया तंत्र को पता चला है कि मात्र पिछले ही महीने 40 लोगों का इस संस्था में धर्म परिवर्तन कराया गया था। इनमें से 32 हिन्दू थे और 8 ईसाई थे। 6 कर्नाटक और आन्ध्रप्रदेश के थे और शेष केरल के थे। खुफिया एजेन्सियाँ बैंगलोर में उस व्यक्ति पर नजर रखे हुए है जो पिछले पाँच सालों से छात्राओं को धर्मान्तरित कर रहा है। जब पुलिस जाँच को सख्त किया गया तो यह समूह मैंगलोर शिफ्ट कर गया। एक समुदाय विशेष मैंगलोर में दो कॉलेज चला रहा है जहाँ विशेषत: बहुत कम शुल्क लिया जाता है जिस कारण छात्र इस ओर आकर्षित होते हैं।

खबर मिली है कि युवा लोग छात्राओं के साथ रोमान्स का नाटक करके उनसे शादी करते हैं और धर्म परिवर्तित करते हैं। जो इस प्रेमजाल में फंस जाती हैं वे

*20. केरल के कई मुस्लिम, ईसाई से धर्मान्तरितों सहित, जो पहले अपराधिक गतिविधियों वाले गैंग में थे, को वगामन क्षेत्र में और अन्य पश्चिमी घाटों के जंगलों में हथियारों की ट्रेनिंग दी गई थी और बड़े स्पष्ट आदेशों के साथ कश्मीर भेजे गये थे कि वे भारतीय फौज के जवानों को मारेंगे और पाकिस्तान के घुसपैठियों की मदद करेंगे।*



कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं। वे धार्मिक अध्ययन केन्द्रों में प्रशिक्षित की जाती हैं और अन्धविश्वासी बन जाती हैं। खुफिया तंत्रों के अनुसार उनमें से कुछ को आत्मघाती दस्ते के तौर पर इस्तेमाल किये जाने की सम्भावना है। जो आर्थिक रूप से पिछड़े हैं उनको पैसे का प्रलोभन भी दिया जाता है।

**मातृ-भूमि, 29 अगस्त : 'कोर्ट ने आदेश दिया कि जिस माँ और बच्चे का धर्म परिवर्तन किया गया है उन्हें कोर्ट में हाजिर किया जाये'**

केरल हाई कोर्ट ने पुलिस को आदेश दिया है कि माँ और उसके तीन बच्चे जिनको धर्म परिवर्तन के लिए पोन्नानी[21] ले जाया गया था उन्हें कोर्ट में पेश किया जाये।

कलामासरी के जोय ने कोर्ट में अर्जी दी थी कि उसकी पत्नी और बच्चों का अपहरण करके जबरदस्ती कुछ लोगों के समूह ने अपने पास रखा हुआ है, उसका समाधान किया जाये। याची ने आरोप लगाया कि तीन युवा लड़के जो कलामासरी में उसके (जोय) घर के पास किराये में रहते थे उन्होंने उसकी पत्नी और 3, 6 और 8 साल की तीन बेटियों को पौन्नानी जाने के लिये प्रेरित किया, उसको वहाँ एक अच्छी नौकरी दिलाने का आश्वासन दिया। पुलिस के अनुसार मौनाथुल इस्लाम ऐसोशियेशन इसमें संलिप्त थी।

वह महिला 10 अगस्त को बच्चों सहित अपने घर से अपनी माँ के घर जाने के लिये निकली। 15 अगस्त से वह वहाँ से गायब थी। पुलिस के अनुसार याची (पति) 17 अगस्त को पोन्नानी पहुँचा पर उसे पत्नी और बच्चों से मिलने नहीं दिया गया। जब उसने बहुत मिन्नतें की तो उसे मात्र 5 मिनट की अवधि के लिये, दूसरों की उपस्थिति में, मिलने की इज़ाज़त दी गई। याची आगे यह बताता है कि मौनाथुल इस्लाम एसोशियेशन वह संस्था है जो इस्लाम में धर्म परिवर्तन कराती है। कोर्ट ने आदेश दिया है कि औरत और बच्चों को सोमवार को कोर्ट में पेश किया जाये।

*21. पोन्नानी मलापुरुम जिले का वह स्थान है जहाँ हिन्दुओं को सुन्नत और धर्म परिवर्तन के लिये हमेशा ले जाया जाता है। वहाँ एक मौनम नाम का केन्द्र है जहाँ एक समय में 2500 लोगों को रखने की व्यवस्था है। दूसरा धर्मान्तरण का सबसे बड़ा केन्द्र कोज़ीकोड में मुकद्दर है।*

**मलयाली मनोरमा, 31 अगस्त : 'लव बम फटने वाला'**

**''वह हर जगह शिकार बनी'' और हम लोग परिसर के दीवारों में छुपे प्रेमजाल की तहकीकात जारी रखे हुए हैं।''**

तीन लड़कियों ने पूछा 'क्या मुझे तुम्हारे साथ जंगल में तुम्हारे जानवरों की चौकसी करने के लिये' जाना होगा (यह 1920 की एक मलयाली कविता है जो प्रेमियों में बड़ी प्रसिद्ध है)

इस कविता में युवा कहता है ''नहीं, नहीं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिये, हमें अपने आपको भूलना नहीं चाहिये।'' लेकिन इन लड़कियों को 'न' कहने वाला कोई नहीं था। इनको उन स्थानों पर ले जाया गया जहाँ नहीं जाना चाहिये था और ऐसी परिस्थितियों से जूझना पड़ा जिनसे सामना नहीं होना चाहिये था। जब तक उन्हें अपनी गलती समझ में आई, उनके और उनके माता-पिता के आँसुओं की नदी बह चुकी थी।

जिन जंगलों में ये लड़कियाँ गई वहाँ आतंकवाद की छाप थी। इन्हें प्रतिबन्धित संगठनों के विचार और गतिविधियाँ सिखाई गई। इनको फंसाने के लिये हर प्रकार के हथकण्डे अपनाये गये जिनमें कपड़े और पैसे शामिल थे जो उन पर पानी की तरह बाहये गये। इनमें से कुछ को समझ आ गया कि वे बड़ी फिसलन वाली ढाल पर खड़ी है और भागने में सफल हो गई। परन्तु ज्यादातर इस बात से अनभिज्ञ हैं कि उन्हें बलि का बकरा बनाया जा रहा है, इनकी संख्या बढ़ रही है।

आकर्षण आतंकवादी संगठनों की नई चाल है। कॉलेज की छात्रायें उनके निशाने पर हैं। पद्धति क्या है? स्मार्ट युवा लड़के, ढेर सारा धन, गाड़ियां, कपड़े। मात्र त्रिवेन्द्रम जिले में ही इनके पास एक स्कोर्पियो कार और 8 मोटरसाइकिलें हैं। इस सब के लिये नियमित रूप से बैंक के कुछ खाते में धन भेजा जाता है।

हालांकि इन सबके संकेत उच्च अधिकारी को दिये गये थे, परन्तु पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। पुलिस की जाग तब खुली जब एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की एक रिश्तेदार इसमें फंसी। त्रिवेन्द्रम कैण्ट के सहायक कमिश्नर के.एस. गोपा कुमार और उनकी टास्क फोर्स ने कई स्तब्ध कर देने वाले तथ्यों को उजागर किया। दो लड़कियों को उनके जीवन वापिस देने में भी सफल हुए। उन्होंने यह उद्घाटित किया कि आरोपी केरल के बाहर मैंगलौर, बैंगलौर और नगरकोइल में सक्रिय थे।



प्रथम मामला : 25 वर्षीया त्रिवेन्द्रम वासी

दूसरा मामला : 23 वर्षीया कोट्टारक्करावासी, (वरिष्ट पुलिस अधिकारी के रिश्तेदार और पहले केस की मित्र एवं रूम-मेट)

तीसरा मामला : 20 वर्षीया मैंगलोर वासिनी

जब उसे नर्सरी स्कूल में नौकरी मिली उसने सोचा कि वह अपने गरीब परिवार की मदद कर पायेगी। उसका वेतन बहुत कम था (सूर्या टी.वी. चैनल में उसके बयान के अनुसार 2500/- रुपये) और उससे वायदा किया गया था कि उसे 1000 रुपया और दिया जायेगा अगर स्कूल अधिकारी द्वारा भेजे गये स्थान पर वह प्रशिक्षण प्राप्त कर लेगी। परन्तु उसे पता चला कि प्रशिक्षण बच्चों की देखभाल से सम्बन्धित न होकर आतंकवाद से सम्बन्धित है। उसको खुली धमकी मिलने लगी कि उसे गोली मार दी जाएगी। अन्ततः सहकर्मियों के दबाव के कारण एक युवा लड़के के साथ केरल जाने के लिए मजबूर हो गयी।

उसे कोज़ीकाड में समुद्र तट के पास के एक तीन मंजिला भवन में रखा गया, उसके पास इसके अलावा और कोई विवरण नहीं है। बाहरी दुनियाँ से उसका कोई सम्पर्क नहीं था। मोबाइल का सिम कार्ड निकाल कर नष्ट कर दिया गया था। उसे बाद में पता चला कि उसी सुरक्षित घर में उसकी तरह और भी बहुत लड़कियाँ हैं। हर रोज ट्रेनिंग के नाम पर उनके दिमाग को कुछ विशेष विचारधारा के लिए ब्रेन वाश किया जाता था।

एक दिन उसे अपने परिवार से सम्पर्क करने का मौका दिया गया। उसे बस इतना ही बोलने की अनुमति दी गई ''मैं अपने एक दोस्त के पास हूँ और मेरे विषय में जांच पड़ताल करने की जरूरत नहीं है।'' इतना बोलते ही मोबाइल बन्द कर दिया गया। इस मोबाइल नम्बर इस्तेमाल करने पर लड़की के पिता ने मैंगलौर पुलिस को शिकायत लिखाई। पुलिस, उसके पिता और दोस्त कोजीकोड पहुंचे और उसको बचाया। अब वह 28 दिन की कैद के प्रभाव से धीरे-धीरे उभर रही है।

इन तीनों मामलों में, माता पिता के प्रयासों से ये लड़कियाँ बरामद कर ली गई। पर उस हालत में क्या होगा यदि माता पिता उसे वापिस स्वीकार करने को इच्छुक न हो यद्यपि वह कितनी भी दयनीय स्थिति में क्यों न हो। ऐसी हालत उस

लड़की की है जो वांचीयूर, त्रिवेन्द्रम से गायब हुई है। जब उसको घर सम्पर्क करने का मौका मिला, वह गिड़गिड़ायी कि "मैं नरक में हूँ कृपया मुझे बचा लो।" उसके भाई का निष्ठुर उत्तर था "तुमने अपनी मर्जी से हम सबको छोड़ा था अत: अपनी मर्जी का फल स्वयं भुगतो। मेरे लिये मुसीबत मत बनो।" इसके बाद से इस लड़की की कोई खबर नहीं है। परिवार ने उस मोबाइल नम्बर को ढूंढने की जरूरत भी नहीं समझी अत: पुलिस के पास कोई सुराग नहीं है। ऐसा माना जाता है कि 500 लड़कियाँ जो केरल के आतंकवादियों के जाल में फँस गई थी उसमें से 120 सभी आकर्षणों को छोड़कर वापिस आ गई हैं।

अब पाठकगण सोचें कि जब आठ भुजाओं वाला आतंकवाद रोमान्स की शक्ल में कॉलेज परिसर तक फैल गया है तो क्या ये बच्चियाँ सुरक्षित हैं। स्पष्ट उत्तर है नहीं।

**दी न्यू इण्डियन ऐक्सप्रैस : 4 सितम्बर, बलवीर पुंज द्वारा : "असली दोषी राजनैतिक वातावरण है।"**

"हमारी खुफिया एजेन्सियों की बदहाली का पता चलता है कि जेहादी संगठन 4000 भारतीय लड़कियों का विगत कुछ वर्षों में अपहरण करने में सफल हो चुके हैं।"

मुस्लिम लड़के हिन्दू लड़कियों को प्रेम के लिये नहीं एक इस्लामी षड़यन्त्र के तहत फंसाते हैं। इस आरोप को संघ परिवार का खतरनाक साम्प्रदायिक प्रोपगैण्डा कह कर दरकिनार कर दिया जाता रहा है। परन्तु केरल पुलिस की हाल की जाँच से इन कुरूप और रुग्ण घातों का विवरण सामने आ गया। मलयालम समाचार पत्र मलयाला मनोरमा के 31 अगस्त के अंक में इस विषय पर एक विस्तृत रिपोर्ट छपी कि किस प्रकार पाकिस्तान आधारित आतंकवादी संगठन योजनापूर्वक भारत के विभिन्न समुदायों की कॉलेज छात्राओं को फंसाने हेतु बढ़ावा एवं आर्थिक सहयोग देकर उन्हें अपने कार्यक्रम के लिये तोप का चारा बना रहे हैं। रिपोर्ट में इन लड़कियों को लव-बम्ब की संज्ञा दी गई है।

तरीका बड़ा चालाकीभरा है। आतंकवादी संगठन केरल में मुस्लिम लड़कों को कॉलेज की लड़कियों को प्रेम पाश में फँसाने के लिये इस्तेमाल करते हैं। खूबसूरत और आकर्षक व्यक्तित्व वाले लड़कों को चुना जाता है और उन्हें कार, मोटरसाइकल, बेशकीमती कपड़े के लिए आर्थिक सहयोग और बहुत सारी नकदी



दी जाती है। उनका काम है कि समूह में घूमना, अपना शिकार चुनना और फिर उन्हें उनके साथ भागने के लिये प्रेरित करना, इस आश्वासन पर कि वे शादी करके विदेश में ऐश के साथ रहेंगे। कुछ दिन तक प्यार करने का ड्रामा करते हैं और लड़की सहज ढंग से विश्वास करने लगती है कि उसे सपनों का राजकुमार मिल गया है। जब वे घर से भाग जाती है तो नोटरी के समक्ष शादी पंजीकृत कर ली जाती है और इसके बाद लड़की को एक स्थान से दूसरे स्थान पर गुप्त तरीके से ले जाते रहते हैं। लड़की विश्वास करने लगती है कि उसे ऐसा इसलिये करना पड़ रहा है ताकि वह माँ-बाप से बच सके जो उसकी तलाश कर रहे हैं। छुपने के स्थान वही होते हैं जहाँ बहुत बड़ी संख्या में मुसलमान रहते हैं। पीड़ितों को किसी से सम्पर्क करने की अनुमति नहीं रहती है। हर समय उसके दिमाग में वही विषय भरा जाता है जो आतंकवाद और जेहाद को बढ़ावा दे ताकि उनके धर्म की विजय हो।

यद्यपि काफी वर्षों से यह धन्धा चल रहा है और गायब हो रही लड़कियों के बारे में कई शिकायतें पुलिस में दर्ज कराई गई पर पुलिस ने इन शिकायतों को यह कहकर दरकिनार कर दिया कि लड़की स्वयं भागी है अत: वे इस मामले में कुछ नहीं कर सकते। यह धन्धा तब रौशनी में आया जब उनमें से एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी की बेटी निकली और दूसरी लड़की किसी तरह अपने माँ-बाप तक अपनी वास्तविक परिस्थितियों की सूचना भेज पाई। दूसरे मामले में लड़की के माता पिता हाईकोर्ट में प्रत्यक्षीकरण प्रार्थना पत्र (Habeas Corpus) लेकर गये और कार्ट ने पुलिस को आदेश दिया कि लड़की को कोर्ट में पेश किया जाए।

जांच से पता चलता है पूरे भारत से लगभग 4000 लड़कियों को सम्भावित आतंकवादियों और आत्मघाती दस्ते के तौर पर इस तरह से (उनकी इच्छा के विरुद्ध) भर्ती किया गया। मात्र केरल में ही, पुलिस के अनुमान के अनुसार पांच सौ से ज्यादा शिकार बनी हैं। अगर पाकिस्तान के आंतकवादी संगठन 4000 भारतीय लड़कियों को पिछले कुछ सालों में अपहरण करके प्रशिक्षित कर सकते हैं तो इससे पता चलता है कि हमारा खुफिया तन्त्र कितना कमजोर है। पर शायद यह न्याय संगत नहीं है कि हम पुलिस और खुफिया पुलिस पर ही दोषारोपण करें। प्रचलित राजनैतिक वातावरण जो हिंसक जेहाद को फैलाने वालों को बच्चों की तरह लाड देता है वही वास्तविक दोषी है।

**जन्म भूमि : धर्म परिवर्तन के लिये नजरबन्दी : लड़कियों को उनके माँ बाप को सौंपा गया।**

दो लड़कियाँ जिन्हें अवैध रूप से बन्दी बना कर रखा हुआ था और उन पर इस्लाम में मतान्तरण के लिए दबाव बनाया जा रहा था उन्हें कोर्ट ने माँ-बाप की हिफाजत में छोड़ दिया है। मामले की दुबारा सुनवाई 8 सितम्बर को होगी। कोट्टाक्करा और त्रिवेन्द्रम के निवासियों की प्रत्यक्षीकरण प्रार्थना पत्र के आधार पर कोर्ट ने प्रतिवादियों को नोटिस जारी किया था तद्नुसार उन्होंने लड़कियाँ कोर्ट में पेश की। याचिकाकर्ता की बेटियों ने पट्टनमथिट्टा से एमबीए पूरा किया था। उनके कॉलेज का पथानमिथता निवासी एक सीनियर लड़के शहनशाह पर लड़कियों को अवैध ढंग से निरुद्ध करने का आरोप था। जस्टिस आर बसन्त और एम सी हरीरानी की खण्डपीठ ने प्रार्थना पत्र को सुना। लड़कियाँ 18 जुलाई की प्रातः ही **गायब हो** गई थी।

कोर्ट का नोटिस प्राप्त होने पर कोथुवनाल (Kothuvanal) के शहनशाह और सिराजुदीन कोर्ट में पेश हुए। उन्होंने कोर्ट में वे कागजात भी पेश किये जिसमें लड़कियों की उनके साथ शादी करने की रज़ामन्दी थी। परन्तु पुलिस ने बताया कि शादी के ये कागजात फर्जी हैं और यह जाँच करना आवश्यक है कि कहीं इन लड़कियों का जबरन धर्म परिवर्तन के लिये तो अपहरण नहीं किया गया। अभियोजक पक्ष ने यह भी बताया कि आरोपित लोगों के आतंकवादी संगठनों के साथ सम्बन्धों की भी जाँच चल रही है। अन्ततः कोर्ट ने लड़कियों को अपने माँ-बाप की निगरानी में छोड़ने का आदेश दिया। कोर्ट ने 21 तारीख को यह आदेश भी दिया कि लड़कियों को अपनी स्वेच्छानुसार उपासना करने और खाने की पूरी स्वतन्त्रता होगी।

जब कल कोर्ट सुनवाई कर रही थी तो कोर्ट ने लड़कियों को शहनशाह और सिराज्जुदीन से बातचीत करने का मौका भी दिया परन्तु वे उनसे बातचीत नहीं करना चाहती थी। उन्होंने कहा कि वे समझ गई हैं कि वे बेवकूफ थीं। हालांकि कोर्ट ने इन लड़कियों से कैमरा में भी पूछा कि कहीं वे किसी दबाव या धमकी के कारण तो पलट नहीं रही हैं। लड़कियाँ अपनी बात पर दृढ़ थी कि वे आरोपियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहती।



**जन्म भूमि 18 सितम्बर लेखक के एन जीनेश :**

1. **रोमान्स, सैक्स, शिकार :** "जब तक लड़की को समझ में आता कि वह दूसरे धर्म की लड़कियों को झूठे प्रेमालाप करने में सिद्धहस्त व्यक्ति का शिकार होकर धर्म परिवर्तन केन्द्र में पहुँचा दी गई है वो (रोमियो) दूसरी लड़की के शिकार के लिये निकल पड़ता था। यह त्रिवेन्द्रम की कोई विरली घटना नहीं है। यह लव जिहाद 1300 साल से चल रही मुस्लिम योजना का नवीनतम चेहरा है जिसके अन्तर्गत वे गैर मुसलमानों को काफिर समझकर खत्म कर रहे हैं।

कोयम्बतूर की आर.ई.सी. की छात्रा का नजदीक के सी एन एस कॉलेज के मुस्लिम लड़के से प्रेम हो गया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि उसने आतंकवादी संगठन के प्रोत्साहन और सहयोग से ऐसा किया है। लड़की को बैंगलौर ले जाकर इस बहाने से उसे धर्मान्तरित किया गया कि उससे शादी करनी है। उसे वैस्टफोर्ट होटल में ठहराया गया परन्तु उसकी शादी की पहली रात को उसका पति नहीं बल्कि 30 और 40 वर्ष की आयु के 6-7 व्यक्ति उसके बिस्तर पर आ गये। उसके साथ लगातार सात दिनों तक रेप किया गया और अन्त में वह होटल के वेटर के सैलफोन से एक एस एम एस भेज कर भाग गयी। इस समय इस लड़की का मनोरोग विशेषज्ञ द्वारा इलाज चल रहा है।

रीजनल इन्जीनियरिंग कॉलेज, (आर.ई.सी.)कोजीकोड की छात्रा का मल्लापुरम के जलालुदीन से सैलफोन के माध्यम से प्यार हो गया। उसे मसीनागुडी, ऊटी के जैन रिज़ार्ट ले जाया गया और उसे संभोग के लिये प्रेरित किया गया। कसारगड मुद्रापुरम की एक औरत का कम्प्यूटर सैन्टर में उप्पला के सादिक द्वारा शिकार किया गया और उसे पोन्नानी ले जाया गया, उसका धर्मान्तरण किया गया और पोन्नानी के यतीम खाने में छोड़कर गायब हो गया। इसके बाद मौलवी और उसके सहायक हफ्तों तक बलात्कार करते रहे। लड़की मैंगलोर अस्पताल में भर्ती है।

2. **जेहादीनियाँ (महिला जेहादी) भी रोमान्स का मधुजाल निर्माण करती है** : साइबर कैफों और आइसक्रीम पारलरों में तथाकथित प्रेमियों के अंतरंग क्षणों की तस्वीरें गुप्त कैमरे से खींची जाती है। इनका प्रयोग लड़कियों को ब्लैकमेल तथा धर्मान्तरण करने हेतु करते हैं। ये लोग बड़ी चतुराई से महिलाओं

की कमजोरियाँ जैसे सिनेमा, आइसक्रीम, नये कपड़े, मस्ती भरे ट्रिप्स आदि का प्रयोग उनको अपने मकसद में फांसने हेतु करते हैं। इन रोमियो को बड़े दक्ष लोगों द्वारा ट्रेनिंग देकर लव-जेहाद की गतिविधियों के लिये तैयार किया जाता है।

कहा जाता है कि लव-जेहाद और उसको आर्थिक सहयोग इण्डियन फ्रैटरनिटी फोरम दम्मम (सऊदी अरब) के माध्यम से शुरू हुआ है और गल्फ के देशों से इसके लिये पैसा इकट्ठा होता है।

3. **दिल तोड़ देने वाली कहानियाँ :** केरल पुलिस क्राइम ब्यूरो के रिकार्ड के आधार पर कोच्ची की नेशनल यूनीवर्सिटी ऑफ एडवांस लीगल स्टडीज़ ने एक अध्ययन में पाया है कि 2007 में 2167 और 2008 में 2530 लड़कियाँ गायब हुई। ये मात्र वो घटनायें हैं जिनकी रिपोर्ट पुलिस में लिखवाई गई थी अत: वास्तविक संख्या कहीं ज्यादा हो सकती है।

पुलिस के अनुसार जो लड़कियाँ वैधानिक रूप से अपने प्रेमियों के साथ भाग जाती हैं और कानूनी रूप से शादी कर लेती हैं उन्हे 2-3 हफ्ते में ढूंढ लिया जाता है। परन्तु दूसरी लड़कियों का क्या होता है यह महत्वपूर्ण है। ये तथ्य लव-जेहाद की तरफ इशारा करते हैं।

केरल में लव-जेहाद की गतिविधियाँ 2006 से शुरू होने के बाद लड़कियों और औरतों के गायब होने की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हुई।

धर्मान्तरित शिकार को जेहादियों द्वारा धार्मिक अध्ययन केन्द्रों में रखा जाता है। उनको कहा जाता है वे 6 महीने बाद आकर इनसे शादी कर लेंगे और ये जेहादी अपने अगले शिकार की तलाश में निकल जाते हैं।ऐसे संकेत मिले हैं कि ये औरतें, जिनके साथ हफ्तों बलात्कार और यौन व्याभिचार किया जाता है, उन्हें नशीली दवाइयाँ खिलाकर समुद्री जहाज द्वारा बाहर भेज दिया जाता है। इन्हें कोज़ीकोड और कोच्ची क्षेत्र के सुनसान तटों से नाव पर बैठा कर मैंगलोर, गोवा, चैनैई या लक्षद्वीप भेज दिया जाता है और वहाँ से बाहर के देशों में भेज दिया जाता है। इनको गल्फ के देशों में कहने को तो काम करने के लिये परन्तु यौन दासता के लिए भेजा जाता है। कोचि और कोजीकोड के वैश्यालयों में पुलिस द्वारा मारे गये छापे में पाया गया कि ज्यादातर मुस्लिम लड़कियाँ जो पकड़ी गई वे पहले हिन्दू या ईसाई थी जिन्हें मैंगलोर या बैंगलोर ले जाकर धर्मान्तरित किया गया था।



4. **शिकार फांसने को मात्र दो हफ्ते :** कोट्टायम : बैंगलोर में हुए बम ब्लास्ट में प्रयोग किये गये 12 सिम कार्ड कलामसेरी (कोचि) के एक निवासी के नाम पंजीकृत थे। इस तथ्य ने आतंक विरोधी दस्ते (ATS) को आश्चर्य में डाल दिया। उल्लेखनीय है कि इस केस में भी लव-जेहाद सक्रिय है। एक युवक जिसके माता-पिता बैंक ऑफिसर हैं, उसको महिला जेहादियो की मदद से जाल में फंसाया गया और उसकी पहचान को आतंकवादियों द्वारा सिम कार्ड खरीदने में इस्तेमाल किया गया।

आर एम पी (एक प्रकार का चिट फण्ड) में नौकरी दिलाने के बहाने मुस्लिम लड़की ने इस युवक से पहचान के कागज ले लिये। एक मुस्लिम युवक इसमें मास्टर माइंड था जो एडापल्ली के ओबरो मॉल में एक झूठमूठ की दुकान चला रहा था। बाद में नोटिस मिलने पर उसने इसे बन्द कर दिया। कोई 22 युवा लड़के आसपास के क्षेत्र जैसे पलुरथी, काकानाड़ और इड़ा कोची से महिला जिहादियों द्वारा जाल में फंसाये गये थे।

ऐसे भी आदमी हैं जिनको जवान महिलाओं द्वारा आरकुट या इण्टरनैट चैटिंग कक्ष के माध्यम से दोस्त बनाकर आतंकवाद के तरफ आकर्षित किया गया। जब ऐसी लड़कियाँ आदमी को फंसा लेती हैं तो वे स्वयं गायब हो जाती हैं। इसके बाद आतंकवादी ग्रुप इस आदमी को हैण्डल करता है। एक जेहादी लड़की को एक नवयुवक को धर्मान्तरित करने पर एक लाख रुपये का इनाम मिलता है। लव-जेहाद के पुरुष सदस्यों को मिलने वाली राशि से यह अधिक होती है।

जेहादियों और जेहादिनियों दोनों को निर्देश होते है कि दो हफ्ते के भीतर शिकार फंसाना है। अगर दो हफ्ते के बाद भी सम्भावित शिकार आनाकानी करता है तो ऐसे शिकार को "मुश्किल" वाली सूची में डाल दिया जाता है और संगठन के नेताओं के निर्देशानुसार जेहादी नये शिकार की तलाश में आगे बढ़ जाता है। जबरन शादी के लिये 6 महीने का समय जेहादी और जेहादनी दोनो के लिये एक सा है। मुस्लिम लड़कियाँ और धर्मान्तरित मुस्लिम लड़कियाँ जो मैंगलोर, बैंगलोर, नगर कोईल से होने के कारण बहुभाषी होती हैं उन्हें ये काम दिये जाते हैं। केन्द्रीय जिला संयोजक जेहादिनियों के लिए गाड़ी और मोबाइल फोन की व्यवस्था करता है। यह उल्लेखनीय है कि पट्टनमथिता की लड़की ने कोर्ट में बताया कि जब उसे धर्मान्तरण के लिए ले जाया जा रहा था तो गाड़ी में दो औरतें भी थी।

अलप्पुजा जिले के पुन्नपरा में तीन युवाओं को पौन्नानी में इस्लामिक अध्ययन के लिये तैयार किया गया। इनमें से एक मुस्लिम औरत से शादी कर अब मुसलमान बन कर रह रहा है।

**एक नैयर** युवक जिसकी माँ प्रधानाध्यापिका है और दो अन्य जो पुराने फौजी के बच्चे **हैं, को हाल ही** में पौन्नानी में तीन महीने के लिये मजहबी प्रशिक्षण के लिये ले जाया गया। उनमें से एक को लव-जेहाद के द्वारा एक लड़की ने पटा लिया जिसने तीनों को सफलतापूर्वक धर्मान्तरण के लिए तैयार कर लिया। धर्मिक प्रशिक्षण के बाद घर लौटे इन युवाओं ने बहुत शोर मचाया कि घर से हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियां हटाई जायें। पड़ोसियों का कहना है कि इन युवाओं के पास बहुत पैसा है और इसलिये माँ-बाप उनको नियन्त्रित करने में या तो असफल हुए या नियन्त्रित करना नहीं चाहते। ऐसा विश्वास है कि उनका सम्बन्ध एन डी एफ से है।

एक जेहादी जिसका नाम जावेद गुलाम शेख उर्फ प्रनेश कुमार पिल्लई है, वह भी महिला जेहादी द्वारा आतंकवाद की ओर प्रवृत्त हुआ और उसने धर्मान्तरण कर लिया। उसको गुजरात पुलिस ने एक मुठभेड़ में मार गिराया। एक 17 साल की इशरतजहाँ और अन्य आतंकवादी अमजद हाजी और जीशान जोहर अब्दुल गनी भी एन्काउन्टर में मारा गया।

जांच एजेन्सियों के अनुसार लव-जेहाद के माध्यम से धर्मान्तरित 4000 हिन्दु लड़कियों में से कुछ को भारत के विभिन्न प्रान्तों में युवा लड़कों का धर्मान्तरण कराने हेतु नियुक्त किया गया **है।**

## जन्म भूमि : "वह गई, वापिस आई और फिर चली गई"

**'उन्होंने अप**नी बेटी की तलाश के लिये घर बेचा, उधार लिया। जब वह वापिस आई उसके पास यौन और अन्य उत्पीड़न के संस्मरणों के अलावा कुछ नहीं था, इसके बावजूद वह एक दिन फ़िर से चली गई'

यह परिवार कोट्टायम् जिले का है। दो लड़कियाँ हैं। चूंकि बड़ी लड़की मानसिक विकलांग है, माता-पिता की सारी आशायें और सपने छोटी पर ही टिके थे। छोटी का पालन पोषण एक राजकुमारी की तरह किया गया, सारा प्यार उस पर उड़ेल दिया गया। वह एक अच्छी छात्रा थी और ग्यारहवीं कक्षा में विज्ञान की



विद्यार्थी थी। घर में कुछ मरम्मत की जरूरत पड़ी। एक युवा जो मरम्मत करने आया फटाफट पूरे परिवार से उसकी दोस्ती हो गई। वह तमिलनाडु के नगर कोइल जिले का था। उसकी शादी कोट्टायाम की जवान औरत से हो चुकी थी और उसके दो बच्चे थे। एक दिन उसने छोटी से कहा, "मैं तुम्हें अपने घर ले जाऊँगा।" लड़की को बहुत गुस्सा आया और अपने रिश्तेदारों को बता दिया। उन्होंने उसकी पिटाई की।

उस दिन वह उनके घर आया और लड़की के माँ-बाप से माफी मांगी। उसने लड़की को बताया कि वह उसे अपने ही बच्चों की तरह देखता है। उन्होंने उस पर विश्वास कर लिया और मरम्मत के काम पर वापिस ले लिया। एक दिन वह बड़ी बहन सहित उसके साथ गायब हो गया। परिवार ने पुलिस में शिकायत की। क्योंकि पुलिस की कार्यवाही ढीलीढाली थी उन्होंने "प्रत्यक्षीकरण प्रार्थनापत्र" कोर्ट में दिया। कोर्ट ने आदेश दिया कि 1 मार्च 2008 को स्पेशल टास्क फोर्स का गठन करके इस 17 साल की लड़की को ढूंढा जाए। केरल के अन्दर और बाहर जाँच की गई। पुलिस को वह व्यक्ति, लड़की और उसकी बड़ी बहन उसके नगर कोइल वाले घर में मिल गये और पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया और कोर्ट ने उसे माँ-बाप को सौंप दिया और वह अपनी पत्नी और बेटियों के साथ चला गया। परिवार वालों ने उससे नहीं पूछा कि वह उसके साथ क्यों चली गई थी। न उन्होंने बेटी को भला बुरा कहा न सजा दी बल्कि पूरा प्यार दिया। जो कुछ उसने बताया वह उत्पीड़न की कहानी थी जो उसने झेला था। जब तक उसने सैक्स के लिये आत्मसमर्पण नहीं किया उसे पीटा गया और घायल किया गया।

क्योंकि लड़की के परिवार ने उसे (लड़के) पीटा था इसलिये उसने बदले की भावना से उसको फंसाया था और भगा ले गया था। लड़की के आँसुओं ने विश्वास दिला दिया कि वह उससे नफरत करती है। उसने बताया कि वह कहीं जा नहीं सकती क्योंकि लोग मुझसे भोंडे सवाल-पूछेंगे। तब तक उसे ग्यारहवीं कक्षा से निकाल दिया गया था, इसलिए माँ-बाप ने अलप्पुझा में अपने रिश्तेदार के यहाँ भेज दिया जहाँ उसने वाणिज्य की कक्षा में प्रवेश ले लिया। वह अच्छी पढ़ाई करने लग गई। उसकी शादी का प्रस्ताव एक युवक की ओर से आया जो पूरी कहानी जानता था। इसी बीच घर में एक फोन कॉल आया जिससे परिवार वाले थोड़े चिन्तित हुए पर डरे नहीं।

अगले दिन वह अलाप्पूझा से गायब हो गई साथ में वह भी। परिवार के पास अब और पैसा नहीं है कि उसको ढूंढ सके। पिछली बार तो उन्होंने घर की प्रोपर्टी बेच दी थी ताकि पैसा खर्च करके ढूंढ सकें। अब पैसा नहीं है। इसके अतिरिक्त वह 18 साल की भी हो गई है अर्थात् अपने निर्णय कानूनी रूप से ले सकती है। उसके परिवार की अब उसके लिये बस एक ही प्रार्थना है बेटी तुमने जो मार्ग चुना है, ईश्वर तुम्हारी भलाई करे।

## केरल कौमुदी : शरीना बसीर : प्रतिदिन आठ लड़कियां गायब हुई

प्रतिदिन केरल में 8 लड़कियाँ रहस्यमय ढंग से लापता हो जाती है। वे रिश्तेदारों से गुस्से या निराशा में घर छोड़ देती हैं और साधारणत: वापिस नहीं आती। जो वापिस आती हैं उनके पास आंसू और धोखा खाने की कहानियाँ होती हैं। हर वर्ष इनकी संख्या बढ़ती जा रही है। यह स्टेट क्राइम ब्रांच ब्यूरो के रिकार्ड में दर्ज नेशनल यूनीवर्सिटी ऑफ एडवान्सड लीगल स्टडीज़ के अध्ययन पर आधारित है।

गायब होने वाली ज्यादातर लड़कियाँ 14 से 19 साल की होती है। 2005 में लड़कियाँ गायब हुई जिनकी संख्या स्पष्ट नहीं है इनमें से 265 का पता नहीं चला। 2007 में 2167 लड़कियां गायब हुई जिनमें से 300 अभी तक नहीं मिली। 2008 में संख्या बढ़ कर 2530 हो गई। सबसे ज्यादा त्रिवेन्द्रम जिले से गायब हुई। इसके बाद कोल्लम आता है जहाँ से 262 गायब हुई। गायब हुई लड़कियों में से 5 प्रतिशत को मार दिया गया। दूसरी लड़कियों का कोई अतापता नहीं।

लड़कों के भी गायब होने की रिपोर्ट मिली है पर उनकी संख्या लड़कियों की तुलना में बहुत कम है। इसके अलावा 80% लड़के 3-4 दिन में वापिस आ जाते हैं। लड़कियाँ जो वापिस आती भी हैं, कई-कई महीनों बाद। अक्सर उनको किसी तीसरे पक्ष के साथ भाग जाने के लिए उकसाया जाता है। लड़कियों की भागने की प्रवृति पर अंकुश लगाने हेतु कोई कारगर **कदम** नहीं उठाए गये हैं। क्योंकि उनके माँ-बाप का ध्यान ज्यादा से ज्यादा पारिवारिक प्रतिष्ठा और छवि पर रहता है जिसके कारण लड़कियों के गायब होने के पीछे जिन खलनायकों का हाथ होता है बच निकलते हैं।

**नोट -1 : माता-पिता को क्या पता होना चाहिये?** 14 से 19 वर्ष की आयु के बच्चों में बढ़ने और यौन विकास के प्रभाव का अनुभव होने लगता है। इस कारण



उनमें विद्रोही और अवज्ञा की प्रवृति बढ़ जाती हे। वे स्वतन्त्र होते हैं और बड़ी जल्दी गुस्सा आता है। जब चिन्तित माँ बाप कई प्रतिबन्ध लगाते हैं तो बच्चे प्यार कहीं और ढूंढने लगते हैं अत: सैक्स रैकेट में फंस जाने की सम्भावना बढ़ जाती है। कई बच्चे झूठी नौकरियों के विज्ञापनों का शिकार बन जाते हैं। ज्यादातर लड़कियों को झूठे लव अफेयर्स का खतरा हो जाता है।

**नोट - 2 : भागने के पीछे के कारण**

- माँ बाप काम के दबाव में पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहे।
- परिवार में तनावपूर्ण रिश्ते।
- मोबाइल फोन और इण्टरनैट के अत्याधिक प्रयोग के कारण सैक्स रैकेट में फंस जाते हैं।
- धन सम्बन्धी समस्याओं और पढ़ाई-लिखाई की समस्या से छुटकारा पाने के लिये।
- प्रेमजाल में फंस जाना।

## केरला कौमुदी, 27 सितम्बर, "केरल मौन जेहादी घर"

"**सीबीआई की ओर से चेतावनी**" नई दिल्ली : सेन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इण्टेलिजैन्स द्वारा गृह मंत्रालय को हाल ही में सौंपी रिपोर्ट के अनुसार केरल जिहादियों की सुप्त धरती बन गयी है। इन्टेलिजेन्स ब्यूरो का कहना है कि कन्टेनर शिप द्वारा हथियारों की आमद, जाली करैन्सी नोट, गल्फ से हवाला के माध्यम से धन, ये सब कुछ केरल में आ रहा है क्योंकि इनके लिये केरल सबसे सुरक्षित स्थान माना गया है जहाँ से भारत के विभिन्न भागों में जेहादी समूहों को भेजा जाता है।

केरल में एक खास प्रकार की परिस्थितियाँ हैं जहाँ सीधे छापा मारना या एन्काउन्टर करना कठिन है जिसका लाभ जेहादी उठा रहे हैं। केरल में हवाला गतिविधियों का मुख्य शक्ति केन्द्र है नरेश जैन, जो दाऊद इब्राहीम का सहयोगी है और जिसे हाल ही में 500 करोड़ की हवाला स्कीम में पकड़ा गया था। वह दुबई में स्थित है। इण्टेलीजेन्स ब्यूरो ने इंगित किया है कि कम से कम 6 मामले ऐसे हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि जेहादियों को पैसा और हथियार केरल के रास्ते मिलता है।

जेहादियों ने अपना नैटवर्क लक्षद्वीप में भी बना लिया है। प्रशासन को इस मामले को भी गम्भीरता से लेने की आवश्यकता है। केरल से नवयुवकों का चयन किया जाता हैं, दुबई और फिर पाकिस्तान भेजा जाता है। प्रशिक्षण के बाद उन्हें दुबई या नेपाल के रास्ते भारत वापिस भेजा जाता है। तत्पश्चात् उन्हें उत्तर भारत में सक्रिय आतंकवादी समूहों को मदद पहुँचानी होती है।

## द केरल कौमुदी, 6 अक्टूबर : वातायर सुनील 'जेहादी रोमियो प्रेम जाल के साथ तैयार'

## ''इण्टैलिजैन्स ब्यूरो ने 8 माह पहले चेताया''

''इण्टैलिजैन्स ब्यूरो ने आठ माह पूर्व चेता दिया था कि स्मार्ट फ्रैण्ड्स (एस. एफ.) नामक लव-जेहाद का एक समूह कॉलेजों में सक्रिय है, राज्य में युवक लड़कियों के धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से प्रेमजाल में फँसा रहे हैं। यह शंका की जाती है कि केरल में ऐसी कई लड़कियाँ जो प्रेम जाल में फँस गई वे आतंकवादी संगठनों के हाथ पड़ गई है। आई.बी. को सर्वप्रथम 'लव जेहाद' शब्द से परिचय दिसम्बर 2008 में सम्भा जी नगर (महाराष्ट्र) पुलिस स्टेशन में हुआ था। बाद में पता चला कि लव-जेहाद सबसे ज्यादा केरल में सक्रिय है। राज्य की खुफिया एजेन्सियाँ पिछले कई महीनों से इनकी गतिविधियों पर नजर रखे हुए हैं।''

प्रान्त के कई कॉलेज परिसरों और अन्य संस्थाओं में जहाँ बड़ी संख्या में लड़कियाँ काम करती हैं, जैसे आई.टी. कम्पनियाँ, वहाँ सोशल नैटवर्क स्थापित करने के आड़ में स्मार्ट फ्रैण्डस वाले शाखा स्थापित कर लेते हैं। एस.एम.एस. के माध्यम से यह सन्देश बड़े पैमाने पर फैलाया जाता है कि इस समूह के साथ जुड़कर ''कम से कम एक लड़की के साथ रोमान्स करो, कम से कम एक का जीवन बरबाद करो।'' जिस समूह को लड़कियों को फँसाने तथा धर्मान्तरण करने का दायित्व सौंपा जाता है उन्हें कोड नाम रोमियो जिहादी दिया जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि महिलाओं के कुछ समूह भी इन रोमियो की मदद दूसरे धर्म की लड़कियों को फंसाने में करते हैं। इन महिला समूहों को कोडवर्ड 'लव-बम्ब' दिया जाता है।

पंचायत निदेशालय के रिकार्ड की जांच करने पर स्टेट स्पेशल ब्रांच ने निष्कर्ष निकाला है कि कम से कम 500 लड़कियाँ पिछले एक वर्ष में फंस कर



धर्म परिवर्तन कर चुकी हैं। इन लड़कियों में से ज्यादातर अब केरल में नहीं हैं। इन्हें बैंगलोर, मैंगलौर और हैदराबाद की मजहबी संस्थाओं में स्थानान्तरित कर दिया गया है। इनमें से ज्यादातर लड़कियों के परिवारों को इनके ठिकाने के बारे में पता नहीं है। हाईकोर्ट के 29 सितम्बर के आदेश से पता चलता है कि पुलिस ने कोर्ट को सूचित किया है कि 'लव-जेहाद' के समूह झूठे रोमान्स का अभिनय कर लड़कियों का धर्मान्तरण कर रहे हैं। पुलिस ने कोर्ट में हलफनामा पेश किया है कि कई लोग और कई संस्थायें इस षड़यन्त्र में मदद कर रही है परन्तु उनके विवरण सार्वजनिक नहीं किए गये।

**नोट : रोमियो जेहाद**

**उद्देश्य :** दूसरे धर्म की लड़कियो को फुसलाओ और धर्म परिवर्तन करने को प्रेरित करो।

**वेतन :** 200 रुपये प्रतिदिन। मोबाइल फोन, मोटर साइकल, महंगे कपड़े।

**निर्देश :** मुलाकात के दो हफ्ते के अन्दर लड़की को प्रेम जाल में फँसाओ। सम्भव हो तो एक और शिकार खोजो। जब प्रेमालाप चल रहा हो तो 6 माह के भीतर धर्मान्तरित करो और उससे शादी करो।

*पुलिस की स्पेशल ब्रांच ने पता किया है कि लगभग 500 लड़कियाँ रोमियो जेहादी के माध्यम से धर्मान्तरित की गई है।*

## केरला कौमुदी, 7 अक्टूबर, लेखक वातायार सुनील

''लड़कियों के कत्ल में लव जेहाद का हाथ पाया गया''

केरल की सिक्रेट सर्विस को सन्देह हो रहा है कि केरल में कुछ लड़कियाँ जिन्होंने प्रेम की पेशकश ठुकरा दी थी, की हत्या के पीछे, लव जेहाद और इसके सदस्यों का हाथ है।

20 अप्रैल को पलाक्काड चल्लीमडा वी.वी. कॉलेज की 19 वर्षीया अन्जूशा की हत्या कोची निवासी 24 वर्षीय लॉरी ड्राइवर शाहजहाँ ने की। जांच करने वाली एजेन्सियां पता कर रही है कि अम्बालापुजा में हायर सैकेण्डरी की छात्रायें, अनीला, जूली और वेनी की अनसुलझी आत्महत्याओं के पीछे कहीं लव-जेहाद तो नहीं है।

लव-जेहाद और स्मार्ट फ्रैण्ड्स समूह कई दूसरे संगठनों के नामों से काम कर रहे हैं। अम्बालापुजा मामले में आरोपी स्टूडैण्ट फेडरेशन ऑफ इण्डिया (एस एफ आई) का सदस्य जबकि पधानमिथिता मामले का आरोपी मुस्लिम लीग स्टूडैण्ट आर्गेनाइजेशन का सदस्य था। आतंकवादियों द्वारा अपनायी गई चाल यानि अपनी पहचान छुपाने के लिए दूसरे समूह में शामिल हो जाते हैं, वही चाल लव-जेहादी भी अपना रहे हैं। केरल के हर जिले में 'लव-जेहाद' और 'स्मार्ट फ्रैण्डस' की सक्रिय समितियाँ बनी हुई है। हर समिति का प्रमुख क्षेत्रीय चेयरमैन होता है। वे 'लवर ब्वाय' जो हिन्दू या ईसाई लड़की को फंसाते हैं और शादी करते हैं उन्हें एक लाख रुपये तक का ईनाम दिया जाता है। आदेश यह होता है कि पहला बच्चा पहले ही साल में पैदा हो जाना चाहिये और उस औरत से कम से कम चार बच्चे पैदा होने चाहिये। वे लड़के जो उच्च श्रेणी के परिवार की लड़की को फँसाते हैं उनको विशेष पुरुस्कार दिया जाता है। मल्लापुरम, कासरगॉड और कन्नूर जिलों में जेहादी रोमियो सबसे ज्यादा सक्रिय हैं। केन्द्रीय और प्रान्त की खुफिया रिपोर्टों के अनुसार वे एरनाकुलम और पधानामिथिता जिले में भी सक्रिय हैं। महिला संगठन जैसे शाहीन फोर्स और तसरीन मिल्लत आदि पर सन्देह है कि ये जेहादी रोमियो को सक्रिय सहायता पहुंचाती हैं।

यद्यपि 500 लड़कियाँ फंसाई गई परन्तु पुलिस में मात्र पांच मामले ही दर्ज हुए। खुफिया पुलिस के अनुसार परिवार इज्जत बचाने के लिये कि उनकी लड़की दूसरे धर्म के लड़के के साथ भाग गई है, पुलिस में शिकायत नहीं करते क्योंकि उन्हें इस बात की शर्मीन्दगी रहती है कि उनकी लड़की दूसरे धर्म के व्यक्ति के साथ भाग गयी। उससे लव जिहादियों को लाभ मिलता है और उनको अपनी गतिविधियों को विस्तार करने में प्रोत्साहन मिलता है।

**नोट :** माता पिता क्या करें :

1. अपनी बेटियों के मोबाइल फोन पर नजर रखें। अगर बहुत जरूरी न हो तो उन्हें मोबाइल नहीं दें।
2. अगर घर में इण्टरनेट कनैक्शन युक्त कम्प्युटर है तो उसे घर में सिटिंग रूम जैसे स्थान पर रखें जहाँ सब देख सकें। आप सुनिश्चित कर लें कि आपको बेटी का ई-मेल पासवर्ड पता है।
3. उनके स्कूल कॉलेज समय-समय पर जाते रहें और अपनी बेटी के बारे में पता करते रहें।



4. उनकी सब दोस्तों पर नजर रखें।
5. अगर संयोगवश कोई गायब हो जाये तो तुरन्त पुलिस को शिकायत दर्ज करायें।
6. अगर आपको पता हो कि किसके साथ भागी है तो प्रत्यक्षीकरण प्रार्थना पत्र दायर करें जिसमें उन लोगों को और पुलिस को प्रतिवादी बनायें।
7. अपनी बेटी के गायब होने पर शर्म मत करें। यह सोचें कि उसे फंसाया गया है अत: उसके प्रति हमदर्दी रखें।

## संलग्नक III : लव जेहाद के ऊपर यू.के., इजराइल से समाचार

दी मेल यू.के. 22 फरवरी 2007 : **जबरन इस्लाम में धर्मान्तरित करायी जा रही लड़कियों को पुलिस ने बचाया** सर इयान ब्लेयर : आक्रामक धर्म परिवर्तन को रोकने के लिये पुलिस और यूनिवर्सिटी आपस में सहयोग कर रहे हैं।

अतिवादी मुसलमान जो अव्यस्क और नादान लड़कियों को जबरन इस्लाम में धर्मान्तरित कर रहे हैं पुलिस के निशाने पर हैं, मैट चीफ सर इयान ब्लेयर ने बताया। यूनीवर्सिटी के साथ मिलकर पुलिस 'आक्रामक धर्म परिवर्तन' जिसके तहत लड़कियों को पीटा जाता है और यूनीवर्सिटी की पढ़ाई छुड़वाई जाती है को समाप्त किया जा रहा है।

हिन्दू फोरम ऑफ ब्रिटेन का दावा है कि सैकड़ों हिन्दू और सिख लड़कियों को मुस्लिम व्यक्तियों द्वारा डराया धमकाया जाता है। ये इन लड़कियों को डेट पर बाहर ले जाते हैं और बाद में डरा कर धर्मान्तरित करते हैं।

सर इयान फोरम द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में इस समस्या के विषय पर बोल रहे थे।

मेट के प्रवक्ता ने बताया कि पड़ोस के अधिकारी लन्दन में विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ मिलकर काम करते हैं और जो भी शिकार बनाया जाता है उसे मदद लेने की सलाह देते हैं, सहयोग करते हैं और अगर वह स्वयं पुलिस से सम्पर्क नहीं करना चाहती तो तीसरे पक्ष द्वारा रिपोर्ट करवाने की सुविधा प्रदान करते हैं।

हिन्दू फोरम, ब्रिटेन के रमेश कालजयी ने कहा कि कई लड़कियाँ डरी हुई होती हैं क्योंकि उनको लगातार फोन आते रहते हैं और उनके दरवाजों पर दस्तक पड़ती रहती है।

एक लड़की की गली में पिटाई की गई और दूसरी लड़कियों को यूनिवर्सिटी छोड़ने के लिये विवश कर दिया गया।

इस विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया निम्नलिखित पर लॉग ऑन करें - http://www.dailymail.co.uk/news/article-437871/Police-protect-girls-forced-convert-Islam html#ixzz OTXZ2r73q



### द टाइम्स, 3 मार्च 2007, यू.के.

## ''मुसलमानों पर छात्राओं को ब्लैकमेल करके कन्वर्ट करने का आरोप'' लेखक निकोला बुलकॉक, लन्दन, यूके

हिन्दू और सिख लड़कियों को यूनिवर्सिटी परिसर में ब्लैकमेल कर के धर्म परिवर्तन कराने का आरोप अतिवादी मुसलमानों पर लग रहे हैं।

इन समुदाय के नेताओं ने बताया है कि ''ऐसे लोग आक्रामक रूप से यूनिवर्सिटी की ऐसी छात्राओं पर निशाना साधते हैं उन्हें अपमानित करने का भय दिखा कर धर्म परिवर्तन करने के लिए विवश कर देते हैं। कई अपनी शिकार से दोस्ती करते हैं और फिर उसे डराते हैं कि हम तुम्हारे माँ-बाप को बता देंगे कि तुम्हारा एक मुसलमान के साथ यौन सम्बन्ध हैं। कई किशोरियों को मादक द्रव्य देकर उनके यौन सम्बन्धों की फोटो खींची जाती हैं।

कई लड़कियाँ मान जाती हैं क्योंकि वे नहीं चाहती कि उनके माता-पिता को शर्मशार होना पड़े या उन्हें समाज के द्वारा बहिष्कृत कर देने का भय रहता है।

पुलिस को इस समस्या का ज्ञान है। सर इयान ब्लेयर कमीशनर मैट्रोपोलिटिन पुलिस, ने हाल ही में एक हिन्दू सम्मेलन में भाग लिया था। जिसमें इस समस्या को उठाया गया था। परन्तु पुलिस कार्यवाही करने में असमर्थ है जब तक कि ऐसी घटना की रिपोर्ट न की जाये। पर ऐसा शायद ही कभी होता है क्योंकि बच्चे के इस्लाम में मतान्तरित होने के शर्मबोध के कारण सिख और हिन्दू माँ बाप चुप रहने के लिए विवश हो जाते हैं।

समाज के वरिष्ठजन बताते हैं कि उपरोक्त धर्म परिवर्तन के मामले विस्तृत रूप से फैले हुए हैं, परन्तु उनके अनुमान के आँकड़ों में अन्तर है जो देश भर में एक साल में 100 से लेकर केवल दक्षिण पूर्व में ही, कुछ ही महीनों में 120 मामले तक बताए जाते हैं।

सिख विद्यार्थियों के ब्रिटिश संगठन के रन्जीत सिंह ने कहा ''ऐसे बहुत मामले हैं जहाँ आक्रामक तरीके जैसे नशीली दवाईयाँ और बलात्कार, फोटो खींचने और ब्लैक मेल द्वारा धर्म परिवर्तन कराये जाते हैं।

''उन्हें पता होता है कि लड़की का शील भंग कर देने मात्र से परिवार उसे छोड़ देगा। पिछले कुछ महीनों में लुटिन और दक्षिण पूर्व में 120 ऐसे मामले हो

चुके हैं। यह ऐसी समस्या है जो काफी समय से चल रही है लेकिन ज्यादातर लोग आगे आने से हिचकिचाते हैं अत: इसके समाधान हेतु कुछ नहीं किया जा सका है।

सम्पूर्ण मुस्लिम समाज इस धन्धे में लिप्त नहीं है, इसमें अतिवादी लोग लिप्त हैं। कई लड़कियाँ जब यूनिवर्सिटी जाती हैं तो बहुत भोली होती हैं और जल्दी से शिकार बनने योग्य होती हैं तब ऐसे आदमी इनको अपनी दोस्ती में फंसा लेते हैं। हमें कुछ लड़कियों का पता है जिनका जीवन बरबाद कर दिया गया है।

कुछ युवा स्त्रियों ने शारीरिक हिंसा झेली है। कुछ ने बताया है कि इन व्यक्तियों ने दावा किया है कि वे जब अपने शिकार का धर्मान्तरण करा देते हैं तो उन्हें पैसा मिलता है। हिन्दू फोरम, ब्रिटेन के महासचिव रमेश कालीदाई ने बताया - "मुख्य समस्या यह है कि ये लड़कियाँ आसान शिकार होती हैं, और ऐसे लोगों द्वारा आसानी से डराई धमकाई जा सकती हैं। ये लड़कियाँ आपबीती अपनी सहेलियों को तो बता देती हैं जो फिर हम लोगों को बताती हैं कि क्या हो रहा है परन्तु पुलिस को नहीं बताना चाहती। कई परिवार तो इसके कारण बुरी तरह टूट चुके हैं।

"एक लड़की को पीटा गया जब उसने धर्म परिवर्तन करने से इन्कार कर दिया। वह अब डरी हुई है। उसने इसके बारे में सिर्फ एक लड़की को बताया है जिसने हम लोगों से सम्पर्क किया है।"

एक सिख संगठन ने दूरभाष पर हैल्पलाइन शुरू की है और इस समस्या पर जागृति लाने हेतु मन्दिरों के दर्शन की व्यवस्था की है। इस के नेता जो अपना और अपने संगठन का नाम गुप्त रखना चाहते हैं ने बताया कि इस विषय पर बात करना निषेद्ध है। ये विषय काफी समय से चल रहे हैं और यूनिवर्सिटी में तो गरमागर्म हैं।

मैं अति गम्भीर मामलों को देखता हूँ। लड़कियों के अपमानित और ब्लैकमेल करने के अनेकों उदाहरण दिल दहलाने वाले हैं जिसमें ये आदमी कहते हैं कि हम तुम्हारे माँ-बाप को बताने जा रहे हैं। इस धमकी से लड़कियाँ बुरी तरह फंस जाती है। ऐसे धर्मान्तरण को ग्रूम्ड कनवर्शन (Groomed Conversion) कहते हैं। कई लड़कियाँ सहमत हो जाती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि बचने का कोई रास्ता नहीं है।

ये लोग इनसे धर्मान्तरण का एजेन्डा लेकर सम्बन्ध स्थापित करते हैं। कभी वे लड़कियों की समझौते की मुद्रा वाली (सैक्स) फोटो भी खींच लेते हैं। मोबाइल



फोन से फोटो खींचना बड़ा आसान होता है। एक 18 साल की लड़की ऐसी स्थिति में पहुँच जाती है कि वह स्वंय को नियंत्रित नहीं रख सकती।

उसने बताया अतिवादी (जिहादी) सिख समाज द्वारा धर्मान्तरण को एक बहुत बड़ा अपमान समझने की मनोवृति का शोषण करते हैं। अत: इस सांस्कृतिक मनोदशा को बदलने की जरूरत है। यह दिवालिया होने या नौकरी से हटाए जाने से भी बढ़कर निकृष्टतम घटना है जिसका मुकाबला करना है।

मैट्रोपोलिटन पुलिस की एक महिला प्रवक्ता ने पुष्टि की है कि पुलिस अधिकारी गत माह हिन्दू सुरक्षा सम्मेलन में गये थे। उसने बताया कि "हमें ऐसे मसलों की जानकारी है जो हिन्दु समाज से जुड़ा है पर हमें किसी घटना विशेष की जानकारी नहीं है, जिसकी रिपोर्ट पुलिस में की गई हो। हम लोग प्रोत्साहित करेंगे कि जिसे भी निशाना बनाया गया है वह हमारी मदद ले।"

**दी नेशनल, 25 सितम्बर 2009, आबू धाबी :** यहूदी लड़कियों को अरबियों के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने से रोकने का इज़राइली अभियान - रिपोर्टर जोनाथन कुक, विदेशी संवाददाता

नजरथ : इज़रायल में स्थानीय प्रशासन ने घोषणा की है कि इसने युवा सलाहकारों और मनोवैज्ञानिकों की विशेष टीम बनाई है जिसका मुख्य काम उन स्त्रियों की पहचान करना है जो अरबों से प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर रही हैं, उनको बचाना है।

तेल अवीव के पास की पेटाह टिक्वा की नगर पालिका ने एक अलग प्रकार का नवीनतम कदम उठाया है जिसकी अधिक चर्चा नहीं की गई है जिसमें सरकारी इकाईयाँ, रब्बी, निजी संगठन और इजराइली निवासियों के समूह अन्तर्नस्लीय प्रेम सम्बन्ध और विवाह रोकने का प्रयास करेंगे।

इस सम्बन्ध में इज़राइली मीडिया ने रिपोर्ट किया है कि पूर्वी फिलीस्तीनी लोगों के बीच बनी यहूदी बस्ती जिसका नाम पिस्गट जीव है के निवासियों ने देखभाल करने वाली पैट्रोलिंग टोली बनाई है जो अरब के पुरुषों को स्थानीय यहूदी लड़कियों से मिलने जुलने को रोकेगी।

इजराइल में विकसित हो रहे ऐसे नजदीकी सम्बन्धों को यहूदी नफरत की निगाह से देखते हैं, इज़राइल के यहूदीपन के लिये खतरा मानते हैं। इस सम्बन्ध में

2007 में राय ली गई तो पता चला कि इजराइल द्वारा पचास प्रतिशत से ज्यादा इज़राइली यहूदी ऐसी शादियों को देशद्रोह के बराबर मानते हैं।

1948 में इज़रायल बनने के बाद से ही विश्लेषकों ने नोट किया है कि कई कानूनी एवं प्रशासनिक कदम इजरायल द्वारा उठाये गये जिनकी मदद से यहूदियों और अरबी नागरिकों के बीच विकसित हो रहे सम्बन्धों को सीमित किया जाये। अरब लोगों की जनसंख्या देश की आबादी का 1/5 वाँ भाग है।

दोनों समुदायों के अलग-अलग रहने और अलग-अलग शिक्षण व्यवस्थाओं के चलते यहूदी और अरबी युवकों युवतियों में मेलजोल होने की सम्भावना कम होती है। यहाँ तक कि कुछ मिश्रित शहरों में जहाँ यहूदी और अरबी दोनों रहते हैं वहाँ भी अरबी लोग अलग पड़ोस में सीमित रहते हैं।

इसके अलावा इज़रायल में सिविल मैरिज प्रतिबन्धित है अर्थात् न्यूनतम मामले में जहाँ यहूदी-अरबी आपस में शादी करना चाहते हैं, देश से बाहर जा कर ही कर सकते हैं।

हैफ्फा विश्वविद्यालय के समाजशास्त्री डाक्टर युवल योनाय, ने कहा है कि अर्न्तनस्लीय विवाह की संख्या इतनी कम है कि उसका अध्ययन करने की आवश्यकता ही नहीं है। यहूदियों और अरबों के बीच अलगाव इज़राइली समाज के दिमाग में इतना गहरा है, कि जब कोई इन केन्द्रीय नियन्त्रणों का उल्लंघन करता है तो बड़ा आश्चर्य होता है।

20 हजार की जनसंख्या वाला यहुदी शहर पेटाह टिक्वा में टीम तब गठित की गई जब पता चला कि 17 और 19 साल की दो यहूदी लड़कियाँ उस अरबी युवा समूह के साथ थी जिसने यहूदी व्यक्ति लियोनार्ड कार्प को पिछले महीने तेल अवीव के समुद्री तट पर पीट-पीट कर मार डाला था। बड़ी लड़की पेटाह टिक्वा से थी।

अरबी युवाओं के साथ लड़कियों के सम्बन्धों के कारण यह चिन्ता होने लगी कि अन्तर्नस्लीय प्रेम सम्बन्धों के कठोर प्रतिबन्ध कुछ युवा वर्गों में ढीले पड़ने शुरू हो गये हैं।

पेटाह टिक्वा नगरपालिका के प्रवक्ता मि. हकाक ने अपनी भावना विस्तृत रूप से व्यक्त करते हुए कहा, ''रूसी परिवारों की बेटियाँ, लड़कियाँ, जवान



यहूदी महिलाएँ जिनके माँ-बाप विगत दो दशक के भीतर इजराइल आए हैं यानि जबसे पूर्व सोवियत यूनियन टूटा है, विशेष रूप से अरबी लोगों के निशाने पर हैं।

डॉ. योनाय ने कहा कि रूसी महिलाओं की अरबी पुरुषों के साथ निकटता का विरोध कम इसलिये है क्योंकि उन्हें धार्मिक और यहूदी शिक्षा नहीं मिली जो पहले से स्थापित इजराइलियों को दी गई थी।

श्री हकाक ने कहा नगर पालिका ने हाट लाइन सेवा स्थापित की है जिसके माध्यम से यहूदी महिलाओं के माँ-बाप और मित्र उन्हें सूचना दे सकते हैं। ''हम लड़कियों को यह तो नहीं बता सकते कि वे क्या करें परन्तु हम मनोविज्ञानिक को उनके घर उनको और उनके माँ-बाप को सलाह देने के लिये भेज सकते हैं,'' उन्होंने कहा।

मोटी जैफ्ट, डिप्टी मेयर ने वाई नैट के वेबसाइट को बताया कि नगर पालिका उन मकान मालिकों को भी पकड़ रही है जिन्होंने गैर कानूनी तरीके से अपार्टमेंट को किराये के लिये विभाजित कर रखा है ताकि वह हिस्सा उन एकल अरब मर्दो को सस्ते किराए पर दे सकें जो तेल अवीव में काम की तलाश में आते हैं। उनके एक अनुमान के अनुसार कई सौ ऐसे अरबी मर्द इस प्रकार शहर के अन्दर आ गये हैं।

पेटाह टिक्वा के अरबी मर्दो का यहूदी महिलाओं के साथ मेलजेल का अनुभव दूसरे समुदायों द्वारा भी किया जाता है।

40000 की आबादी वाला पिस्गट जीव, में 35 यहूदी पुरुषों का एक समूह जिसे ''फायर ऑफ जूडाइज्म'' के नाम से जानते हैं, इस क्षेत्र की पैट्रोलिंग करता है और अन्तर्नस्लीय प्रेम सम्बन्ध रोकने का प्रयास करता है।

अस्वाभाविक रूप से पिस्गट जीव में पूर्वी जरुसलेम और इज़राइल के अन्दरुनी इलाके से कुछ अरबी परिवार आकर बस गये हैं क्योंकि पिस्गट जीव जरूसलेम की नगर पालिका की सीमा में पड़ता है। अरबी 'इज़राइली निवासी अधिकार' के अन्तर्गत वहाँ तब तक रह सकते हैं जब तक यहूदी निवासी उनको किराये पर रखना चाहें।

जरुसलेम पोस्ट नामक समाचार पत्र के सदस्य, मोशे ने बताया ''हमारा लक्ष्य ऐसी लड़कियों से सम्पर्क करके उनको आगाह करने का है कि वे अपने आपको

कितने बड़े खतरे में डाल रही हैं। पिछले 10 साल में 60 लड़कियाँ पिस्गट जीव से फिलीस्तनी गांव में (पश्चिमी तट) चली गई है और इनमें से अधिकांश के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली कि जाने के बाद क्या हुआ।

उसने अरबी मर्दो के साथ हिंसा या धमकी दिए जाने से इन्कार किया।

पिछले वर्ष किरयाट गाट नामक नगर पालिका, जहाँ 50,000 यहूदी रहते हैं, ने स्कूलों में एक कार्यक्रम चलाया जिसके अन्तर्गत यहूदी लड़कियों को स्थानीय बेदोई लोगों के साथ मेलजोल के विषय में चेतावनी दी गई। लड़कियों को ''स्लीपिंग विद द ऐनिमी'' नाम की वीडियो दिखाई गई जिसमें मिश्रित जोड़ों को अस्वाभाविक एवं अप्राकृतिक बताया था।

इन वीडियो में हैम शालोम प्रमुख, कल्याण विभाग, नगरपालिका को यह बोलते दिखाया गया है ''लड़कियाँ अपने भोलेपन के कारण इन शोषण करने वाले अरबियों के यहाँ चली जाती हैं''।

2004 में पूरे उत्तरी साफेड शहर को पोस्टरों से पाट दिया गया जिनमें यहूदी महिलाओं के लिए चेतावनी थी ''अरबी मर्दो से प्रेम का परिणाम होगा पिटाई, तेज मादक द्रव्य, वैश्यावृति और अपराध''।

साफेड के प्रमुख रब्बी (धर्मगुरु) शैमुअल इलाहयु ने बताया कि यहूदी लड़की को प्रेम में फंसाना अरबों के द्वारा एक दूसरे प्रकार का युद्ध है।

किरयाट गाट और साफेड दोनों के इन अभियानों को एक धार्मिक संगठन, याड लाचिम (Yad L'achim) ने पूरा सहयोग दिया था। यह धार्मिक संगठन मिलजुल कर रहने के खिलाफ टीम का संचालन करती है जो सार्वजनिक रूप से यहूदि महिलाओं को बचाने के लिए समर्पित है।

इसके वैबसाइट के अनुसार इस संगठन को एक महीने में 100 से ज्यादा कॉल प्राप्त होती हैं। यहूदी औरतों को अरबी मर्दो के साथ इजराइल के अन्दर एवं पश्चिमी तट पर रहने की जानकारी मिलती है। यह संगठन पुलिस और सेना के सहयोग से सैनिक पद्धति से रक्षात्मक अभियान चला कर शत्रु अरब गांवों से यहूदी औरतों को बचा कर लाता है। इस वैबसाइट के अनुसार ''यहूदी आत्मा बहुत बेशकीमती और दुर्लभ संसाधन है और हम लोग एक को भी छोड़ने को तैयार नहीं है।''



(श्रोत : hitp://sarabhapanjab.blogspot.com/2007-01-01archive.html) सोमवार 1 जनवरी 2007

## साऊथ एशिया न्यूज़ एजैन्सी साना 3 अक्टूबर 2006 : भारतीय लड़कियों को वैश्यावृति में धकेला

लाहौर पाकिस्तान: 'मध्य पूर्व एशिया, भारत और यू.के. की भोलीभाली युवतियों को कुछ संगठित समूह उनको चमक दमक वाला कैरियर आकर्षक नौकरियों का लालच दिखा कर वैश्यावृति में धकेल रहे हैं, मानवाधिकार के एक संगठन ने कहा। 'इनमें से कुछ तो इन आदमियों की गर्ल फ्रैण्ड हैं। ये लड़कियाँ सोचती हैं कि हम तो छुट्टी मनाने या हनीमून पर अपने मित्र या परिवार के पास जा रहे हैं।'

'हालत बड़े नाजुक हैं क्योंकि स्मार्ट संचालक (यानि लड़कियां फंसाने वाले) सुन्दर दिखने वाली युवतियों को मॉडलिंग या कॉल सेन्टर की नौकरी के लिये अच्छी तनख्वाह का प्रलोभन देकर शिकार बनाते हैं।' भगायी गई महिलाओं को बचाने वाली अधिकार समूह इमप्ल्स एन जी ओ नेटवर्क की चेयरपर्सन हसीना खरबी ने यह बताया। परन्तु वास्तव में इनमें से काफी औरतों को वैश्यावृति की बदनाम दुनिया में धकेल दिया गया।'

इम्पल्स कार्यकर्ताओं ने हाल ही में कम से कम चार युवा लड़कियों को लाहौर की हीरा मण्डी से बचाया। ''लड़किया उत्तर पूर्व भारत की हिन्दू थी जिन्हें एजेन्टों ने अच्छी मॉडलिंग भूमिका और कॉल सेन्टरों में अच्छे वेतन का लालच देकर फंसाया था,'' खरवीह ने बताया।

''हमें इन बचाई गई लड़कियों ने बताया कि उत्तरपूर्व की अनेक महिलाएं वहाँ थी जिन्हें मानव देह व्यापार में धकेल दिया गया था।''

टी.वी. और समाचार पत्रों में विज्ञापनों के माध्यम से भारत में किशोरियों के मध्य मॉडलिंग के पेशे के लिये क्रेज़ (उन्माद) पैदा हुआ है और इसी कारण से भगाने वाले भारतीय भोली भाली लड़कियों को अपने जाल में फंसाने के लिए चारा डालते हैं।

# ब्रिटिश पंजाबी लड़की की कहानी जिसे वैश्या बना दिया

मेरी कहानी तबसे शुरू होती है जब मैं 16 साल की थी और हैण्ड्सबर्थ में रहती थी। हमने ताजा-ताजा जी सी एस ई (हाईस्कूल) की परीक्षा पूरी की थी। हम सभी ने इसे सैलीब्रेट करने के लिये दिन के समय भाँगड़ा नृत्य गृह जाने का फैसला लिया क्योंकि हमें पता था हमें रात में नहीं जाने दिया जायेगा। हम कुल चार अच्छी सखियाँ थी, हम लोगों ने जाने का फैसला किया हालांकि हमें पता था कि अगर माँ-बाप को पता चल गया तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी, परन्तु सोचा जो होगा देखा जायेगा और चुँकि यह खास मौका है, अत: चल पड़ी।

यह पहला अवसर था जो हमने इस तरह का काम किया। यह एक अनुभव था।

जब हम वहाँ पहुंचे हम लोग विश्वास नहीं कर सके कि वहाँ बरमिंघम शहर के, हम लोगों की उम्र के, सबके सब एशियन लोग थे। अपनी सहेलियों से अधिक मैं स्तब्ध थी कि लोग वहाँ नशे में थे, लड़के और लड़कियाँ सिग्रेट पी रहे थे। एशियावासियों की यह नई पीढ़ी थी जो पश्चिमी दुनियाँ की आजादी का आनन्द ले रही थी। मुझे स्मरण है मैंने अपनी सहेलियों से कहा था "चाहे कुछ भी हो जाये, हमें साथ-साथ रहना चाहिये।" हमें सचमुच नहीं पता था कि एक बार अन्दर घुस गये तो हमारे साथ क्या होगा।

जब हम अन्दर घुसे तो भाँगड़े की कोई पुरानी धुन बज रही थी। पूरा क्लब (भागड़ा गृह) 'अपनों' से भरा पड़ा थ। विश्वास नहीं हो रहा था कि हर कोई कितना मस्त हो चुका था। हम क्लब में एक तरफ होकर सबको डान्स करते और इश्क करते देखते रहे। एक घण्टे बाद एक अच्छा सा दिखने वाला लड़का हम लोगों के पास आया और मेरी सहेलियों से बातें करने लगा। हमने तब देखा कि उसने तो कड़ा पहना हुआ है अत: हमने सोचा कि इससे बातचीत करना ठीक है, उसका का नाम मिक था। मिक ने हमारा परिचय अपने अन्य दोस्तों से कराया। ये सारे के सारे बड़े ही स्मार्ट और देखने में सुन्दर थे और हमें इस तरह, पहली बार लड़कों के साथ मिलना जुलना अच्छा लगा। हमें डर सा भी लग रहा था और अच्छा भी लग रहा था क्योंकि ऐसा हमने पहले कभी नहीं किया था।



ये लोग हमारे लिये ड्रिंक ले आए और शराब पीने के लिये भी उत्साहित किया जिसे हम सबने सख्ती के साथ मना कर दिया। परन्तु जब हमारे जोड़े बन गये और अपने अलग-अलग राह पर चले गये तो सब कुछ बदल गया। उसके बाद मुझे दो घण्टे तक मेरी सहेलियां दिखाई नहीं दी जो किसी अजनबी के साथ डान्स कर रही थी और वे अपने आपे में नहीं थी। मैं विश्वास ही नहीं कर सकी कि वे नशे में थी। हमने इस प्रकार डान्स करना उचित समझा क्योंकि शादी ब्याह में हम अक्सर डान्स करती थी। मैं उनके पास देखने गई कि उन्हें क्या हुआ है। उन्होंने मुझे बिल्कुल नजरअन्दाज कर दिया और मुझे भी ड्रिन्क करने को प्रोत्साहित किया और तब मैंने भी शराब पी ली। मेरे पापा काफी शराब पीते थे अत: मैंने सोचा कि शराब पीना ठीक है।

अन्त में हम लोग क्लब से बाहर आ गये। 4 बज चुके थे और यह सोचकर बुरा हाल हो रहा था कि घर कैसे जायेंगे। हमारी गिगलिंग (हंसी) नहीं रुक रही थी, उस पर लेट थी और नशे में धुत। मुझे पता था कि अगर मैं घर पहुंचने में 20 मिनट और लेट हो गई तो दादी मेरी माँ को दफ्तर में ही टेलीफोन कर देगी। मैं आमतौर पर अपराह्न 3.50 घर पहुंच जाया करती थी और अब 4 बजकर 10 मिनट हो गये थे। मैं अभी बरमिघंम शहर के बीचोंबीच थी जहाँ से बस से घर पहुंचने में 40 मिनट लगने थे। मुझे बड़ी दहशत हो रही थी। मुझे पता था कि घर पहुंचते ही गम्भीर संकट में पड़ जाऊँगी। मेरे मुँह से सिग्रेट और शराब की बू आ रही थी। मेरे पापा तो मुझे मार देंगे। पता नहीं लग रहा था कि क्या करें और तभी वो लोग जो क्लब में डान्स कर रहे थे आ गये। उन्होंने पूछा हम सब ठीकठाक हैं न या कुछ चाहिये यानि घर तक लिफ्ट चाहिए। चुँकि हम लोग इतनी घबरायी हुई थी कि हमने कहा हाँ।

उन्होंने हमें घर उतार दिया। आपस में मोबाइल नम्बरों का आदान-प्रदान हुआ और वे चले गये। उस दिन मुझे खूब थप्पड़ पड़े, पापा पागल हो रखे थे क्योंकि मैंने झूठ बोला था, क्लब गई थी, लड़कों के साथ डान्स किया था और शराब पी थी। मेरा पूरा परिवार बुरी तरह बेचैन था। मुझे याद है कि मैंने मन ही मन सोचा कि अब कभी ऐसा नहीं करूँगी। मेरी सहेलियों के साथ भी उनके घरों में ऐसा ही व्यवहार हुआ।

दो हफ्ते बाद घर पर फोन की घंटी बजती और मेरी दादी फोन उठाती परन्तु फोन कट जाता। एक दिन जब दादी मेरे लिये रोटी बना रही थी, फोन की घण्टी

बजी और मैंने फोन उठाया। फोन पर क्लब वाला लड़का था। मुझे सूझ नहीं रहा था कि क्या करूं। मैं डर रही थी साथ ही यह भी उत्सुकता थी कि क्या होता है। वह हमसे फिर मिलना चाहता था, वह जानना चाहता था कि मैं कैसी हूँ। यह मेरा पहला सम्बन्ध स्थापित होने जा रहा था। अगले कुछ महीनों में उसे कब कॉल करना चाहिये, क्या बहाना करना चाहिये सब तय हो गया। यह सबसे बड़ा आश्चर्य था किसी को उसके बारे में पता नहीं चला। मुझे लगा किसी को मेरी जरूरत है, प्यार करता है। वह उस समय 18 साल का था और मैं अभी-अभी 16 साल की हुई थी। उसके पास वास्तव में सुन्दर कार थी और वह अपने चाचा के यहाँ आई. टी. (इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी) के क्षेत्र में काम करता था।

हम उस स्तर पर पहुंच गये कि हम आधी रात को मिलने लगे। मैं घर से चुपके से निकल जाती वह हमें गली के नीचे से ले लेता और हर जगह इकट्ठे चल पड़ते। मुझे हर पल बड़ा आनन्द आ रहा था और जब भी हम नहीं मिलते तो मुझे लगता कि मैं मर जाऊँगी। मुझे सचमुच उससे प्यार हो गया था। इन मुलाकातों में मुझे पता चल गया कि वह पंजाबी नहीं है और वह अपने उम्र के अन्य पंजाबी लड़के से अलग प्रकार के कपड़े पहनता था। वह न तो शराब पीता था और न धूम्रपान करता था। वह कई मुसलमानों को जानता था। पर मैंने यह सब नजरअन्दाज कर दिया क्योंकि मुझे जिन्दगी का आनन्द आ रहा था।

**मुझे एक** अजीब सी अनुभूति होती कि वह मुसलमान है, पर कड़ा पहना हुआ है। मुझे उससे पूछने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि मैं सम्बन्ध खराब नहीं करना चाहती थी। लेकिन अन्ततः वह दिन भी आया जब उसने खुलासा किया कि उसे मस्जिद जाना है। मैं भौचक्की रह गई। मेरी समझ नहीं आ रहा था कि मैं कैसी प्रतिक्रिया दूँ, मेरा ब्वाय फ्रैण्ड मुसलमान है और मैं उससे बहुत प्यार करती थी और उसे छोड़ना नहीं चाहती थी। मैंने उससे उसका नाम पूछा, उसका उपनाम (छोटा नाम) एबीएस था। उसने मुझे पहले बताया था कि उसका नाम हरबिन्दर है परन्तु उसका **असली नाम यासीन** था।

यह बड़ी विचलित कर देने **वाली** स्थिति थी, उसने मुझसे झूठ बोला था और मुझे विश्वास दिला दिया था कि वह सिख है परन्तु वास्तव में वह था मुसलमान। मैंने उससे पूछा कि जब तुम्हें पता था कि मैं सिख हूँ तब तुमने मुझ से सम्बन्ध क्यों बढ़ाया? उसने मेरे इस प्रश्न का उत्तर अपने प्रश्न से दिया कि '''क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?'' और मुझे अभी तक याद है मैंने कुछ मिनटों के बाद जवाब दिया



था ''नहीं''। मैंने मन में सोचा कि वह कोई अजीबो गरीब मुसलमान नहीं है और इसने मेरे साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया है।

बड़ा कठिन समय था, सोचा कि उससे सम्बन्ध तोड़ लूं, वह मुसलमान है, यह सम्बन्ध आगे नहीं चल पायेगा। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाई, वह मुझसे प्यार करता था, मैं उससे प्यार करती थी और फिर मैं बार-बार अपने आपको समझाती रही कि वह औरों से अलग है तथा सम्बन्ध शुरू होने के समय बिताए गये मधुर क्षणों को स्मरण करती रही।

अतः हमने इस तथ्य को भुलाने का निश्चय किया (मैं कितनी बेवकूफ हूँ) हम ज्यादातर समय इकट्ठा बिताते, उसने मुझे अपने अंकल के संस्थान में नौकरी दिला दी। वे सब मुझसे सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे यद्यपि मैं सिख थी और वे सब मुसलामन थे। वे सब मेरे प्रति बड़े अच्छे थे। मैं महसूस करती कि मेरी जरूरत है, मैं अपने ब्याय फ्रैण्ड के परिवार वालों में बड़ी सहज महसूस करती।

हम आपस में दो साल तक मिलते रहे (कॉलेज के काल में) और तब समय आ गया कि मैं अपना घर छोड़ कर यूनिवर्सिटी जाऊँ, मैं कुछ घंटे की दूरी पर शहर से बाहर गयी। मैं अपने परिवार से यथासम्भव दूर रहना चाहती थी, क्योंकि वे मेरे और उसके बीच बाधक थे। मैंने कड़ा पहनना छोड़ दिया था, सोने का खण्डा (हार) भी गले में डालना छोड़ दिया। मैंने गुरुद्वारे जाना भी बन्द कर दिया क्योंकि मैं उसे नाराज नहीं करना चाहती थी और इस प्रकार बचे समय को उसके साथ बिताना चाहती थी। मैं उससे प्यार करती थी और उसके लिये कुछ भी करने को तैयार थी।

यूनिवर्सिटी में हमारे सम्बन्धों में और प्रगाढ़ता आई, पहले मैं कैम्पस में रहती थी, पर हर व्यक्ति मेरी ओर घूरता और मेरे सामने और पीठ के पीछे मेरी चर्चा करते, उन्होंने मेरे फ्लैट पर कुड़ा फेंक दिया। यह सब इसलिये क्योंकि मैं मुसलमान के साथ बाहर जाती थी, मैं उन्हें समझाने का प्रयास करती कि वह अलग प्रकार का है, वह मुझे प्यार करता है, वे लोग मेरी बात समझने को तैयार नहीं थे। मुझे बहुत बुरा लगता कि मेरी खातिर उस बेचारे को इतना अपमान झेलना पड़ रहा था। यह मेरे लिये वास्तव में खराब अनुभव था। मैं असहाय और कमजोर महसूस करने लगी थी। मेरे विश्वविद्यालय जीवन के प्रथम कुछ सप्ताह के दौरान सब चीजों में अनेक परिवर्तन आने शुरू हो गये।

मैंने यूनिवर्सिटी छोड़ दी और एक फ्लैट में उसके साथ चली गई, उसने मुझे दूसरी नौकरी दिलवा दी और फिर उसके कजन (चचेरा भाई इत्यादि) ने पैसे से हमारी सहायता की। मैंने अपने माँ बाप को कभी नहीं बताया कि मैंने यह सब कर लिया है। वे मुझे फोन करते, मैं कहती कि सब कुछ बहुत बढ़िया चल रहा है, उनसे झूठ बोल देती।

मैंने घर जाना भी छोड़ दिया, मैं कहती कि मुझे यूनिवर्सिटी का बहुत सारा काम करना है इसलिये घर नहीं आ पाऊँगी। फिर मैंने अपने परिवार और मित्रों के फोन का जवाब देना भी बन्द कर दिया क्योंकि मुझे पता था कि वे यही कहेंगे कि मैं उससे मिलना छोड़ दूँ और घर आ जाओ वगैरह वगैरह। अत: मैंने अपना नम्बर बदल लिया, इतना ही नहीं कुछ दिनों बाद मैंने अपना नाम भी बदल लिया।

हम दोनों इकट्ठे बड़े खुश थे। हमे एक दूसरे से प्रेम था, एक दूसरे के लिये बने थे। कुछ समय बाद मैंने अपना धर्म भी बदल दिया मैं मुसलमान बन गई, मुझे बड़ी खुशी थी कि मैं अन्तत: उसका हिस्सा बन गई जो इतना महान था, हर एक मुझे प्यार करता था और आखिर में मैं अपने घर में शान्ति से रहने लगी। इस्लाम ने मुझे सब कुछ दिया। इसने मुझे समझ दी और सत्य का दर्शन हुआ। सिक्ख धर्म में भी कई खामियाँ थी या ऐसा मुझे बताया गया और उसने जो बताया उस पर मेरा विश्वास हो गया कि सिख धर्म तो आदमी का बनाया हुआ है, यह जातियों में विश्वास करता है। हमारे यहाँ जाति पर आधारित गुरुद्वारे हैं। हम लोग अपनी स्त्रियों को आधा नंगा कर डांस करने देते हैं (भांगड़ा वीडियो) जबकि इस्लाम हम स्त्रियों को पर्दे में रहना सिखाता है क्योंकि वह हीरे की तरह मूल्यवान हैं। क्योंकि मैं भोली थी मुझे सिख धर्म के बारे में कुछ पता ही नहीं था, मेरे माँ-बाप ने कभी कुछ नहीं बताया था और न मैंने कुछ गुरुद्वारे में सीखा, ग्रन्थी जो बोलता था समझ में नहीं आता था। नतीजा यह हुआ कि जो उसने बोला उस पर मुझे विश्वास हो गया।

फिर हमने शादी करने का फैसला कर लिया पर उसने बोला कि इसके लिये हमें पाकिस्तान जाना पड़ेगा क्योंकि मेरी बहनें वहाँ तुम्हें देखने को बेचैन हो रही हैं। मैं तैयार हो गई और हम चल दिये। यह वर्ष 1994 था मैं 19 साल की हो गई थी।



अब मैं जो बताने जा रही हूँ यह मेरे जीवन का सर्वाधिक चिन्ताजनक हिस्सा है। मुझे डाक्टर से नियमित रूप से लम्बे समय तक इलाज इसके कारण कराना पड़ा। मैं पूरी बात कहने से पहले स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि जो मैं बता रही हूँ वह बढ़ा-चढ़ा कर कही गई घटना नहीं है। यह ठीक वैसा ही है जैसे मेरे साथ हुआ और मैट्रोपोलिटिन पुलिस को इसकी पूरी जानकारी है।

जब मैं पाकिस्तान की उड़ान पर थी तो मैं बहुत रोमांचित थी, मैं अपने प्यार से शादी करने जा रही थी। मुझे एक क्षण के लिये भी अपना परिवार या मित्र याद नहीं आये। क्योंकि उस के माध्यम से मुझे वो सब मिल गया था जो मैं चाहती थी मुझे सिखाया गया था कि वे सब (परिवार व मित्र) दैत्य हैं, वे मुझे जहन्नुम में ले जायेंगे और मैं जहन्नुम नहीं जाना चाहती थी।

जब हम पाकिस्तान पहुंचे, वहाँ पर हम लोगों को रिसीव करने हेतु कुछ ही लोग थे। मैंने अपने ससुराल वालों तथा धर्म को सम्मान देने के प्रतीक स्वरूप हिजाब पहना हुआ था। वे लोग मुझे देखकर बहुत खुश हुए। हम लोगों को एक 4x4 जीप में चढ़ा कर यासीन के परिवार के अन्य लोगों से मिलाने ले गये।

हमें यात्रा करते-करते कई घण्टे हो गये और मैं बिल्कुल थक गई। अन्त में हम एक जगह रूक गये जो पुलिस स्टेशन जैसा लगता था या स्थानीय शरीफ कार्यालय जैसा था।। जीप से हमारा सामान उतारा गया और ये लोग आये सामान लेकर चले गये। यासीन आया और उसने मुझ से मेरा व्यक्तिगत सामान सब कुछ, पासपोर्ट, पैसा यहाँ तक कि टूथब्रश भी ले लिया। उसने बताया कि पुलिस सामान चैक करना चाहती है कि कहीं हम नशीली ड्रग्स की तस्करी तो नहीं कर रहे। मुझे स्मरण होता है कि पहले मुझे हँसी आयी परन्तु जब उसका चेहरा देखा वह बहुत ज्यादा गम्भीर था, मैंने उसे सब कुछ दे दिया और तब मुझे एक कमरे में ले जाया गया जहाँ मुझे प्रतीक्षा करने को बोला गया। उन्होंने यासीन से सवाल पूछे।

उस कमरे में बैठे-बैठे इन्तजार करते लगा जैसे युग बीत गये। मुझे यासीन की चिन्ता होने लगी। इस बीच दो और कारें और एक जीप पुलिस स्टेशन आई। अन्त में एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे निजी बातें पूछने लगा। मुझे उसको समझने में कठिनाई हो रही थी। वह बहुत जल्दी-जल्दी उर्दु में बोल रहा था। मैं उसे बोलती रही कि मुझे यासीन के पास ले चलो। उसने बोला "यासीन चला गया"। इन तीन शब्दों ने मेरे दिल की धड़कन को बन्द कर दिया

और मैं पाकिस्तान के उस दूर दराज गाँव में अकेली थी। मेरे पास कुछ भी नहीं था और कमरे में बन्द थी। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या सोचूं। क्या हो रहा है? ऐसा तो नहीं होना चाहिये था? यासीन कहाँ चला गया? मैं रोई, उन आदमियों के समक्ष गिड़गिड़ायी कि मुझे लाहौर ले चलो। वे लोग मुझ पर हंसते और पिटाई करते।

कुछ दिनों तक न तो मैंने कुछ खाया और न ही सोई। मैं बुझ चुकी थी और समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मैं बीमार हो गई और बहुत कमजोर हो गई। एक डाक्टर को बुलाया गया जिसने मुझे कुछ दवाई दी जिससे मुझे नींद आ गई । दूसरी चीज जो मुझे स्मरण है, जब मेरी नींद खुली तो मैं एक कमरे में थी जिसमें एक छोटी सी खिड़की थी और एक छोटा सा दरवाजा था। दरवाजा बाहर से बन्द किया हुआ था। मैं जोर-जोर से चिल्लाने लगी। एक औरत भाग कर मेरे पास आई। मुझे एक क्षण के लिये जब तक उसने डाँटना और गाली देना शुरू नहीं किया अच्छा लगा कि एक स्त्री मेरी मदद को आ गई है। मुझे पता नहीं चल रहा था कि यह सब क्या चल रहा है। मैं वहाँ चुपचाप उस छोटे ठण्डे कमरे में खाली दिमाग के साथ बैठ गई।

अब मेरी समझ में आ गया कि मैं घर नहीं जा रही थी और यासीन मेरी मदद को नहीं आने वाला। जिस बिल्डिंग में मैं थी वह तीन मंजिली थी और बहुत बड़ी थी। इसमें 30 कमरे रहे होंगे। पूरे इलाके में बस यही एक बिल्डिंग थी। बिल्डिंग के आसपास खाली जमीन और पक्की सड़क के अलावा कुछ नहीं था। यह एक वेश्यालय था।

मैं यहाँ अकेली नहीं थी तीन सिख लड़कियाँ और भी थी जो मेरी जैसी ही हालत में थी। हम सबको सबसे ऊपर की मंजिल में रखा गया था। हम सबको एक एक कमरा दिया गया था। दूसरी लड़कियाँ मुझ से ज्यादा समय से रह रही थी। हमें रात को आपस में बातचीत करने का मौका मिलता था। उन्होंने अपनी कहानियाँ सुनाई कि यहाँ कैसे पहुँची? वे सब अभ्यस्त हो चुकी थी। रात को बहुत ठण्डा हो जाता था। उन्होंने मुझे तीसरे दिन बताया कि यहाँ क्या होता है। यह वह स्थान था जहाँ स्थानीय लोग आनन्द लेने आते थे। मैं बहुत डर गई।

यहाँ वे लोग अपनी प्यास बुझाने आते थे। मुझे याद है कि वे हमारे साथ कैसा व्यवहार करते थे, वे हमसे जानवरों की तरह व्यवहार करते, हमारे साथ बलात्कार



करते और सब कुछ कर लेने के बाद हमारे चेहरे के ऊपर थूक कर चले जाते थे। यह जिन्दा नरक था, बच निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

मैंने यहाँ 15 महीने बिताये, उस दौरान मैंने 36 और लड़कियाँ यहाँ लाते देखी। मैंने देखा कि कुछेक ने आत्महत्या कर ली, कुछ को अमीर व्यापारी अपने निजी रण्डीखाने में रखने हेतु ले गये। मैंने असली नरक देखा और उसमें रही। जवान लड़कियों का बलात्कार होते देखा उनकी चीखें सुनी और उनकी बेबसी देखी जिन्हें कोई सहायता नहीं कर सकता। यह सब मैंने अपनी आँखों से देखा और कोई हमारी मदद करने को तैयार नहीं था।

एक अवसर आया कि मुझे और एक दूसरी लड़की को भागने का मौका मिल गया। हमें एक स्थानीय जनजाति के घर ले जाया गया जहाँ किसी बात पर झगड़ा हो गया, उस हफड़ा दफड़ी में हमें भागने का मौका मिल गया। हमने एक जीप ली और सड़कों पर चल पड़ी, हमें नहीं पता हम कहाँ जा रहे थे। जिधर सड़क जा रही थी उधर ही चलते गये। हम एक शहर के निकट पहुँच गये जिसका नाम था एमीनाबाद। यहाँ हमने पुलिस को सूचित किया कि हमारे साथ क्या हुआ? उन्होंने हमारी मदद की, हम लोगों को ब्रिटिश दूतावास के हवाले कर दिया और हमें यू. के. वापिस भेज दिया गया।

यू.के. आने के पश्चात् पुलिस ने हमें हमारे परिवार को सौंपने का प्रयास किया। हमारे अपने परिवार ने हमें स्वीकार नहीं किया। मेरे परिवार ने कहा कि "चली जाओ, तुमने परिवार का नाम बदनाम किया है", मैंने माफी मांगी पर वे राज़ी नही हुए। मैंने गुरुद्वारे की भी मदद लेने की कोशिश की उन्होंने भी बोला वे कुछ नहीं कर सकते। अत: पुन: हमें पुलिस के पास वापिस जाना पड़ा जिन्होंने हमें साक्षी सुरक्षा कार्यक्रम (विटनैस प्रोटैक्शन प्रोग्राम) में डाल दिया। यह वर्ष 1996 था और मैं 21 वर्ष की हो गई थी। हम दोनों को फिर से जीवन शुरू करने का नया मौका दिया गया। पुलिस ने हमारी बहुत सहायता की। इस कार्यक्रम में हमें रहने के लिये जगह दी गई, नई नौकरी दी गई ताकि हम जीवन सुधार सकें।

अब मैं 29 साल की हूँ, शादीशुदा हूँ और 3 साल की एक बच्ची है। मैंने 1998 में सिख धर्म पुन: अपना लिया है। मैंने और मेरी दोस्त ने अमृत छक लिया है और हम लोगों ने जो हमारे साथ हुआ उससे लड़ने की सक्रिय भूमिका अपना ली है और दूसरों को जो ऐसी हालत में चले गये थे उनकी मदद करने का प्रयास कर रहे हैं।

मेरा एक क्षण भी ऐसा नहीं जाता जिसमें मैं उन असहाय लड़कियों के बारे में नहीं सोचती जो पाकिस्तान में ताले चाबी में बन्द हैं। मैं जीवन से बहुत डर चुकी हूँ। परन्तु मुझे जागृति लाने तथा जो हर रात्रि कराह रही है, प्रताड़ित हो रही हैं उन्हें सहायता करने के लिए सब कुछ करना चाहिये। मैं पुलिस को बहुत धन्यवाद देती हूँ जो ऐसी लड़कियों की मदद करने का प्रयास कर रही है लेकिन मैं सोचती हूँ कि हम लोगों को समाज के नाते बहुत कुछ करने की जरूरत है।

हमें छुपाने की प्रवृति से बाहर निकलना होगा। हमें उन खतरों का सामना करना चाहिए जिनका ये लड़कियाँ सामना कर रही हैं। पर हम लोग यह देखते हैं कि सभी पक्षों का रूख नकारात्मक है, परिवार, गुरुद्वारा और लड़कियाँ सभी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं करते। मुझे पता है कि मेरे साथ क्या हुआ था और जो लड़कियाँ अभी भी पाकिस्तान में रह गई हैं उनके साथ क्या हो रहा है।

ताजा आँकड़ों के अनुसार वहाँ इस समय 300 लड़कियाँ हैं जिनको निरन्तर प्रताड़ित किया जाता है, प्रतिदिन उनको ड्रग दी जाती है और प्रतिदिन बलात्कार होता है। उनमें से एक आप की रिश्तेदार भी है इसे याद रखें। आपकी चचेरी बहन जिसे आपने पिछले तीन सालों से नहीं देखा है, यूनिवर्सिटी गई थी पर कभी वापिस नहीं आई।

जब आप अपने अंकल या आंटी से पूछते हैं कि मेरी कज़िन (बहन) कहाँ है जिसे मैंने या मेरे परिवार ने अरसे से नहीं देखा तो आपको जवाब मिलता है कि उसने वहाँ घर खरीद लिया है और वहाँ उसे अच्छी नौकरी मिल गई है और बहुत व्यस्त रहती है। मैं आपको विनती करती हूँ कि इस झूठ पर रोक लगाइए कृपया मेरी बहने जो पाकिस्तान मे हैं उनकी मदद कीजिये जिनको कोई मदद नहीं कर रहा, उनकी मदद कीजिये। उनके परिवार बहुत डरे हुए हैं या उन्हें पता ही नहीं है लड़कियाँ कहाँ है।

हमें इसको खत्म करना ही होगा। मैंने देखा है कहाँ क्या होता है। मेरे पर विश्वास कीजिये। मैं नहीं चाहूँगी कि मेरे दुश्मनों के साथ भी कभी ऐसा हो यानि एक युवा लड़की से कोई बहशी बलात्कार करे, पीटे और थूक कर चला जाये। इन लड़कियों को आपकी मदद की जरूरत है।